ई-रीडर पर मेरी कुण्डलिनी वैबसाईट

वैबसाईट की ई-पुस्तक बनाने का एक अभिनव प्रयोग

प्रेमयोगी वज्र

ई-रीडर पर मेरी कुण्डलिनी वेबसाइट

प्रेमयोगी वज्र

पुस्तक परिचय-

यह पुस्तक "demystifyingkundalini.com" वेबसाइट बनाते समय वेबसाइट खोजकर्ताओं के दिमाग की उपज है।

वेबसाइट निर्माता को संदेह होने लगा कि यदि दुर्भाग्यवश किसी कारण से वेबसाइट खराब हो गई, तो सारी मेहनत खराब हो जाएगी, और लिखा हुआ सारा पाठ चला जाएगा। इसके अलावा, वेबसाइट निर्माता ने यह भी चाहा है कि वेबसाइट हर किसी ई-रीडर पर उपलब्ध होनी चाहिए, ताकि पाठक पढ़ने में सहज हो, और आँखें प्रभावित न हों। इन दोनों उद्देश्यों को वेबसाइट की ई-बुक बनाकर ही पूरा किया जा सकता था। इसलिए स्थिर वेब पेज और कुछ वेब पोस्ट जो अन्य ई-बुक में शामिल नहीं थे, इस ई-बुक में शामिल किया गया।

एक अन्य ई-बुक में कुंडलिनी से संबंधित सभी वेब पोस्ट डाले गए थे, जिसमें सभी शेष सामग्री आ गयी थी। उस अन्य पुस्तक का नाम "कुंडलिनी विज्ञान- एक आध्यात्मिक मनोविज्ञान" है। इस वेबसाइट के पहले दो होम पेजों को अभी भी एक अन्य पुस्तक में शामिल किया गया है, "कुंडलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमोगी वज्र क्या कहता है"।

आशा है कि प्रिय पाठक प्रस्तुत पुस्तक का पूरा लाभ उठाएंगे।

लेखक परिचय

प्रेमयोगी वज्र का जन्म वर्ष 1975 में भारत के हिमाचल प्रान्त की वादियों में बसे एक छोटे से गाँव में हुआ था। वह स्वाभाविक रूप से लेखन, दर्शन, आध्यात्मिकता, योग, लोक-व्यवहार, व्यावहारिक विज्ञान और पर्यटन के शौक़ीन हैं। उन्होंने पशुपालन व पशु चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्रशंसनीय काम किया है। वह पोलीहाऊस खेती, जैविक खेती, वैज्ञानिक और पानी की बचत युक्त सिंचाई, वर्षाजल संग्रहण, किचन गार्डनिंग, गाय पालन, वर्मीकम्पोस्टिंग, वैबसाईट डिवेलपमेंट, स्वयंप्रकाशन, संगीत (विशेषतः बांसुरी वादन) और गायन के भी शौक़ीन हैं। लगभग इन सभी विषयों पर उन्होंने दस के करीब पुस्तकें भी लिखी हैं, जिनका वर्णन एमाजोन ऑथर सेन्ट्रल, ऑथर पेज, प्रेमयोगी वज्र पर उपलब्ध है। इन पुस्तकों का वर्णन उनकी निजी वैबसाईट demystifyingkundalini.com पर भी उपलब्ध है। वे थोड़े समय के लिए एक वैदिक पुजारी भी रहे थे, जब वे लोगों के घरों में अपने वैदिक पुरोहित दादा जी की सहायता से धार्मिक अनुष्ठान किया करते थे। उन्हें कुछ उन्नत आध्यात्मिक अनुभव (आत्मज्ञान और कुण्डलिनी जागरण) प्राप्त हुए हैं। उनके अनोखे अनुभवों सहित उनकी आत्मकथा विशेष रूप से "शरीरविज्ञान दर्शन- एक आधुनिक कुण्डलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा)" पुस्तक में साझा की गई है। यह पुस्तक उनके जीवन की सबसे प्रमुख और महत्त्वाकांक्षी पुस्तक है। इस पुस्तक में उनके जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण 25 सालों का जीवन दर्शन समाया हुआ है। इस पुस्तक के लिए उन्होंने बहुत मेहनत की है। एमाजोन डॉट इन पर एक गुणवत्तापूर्ण व निष्पक्षतापूर्ण समीक्षा में इस पुस्तक को पांच सितारा, सर्वश्रेष्ठ, सबके द्वारा अवश्य पढ़ी जाने योग्य व अति उत्तम (एक्सेलेंट) पुस्तक के रूप में समीक्षित किया गया है। गूगल प्ले बुक की समीक्षा में भी इस पुस्तक को फाईव स्टार मिले थे, और इस पुस्तक को अच्छा (कूल) व गुणवत्तापूर्ण आंका गया था। प्रेमयोगी वज्र एक रहस्यमयी व्यक्ति है। वह एक बहुरूपिए की तरह है, जिसका अपना कोई निर्धारित रूप नहीं होता। उसका वास्तविक रूप उसके मन में लग रही समाधि के आकार-प्रकार पर निर्भर करता है, बाहर से वह चाहे कैसा भी दिखे। वह आत्मज्ञानी (एनलाईटनड) भी है, और उसकी कुण्डलिनी भी जागृत हो चुकी है। उसे आत्मज्ञान की अनुभूति प्राकृतिक रूप से / प्रेमयोग से हुई थी, और कुण्डलिनी जागरण की अनुभूति कृत्रिम रूप से / कुण्डलिनी योग से हुई। प्राकृतिक समाधि के समय उसे सांकेतिक व समवाही तंत्रयोग की सहायता मिली, जबकि कृत्रिम

समाधि के समय पूर्ण व विषमवाही तंत्रयोग की सहायता उसे उसके अपने प्रयासों के अधिकाँश योगदान से प्राप्त हुई।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया निम्नांकित स्थान पर देखें-

https://demystifyingkundalini.com/

वैधानिक टिप्पणी (लीगल डिस्क्लेमर)

इस तंत्र-सम्मत पुस्तक को किसी पूर्वनिर्मित साहित्यिक रचना की नक़ल करके नहीं बनाया गया है। फिर भी यदि यह किसी पूर्वनिर्मित रचना से समानता रखती है, तो यह केवल मात्र एक संयोग ही है। इसे किसी भी दूसरी धारणाओं को ठेस पहुंचाने के लिए नहीं बनाया गया है। पाठक इसको पढ़ने से उत्पन्न ऐसी-वैसी परिस्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे। हम वकील नहीं हैं। यह पुस्तक व इसमें लिखी गई जानकारियाँ केवल शिक्षा के प्रचार के नाते प्रदान की गई हैं, और आपके न्यायिक सलाहकार द्वारा प्रदत्त किसी भी वैधानिक सलाह का स्थान नहीं ले सकतीं। छपाई के समय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियाँ सही हों व पाठकों के लिए उपयोगी हों, फिर भी यह बहुत गहरा प्रयास नहीं है। इसलिए इससे किसी प्रकार की हानि होने पर पुस्तक-प्रस्तुतिकर्ता अपनी जिम्मेदारी व जवाबदेही को पूर्णतया अस्वीकार करते हैं। पाठकगण अपनी पसंद, काम व उनके परिणामों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। उन्हें इससे सम्बंधित किसी प्रकार का संदेह होने पर अपने न्यायिक-सलाहकार से संपर्क करना चाहिए।

वैबपृष्ठ- हमारे बारे में (about page)

विषय-

इस तांत्रिक वेबसाईट को एक ई-पुस्तक (अब *****पांच सितारा प्राप्त; उत्कृष्ट / अत्युत्तम / अनौखी /सर्वश्रेष्ठ व सर्वपठनीय पुस्तक के रूप में समीक्षित / रिव्यूड) के प्रचार हेतु एक अवरोहण पृष्ठ / landing page के रूप में शुरू किया गया था। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए कृपया वेबपृष्ठ “शॉप” पर जाएं। वह कुंडलिनी प्रेमयोगी वज्र (एक उपलेखक) को इसलिए भी जागृत रूप में अनुभव हुई, ताकि वह उनके द्वारा इस अनौखी आध्यात्मिक पुस्तक को प्रकाशित करने का अपना एजेंडा पूरा कर सकती (उसे उस कुंडलिनी जागृति अनुभव से इतनी शक्तिशाली मानसिक ऊर्जा मिली कि उसने केवल एक वर्ष के भीतर ही 300 पेज की बुक को प्रकाशित कर दिया), क्योंकि उसने एक पोस्ट के माध्यम से उस पुस्तक की एक प्रतिलिपि को एक खूबसूरत पहाड़ी के शीर्ष पर एक जीवंत ऋषि के द्वारा प्राप्त किए जाते हुए देखा। वह उस स्थान पर एक नरक-काले और मांसपेशियों से भरे-पूरे भैंसे के द्वारा ले जाया गया था, जो उसे सही रास्ता दिखाकर मिडवे / बीच राह में ही दूर चला गया था। सब अजीब था। वैसे भी वह उस समय के दौरान कई दुर्भाग्यपूर्ण खतरों से नाटकीय रूप से बचाया गया था।

फिर इस वेबसाईट के एक सहलेखक को क्वोरा की ओर से शीर्षलेखक-2018 का सम्मान मिलने के बाद इस पर लोगों का आना-जाना / ट्रेफिक / traffic बढ़ गया। लोगों के पसंद किए जाने से उत्साहित होकर, इस वेबसाईट को धीरे-2 बढ़ाया गया। प्रचाराधीन ई-पुस्तक के अन्दर विद्यमान सारी सामग्री को इस पर संक्षिप्त रूप में डाला गया। फिर पूरी सामग्री का हिंदी में अनुवाद करके उसे भी वेबसाईट पर डाला गया। सहलेखक ने ब्रिलिएनो कुण्डलिनी फोरम / brilliano kundalini forum पर डेढ़ वर्षों के दौरान लिखी गई अपनी उन पोस्टों / posts को भी इस वेबसाईट पर डाल दिया, जिससे उसे क्षणिक कुण्डलिनी-जागरण का अनुभव हुआ था। वेबसाईट को अच्छे व्यूज / views मिलने लगे, जिससे सर्च इंजिनों / search engines पर इसकी रैंकिंग / ranking बढ़ती गई। बाद में उपरोक्त ई-पुस्तक का कागजी-प्रतिरूप / print version भी इसी वेबसाईट पर उपलब्ध करवा दिया गया। इससे वेबसाईट-यात्रियों / website visitors के सामने सभी विकल्प खुल गए। जिनके पास कम समय है, और जो पुस्तक पढ़ना पसंद नहीं

करते, उनके लिए मूल वेबसाईट पर ही सभी कुछ उपलब्ध हो गया। जो लोग सस्ती पुस्तक पसंद करते हैं, उनके लिए ई-पुस्तक उपलब्ध हो गई। जो लोग निःशुल्क पुस्तक पसंद करते हैं, उनके लिए प्रोमोशनल निःशुल्क पुस्तक ओफर्ज / promotional free books offers दी जाती रहीं। जो लोग महँगी या कागजी पुस्तक पसंद करते हैं, उनके लिए कागजी पुस्तक उपलब्ध हो गई। होना भी ऐसा ही चाहिए, क्योंकि सभी लोगों की प्रकृति अतः उनकी पसंद भिन्न-2 होती है। इस लिंक को क्लिक करके ई-पुस्तकों व ई-रीडरों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इस वेबसाईट को बनाने का एक मुख्य उद्देश्य लोगों को कुण्डलिनी के बारे में सही व अनुभवात्मक जानकारी उपलब्ध कराना भी था। इसके एक उपलेखक को बचपन से ही इस बारे भ्रम का सामना करना पड़ा था। कोई कुछ बोलता था, कोई कुछ बोलता था। सभी अपने सम्बंधित अनुभवों को छिपाने जैसे का प्रयत्न करते हुए दिखाई देते थे। जितनी भी उसने पुस्तकें पढीं, उनमें भी ऐसा ही माजरा उसे देखने को मिला। सभी पुस्तकों में कुण्डलिनी के बारे में चित्र-विचित्र बातें लिखी होती थीं, और साथ में उनके लेखक अपना अक्षरशः व विश्वासयोग्य अनुभव भी नहीं लिखते थे। इससे वह अपनी क्रियाशील कुण्डलिनी को भी नहीं समझ पाया, कई वर्षों तक। अंत में जब उसे कुछ खाली समय प्राप्त हुआ, तो उसने सभी प्राचीन व नवीन पुस्तकों को अनेक विधियों (कागजी पुस्तक, ई-रीडर पुस्तक, वेबसाईट आदि के रूप में) खंगाला, और अपना ही अंतिम निष्कर्ष निकाला। पुस्तक में उसे प्रामाणिक व अनुभवात्मक निष्कर्ष कहीं नहीं मिल सका। अतः अपने ही निष्कर्ष पर चलते हुए उसने समर्पित योगाभ्यास प्रारम्भ किया, और लगभग एक साल की अवधि में ही अपनी कुण्डलिनी को जागृत पाया। फिर उसे पता चला कि वह कुण्डलिनी तो उसके मन में बचपन से ही क्रियाशील थी व उससे उसे सुप्तावस्था में क्षणिक आत्मज्ञान भी प्राप्त हुआ था, पर वह उसे आश्चर्यमयी कुण्डलिनी के रूप में पहचान नहीं पा रहा था। कुण्डलिनी-जिज्ञासुओं को उसकी तरह भ्रम, अनिश्चितता व अविश्वास का सामना न करना पड़े, इसके लिए उसने मानवता-हित में अपने अक्षरशः अनुभवात्मक विवरण को निःसंकोच होकर इस सफल वेबसाईट के रूप में ढाल दिया।

कुल मिलाकर, इस वेबसाईट में अद्‌वैतपूर्ण, तांत्रिक, कुंडलिनी योग तकनीक (असली ध्यान) सहित पतंजलि योगसूत्र, कुण्डलिनीजागरण, आत्मज्ञान और अध्यात्मिक मोक्ष को एक अनुभवपूर्ण, रोमांचक, कथामय, जीवनचरित्रमय, दार्शनिक, व्यावहारिक, मानवीय, वैज्ञानिक और तार्किक तरीके से; सबसे अच्छे रूप में समझने योग्य, सत्यापित, स्पष्टीकृत, सरलीकृत, औचित्यीकृत, सीखने योग्य, निर्देशित, परिभाषित, प्रदर्शित, संक्षिप्त, और प्रमाणित किया गया है।

इस वेबसाईट का विस्तार आज भी जारी है, जो नई-2 व विभिन्न अनुभवात्मक जानकारियों वाली पोस्टों / posts के माध्यम से आगे भी जारी रहेगा। यदि आप इस वेबसाइट को फॉलो / follow करते हैं, तो आप अपनी ईमेल के माध्यम से नई पोस्ट को एकदम से प्राप्त कर सकेंगे।

इस साइट का मुख्य उद्देश्य व्यावहारिक / सच्चा / अनुभव आधारित ज्ञान विशेष रूप से कुंडलिनी आधारित, दुनिया भर में फैलाना है। मैं यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूंगा कि लिंक सहित सभी जानकारी पोस्टिंग के समय सटीक हों। किसी भी प्रतिक्रिया और सुझाव की अत्यधिक सराहना की जाती है।

डिसक्लेमर / Disclamer:

इस साइट में उपयोग की जाने वाले सभी लिंकों / links, छवियों / images और ग्राफिक्स को विभिन्न स्रोतों से लिया गया है, और पूर्ण श्रेय / क्रेडिट उन छवियों आदि के मालिकों और कॉपीराइट-धारकों को जाता है।

इस वेबसाइट को किसी भी अन्य विचारों को अपमानित करने के लिए डिज़ाइन नहीं किया गया है। पाठक इसे पढ़ने से उत्पन्न होने वाली स्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार होगा। हम वकील नहीं हैं। इस वेबसाइट और इसमें लिखी गई सभी सूचनाओं को शिक्षा के प्रचार के रूप में प्रदान किया गया है, जिनसे आपके न्यायिक सलाहकार द्‌वारा प्रदान की गई किसी भी कानूनी सलाह को प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता है। सृजन के समय, इस बात पर ध्यान दिया गया है कि इस वेबसाइट पर दी गई सारी जानकारी पाठकों के लिए सही और उपयोगी हों, फिर भी यह एक बहुत ही गंभीर प्रयास नहीं है।

इसलिए, किसी भी व्यक्ति को कोई नुकसान होने पर वेबसाइट-प्रकाशक अपनी जिम्मेदारियों और उत्तरदायित्व को पूरी तरह से अस्वीकार करते हैं। पाठक अपनी पसंद, काम और उनके परिणामों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। यदि इसके बारे में कोई संदेह है तो उन्हें अपने न्यायिक सलाहकार से संपर्क करना चाहिए।

वैबपृष्ठ- गृह-1 (home-1) आत्मज्ञान व कुण्डलिनीजागरण का वास्तविक समय का जीवंत अनुभव- आत्मज्ञान व कुंडलिनी जागरण कैसे काम करते हैं?

इस अप्रतिम कुण्डलिनी वेबसाईट का यह होमपेज एक अन्य पुस्तक "कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है" में भी उपलब्ध है। इस पेज में जिज्ञासु कुण्डलिनीयोग प्रशिक्षुओं द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में प्रेमयोगी वज्र ने अपना कुण्डलिनी जागरण व आत्मज्ञान का वास्तविक समय का प्रत्यक्ष अनुभव विस्तृत विवरण के साथ प्रस्तुत किया है। साथ में, उनके उस अनुभव का बारीकी से स्पष्टीकरण भी किया गया है।

गृह (आत्मज्ञान व कुण्डलिनीजागरण का वास्तविक समय का जीवंत अनुभव)- आत्मज्ञान व कुंडलिनी जागरण कैसे काम करते हैं

Please click here to read this Website in English

विश्व योग दिवस 2019 के लिए शुभकामनाएँ

कुण्डलिनी demystified / रहस्योद्घाटित आतंरिक वैबपृष्ठ

सच्चे ज्ञानपिपासु को भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि उजागर हो गए हैं उस प्रेमयोगी वज्र के शब्द, जो एक रहस्यमय व्यक्ति होने के साथ आत्मज्ञानी है, और जिसने अपनी कुंडलिनी को भी जागृत किया हुआ है

यह वेबसाइट / ब्लॉग ई-बुक के लिए लैंडिंग पेज के रूप में शुरू हुआ। फिर इसमें एक अद्भुत सार रूप में पुस्तक की विस्तृत जानकारी शामिल की गई। तदनंतर इसमें योग के छिपे रहस्य और बाद में एक योगी की सच्ची प्रेम कहानी को भी शामिल किया गया। आशा है कि भविष्य में इसमें लेखक के दिव्य, प्राणप्रिय व आत्मीय मित्र प्रेमयोगी वज्र के सभी रहस्यात्मक अनुभव शामिल कर दिए जाएंगे। पुस्तक प्रेमी इस लिंक पर क्लिक करके पुस्तक के बारे में अच्छी तरह से जान सकते हैं (आंतरिक वेबपेज), तथा साथ में इस पुस्तक के निःशुल्क संस्कृत-संस्करण को भी डाऊनलोड कर सकते हैं। इसके साथ, एक लघु पुस्तक (हिंदी व अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में) भी निःशुल्क डाऊनलोड के लिए उपलब्ध है।

प्रेमयोगी वज्र अपनी उस समाधि(कुण्डलिनीजागरण/KUNDALINI AWAKENING) का वर्णन अपने शब्दों में इस प्रकार करता है

मैंलगभग 18 सालों से अद्वैत(मुख्यतः अद्वैतपरक शविद अर्थात शरीर विज्ञान दर्शन से प्राप्त, कुछ सनातन धर्म की संगति से) का पूर्ण व्यावहारिकता व कर्मठता से युक्त सांसारिकता के साथ अभ्यास, लगभग 10-11 सालों से अनियमित व अपूर्ण(बिना केन्द्रित ध्यान/focused concentration के) योगाभ्यास (इन दोनों ही प्रयासों/अभ्यासों से मेरी कुण्डलिनी मेरे मस्तिष्क में आधार स्तर पर जीवित रहती थी- आतंरिक वेबपृष्ठ); तथा एक साल से, एक ऑनलाइन कुंडलिनी फोरम पर रहते हुए, अपने वास्तविक घर से बहुत दूर, शान्त व तनावमुक्त स्थान पर, महान मैदानों व गगनचुंबी पर्वत श्रृंखलाओं के जंक्शन के पास, ऋषिकेश / हरिद्वार की तरह के प्राकृतिक शांतिदायक स्थान पर (बाह्य लिंक- क्वोरा) नियमित व समर्पित रुप से उपरोक्त अतिपरिचित वृद्धाध्यात्मिक पुरुष (गुरु) के मानसिक चित्र रूपी कुण्डलिनी का ध्यान करता हुआ, कुण्डलिनीयोग का अभ्यास(बाह्य वैबसाइट/क्वोरा) कर रहा था, जिससे मेरी कुण्डलिनी, और अधिक परिपक्व हो गई थी; तथा अन्त के एक महीने से तांत्रिक विधि/प्रत्यक्षयौनयोग- तांत्रिक आतंरिक वेबपृष्ठ (लगभग प्रतिदिन/निरंतर) को भी उपरोक्त साधना के साथ जोड़कर, अपनी कुण्डलिनी को अत्यधिक परिपक्व व ऊर्ध्वगामी बना रहा था। मैं बहुत दिनों के बाद, बहुत लंबी यात्रा करके(बाह्य वैबसाइट/क्वोरा), अपने नए व व्यक्तिगत वाहन (अत्याधुनिक विशेषताओं सहित व एक मानवीय वाहन-निर्माता संगठन से खरीदा गया) से, अत्याधुनिक व सुविधासंपन्न सड़क मार्ग से सपरिवार घर आया हुआ था। तभी एक दिन मैं एक समारोह में एक कुर्सी पर बैठा था। साधना के शांतिदायक प्रभाव के कारण मेरी दाढ़ी कुछ बढ़ी हुई थी और उसके कुल बालों में से लगभग 30% बाल सफेद नजर आ रहे थे। उस समारोह में मेरा हृदय से स्वागत हुआ था। वहां पर मुझे अपने लिए चारों ओर विशेष प्रेम व सत्कार का अनुभव हो रहा था। समारोहीय लोगों के साथ जुड़ी हुई बचपन की मेरी यादें जैसे तरोताजा हो गयी थीं। मैं अपने को खुला हुआ, सुरक्षित, शांत, तनावरहित, मानसिकता से पूर्ण(mindful), अद्वैतशाली व मानसिक कुण्डलिनी-चित्र के साथ अनुभव कर रहा था। मेरी कुण्डलिनी से सम्बंधित लोग वहां पर उपस्थित थे व वातावरण-माहौल भी मेरी कुण्डलिनी से सम्बंधित था। खड़ी व छोटी पहाड़ी पर बना वह घर जैसे चिपका हुआ सा लगता था। चहल-पहल व रौनक वहां पर लगातार महसूस हो रही थी। समारोहीय संगीत(आधुनिक प्रकार का) भी मध्यम स्तर पर बज रहा था, जिसमें गायक के बोल(lyrics) स्पष्ट नहीं सुनाई दे रहे थे। उससे वह संगीत एक प्रकार का संगीतबद्ध शोर ही लग रहा था। बहुत

अच्छा लग रहा था। चिर-परिचित लोगों के खुशनुमा चेहरे जैसे यहाँ-वहाँ उड़ रहे थे व सीढ़ियों पर ऊपर-नीचे आ-जा रहे थे। मैं बीच वाली मंजिल की बालकनी में था। एक कमरे में कुछ सुन्दर व तेजस्वी स्त्रियों का समूह नृत्य-गान में व्यस्त था। कभी एक-२ करके, कभी दो-२ के समूह में और बहुत विरले मामले में तीन-२ के समूह में वे महिलाएं बारी-२ से उठकर गाने वाली 20-25 महिलाओं के घेरे के बीच में आतीं और अपने नृत्य-कौशल का प्रदर्शन करतीं। मेरे सामने वाली, हरी-भरी व रौनक से युक्त एक लम्बी, एकसमान व मध्यम ऊँचाई की पहाड़ी पर; लगभग सिधाई में, पर्वत-शिखर से लगभग एकसमान नीचाई पर बनी व उस घर से लगभग 100 मीटर की हवाई दूरी पर बनी एक सड़क उस घर की उंचाई के स्तर पर थी और वहां से यातायात के साधनों का शोर भी मध्यम स्तर पर सुनाई दे रहा था। उस पहाड़ी पर स्थित सूर्य के मुंह की लाली पूरे दिन की थकान के कारण बढ़ती ही जा रही थी, जैसे कि वह अपने कर्तव्यवहन(duty) के पूरा होने का इंतजार बड़ी बेसब्री से कर रहा था। मेरा बहुत समय बाद मिल रहा, एक पुराना व कुछ समय पहले ही सेवानिवृत्त सैनिक, मेरे मानसिक कुण्डलिनी-चित्र के भौतिक रूप से सम्बंधित व उसके जैसे ही कर्मठता आदि गुणों से युक्त स्वभाव वाला, मित्र सहित ज्ञाति-भ्राता, हंसमुख व तेजस्वी मुद्रा में जैसे ही अपनेपन के साथ मेरा हालचाल पूछने लगा, वैसे ही मैं भी अपनी ओर से प्रसन्नता प्रदर्शित करता हुआ खड़ा हो गया उसकी प्रसन्नता से भरी आँखों से आँखें मिलाता हुआ, जिससे अचानक ही मैं कुण्डलिनी के विचार में गहरा खो गया और वह उद्दीप्त(stimulate) होकर अचानक ही मेरे पूरे मस्तिष्क में छा गई। मेरा सिर भारी हो गया व उसमें भारी दबाव महसूस होने लगा। मस्तिष्क में वह दबाव विशेष रूप का था, क्योंकि साधारण दबाव तो चेतना को भी दबा देता है, परन्तु वह दबाव तो चेतना(consciousness) को भड़का रहा था। ऐसा लग रहा था, जैसे कि मेरे मस्तिष्क के अन्दर चेतना की नदी(river of consciousness) भंवर के रूप में, पूरे वेग के साथ घूम रही हो और मेरे मस्तिष्क के कण-२ को कम्पित कर रही हो, जिसे सहन करने में मेरा मस्तिष्क अस्मर्थ हो रहा था। वह चेतना का प्रचंड भंवर मेरे मस्तिष्क में, बाहर की ओर एक विस्फोटक दबाव बनाता हुआ प्रतीत हो रहा था। उस चेतना-भंवर(consciousness whirl) को चलाने वाली, मुझे अपनी कुण्डलिनी प्रतीत हो रही थी, क्योंकि वह हर जगह अनुभव हो रही थी। उस तरह की हल्की सी, तूफानी सी, गंभीर व समान रूप की आवाज का अनुभव हो रहा था, जिस तरह की आवाज मधुमक्खियों के झुण्ड के एक

साथ उड़ने से पैदा होती है। वास्तव में वह कोई आवाज भी नहीं थी, परन्तु उससे मिलता-जुलता, सन्नाटे से भरा हुआ, मस्तिष्क के एक विचित्र प्रकार के दबाव या कसाव से भरा हुआ, विशाल आत्मचेतना का अनुभव था। वैसा दबाव, जैसा कि शीर्षासन या सर्वांगासन करते हुए मस्तिष्क में अनुभव होता है; यद्यपि वह अनुभव उससे कहीं अधिक दबाव के साथ, उपर्युक्त सन्नाटे के साथ, चेतनापूर्ण, प्रकाशपूर्ण, कुण्डलिनीपूर्ण एवं आनंदमयी था। यदि अपने अन्दर चल रही, सन्नाटे व आवाज, एकसाथ दोनों से भरी हुई सरसराहट जैसी गुप्त हलचल(यद्यपि आवाज नहीं, पर आवाज की तरह) विद्युत्-ट्रांसफार्मर(electric ट्रांसफार्मर) को स्वयं को अनुभव होए, तो वह उसे कुण्डलिनीजागरण के जैसी स्थिति समझे। वह आत्मज्ञान भी नहीं था, अपितु उससे निम्नस्तर का अनुभव था। वह ओम (बाह्य वेबसाईट-भारतकोष) के बीच के अक्षर, "ओ————-" की एकसमान व लम्बी खिंची हुई आवाज की तरह की अनुभूति थी। संभव है कि ओम का रहस्य भी कुण्डलिनीजागरण में छुपा हुआ हो। दृष्यात्मक अनुभव भी जैसे झुण्ड की मधुमक्खियों की तरह ही, मस्तिष्क को फोड़ कर बाहर निकलने के लिए बेताब हो रहे थे। शक्तिशाली फरफराहट के साथ, जैसे वह अनुभव ऊपर की ओर उड़ने का प्रयास कर रहा था। अतीव आनंद की स्थिति थी। वह आनंद एकसाथ अनुभव किए जा सकने वाले सैंकड़ों यौनसंबंधों से भी बढ़ कर था। सीधा सा अर्थ है कि इन्द्रियां उतना आनंद उत्पन्न कर ही नहीं सकतीं। मेरी कुण्डलिनी पूरी तरह से प्रकाशित होती हुई, सूर्य का मुकाबला कर रही थी। वह प्रत्यक्ष के भौतिक पदार्थों से भी अधिक स्पष्ट, जीवंत व वास्तविक लग रही थी। मेरी आँखें खुली हुई थीं व गंभीरता से नज़ारे निहार रही थीं। जहाँ पर भी दृष्टि जा रही थी, वहीं पर कुण्डलिनी दृष्टिगोचर हो रही थी। ऐसा लग रहा था, जैसे सभी कुछ कुण्डलिनी के रंग में रंगा हुआ हो। सभी अनुभव एकसमान, परिवर्तनरहित व पूर्ण जैसे लग रहे थे। मेरा अहंकार या व्यक्तित्व पूर्णतया नष्ट हो गया था। मैं अपने स्वास्थ्य के प्रति चिंतित हो रहा था। मुझे अपने व्यक्तित्व का कुछ भी भान नहीं रहा। मेरे साथ में कुर्सी पर बैठे २-३ लोग, आते-जाते कुछ लोग व वह ज्ञाति-भ्राता भी आश्चर्य, शंका व संभवतः तनिक चिंता से मेरी ओर देखने लगे; जिससे मुझे तनिक संकोच होने लगा। हड़बड़ाहट में मैं साथ ही बालकनी की ग्रिल से सटी अपनी कुर्सी पर बैठ गया, और मैंने थोड़ा सिर झुकाते हुए अपने माथे की ऊपरी सीमा को दाएं हाथ की अँगुलियों के अग्रभागों से मध्यम दबाव के साथ दबाते हुए बार-बार मला व आँखों को भींचते हुए अपने व्यक्तित्व में

वापिस लौटने का प्रयत्न किया। कुछ प्रयत्न के बाद मेरी कुण्डलिनी मेरे मस्तिष्क से वापिस नीचे लौट आई। कुछ चंद क्षणों के बाद जैसे ही मुझे अपनी भूल का अहसास हुआ, उसी समय मैंने अपनी चमकती हुई कुण्डलिनी को वापिस ऊपर चढ़ाने का भरपूर प्रयास किया, परन्तु मैं सफल न हो सका, यद्यपि मैंने अपने आप को बहुत अधिक प्रसन्न, तरोताजा, तनावरहित, चिन्तारहित व अनासक्ति/द्वैताद्वैत से संपन्न अनुभव किया। कुण्डलिनीजागरण के उस अनुभव के समय, मुझे अपने चेहरे पर गर्माहट व लाली महसूस हो रही थी। ऐसा अनुभव मुझे अप्रत्यक्षतंत्र/सांकेतिक तंत्रयोग/दक्षिणपंथी तन्त्र के समय भी होता था, जब प्रथम देवीरानी का चित्र मेरे मस्तिष्क में स्पष्ट व प्रचंड हो जाया करता था, यद्यपि इस बार के जागरण की अपेक्षा मध्यम स्तर के साथ। इस बार देवीरानी का नहीं, अपितु उन पुराणपाठी तांत्रिक-वृद्धाध्यात्मिकपुरुष (वे एक कमरे में पुराणों का इक्के-दुक्के श्रोताओं के सम्मुख अर्थ सहित पाठ कर रहे होते थे और प्रेमयोगी वज्र साथ वाले कमरे में विज्ञान विषय का गहराई से अध्ययन कर रहा होता था- पढ़ें ईपुस्तक, कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है) का चित्र सर्वाधिक स्पष्ट व प्रचंड रूप से अनुभव हुआ, यद्यपि केवल १० सेकण्ड के लिए। प्रथम देवीरानी का चित्र तो मस्तिष्क में लगभग सदैव बना रहता था; कभी हल्के स्तर में, कभी मध्यम स्तर में और कभी प्रचंड स्तर में। यद्यपि इस बार कुण्डलिनी का चित्र सर्वोच्च स्तर पर अभिव्यक्त हुआ। वृद्धाध्यात्मिकपुरुष का मानसिक चित्र(कुण्डलिनी) भी लगभग सदैव(यद्यपि देवीरानी की अपेक्षा कुछ कम समय तक) बना रहता था, परन्तु वह अधिकांशतः हल्के स्तर पर ही अभिव्यक्त होता था; मध्यम या प्रचंड स्तर पर अपेक्षाकृत रूप से बहुत कम। ऐसा लगता है कि ऐसी भिन्नता के लिए, मेरा यौवन तथा भौतिक/कामप्रधान परिवेश जिम्मेदार था। यदि आध्यात्मिक परिवेश होता, तो सम्भवतः इसका उलटा होता, अर्थात वृद्धाध्यात्मिकपुरुष का मानसिक चित्र देवीरानी की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली बना करता। देवीरानी के चित्र ने कभी भी अपने भौतिकरूप के स्तर से अधिक अभिव्यक्ति नहीं दिखाई, परन्तु इस कुण्डलिनीजागरण में, वृद्धाध्यात्मिकपुरुष के चित्र ने तो अपने को, अपने भौतिकरूप के स्तर से भी अधिक अभिव्यक्त कर दिया। उस अनुभव से मेरे मन में स्त्रीमोह का फंदा काफी ढीला पड़ गया था, क्योंकि बिना कामोत्तेजना के ही सर्वाधिक स्पष्ट मानसिक चित्र बनना, किसी आश्चर्य से कम नहीं था। प्रथम देवीरानी के मानसिक चित्र(क्रियाशील कुण्डलिनी) के साथ मुझे कभी भी पूर्ण समाधि (जागृत

कुण्डलिनी) की अनुभूति नहीं हुई (आतंरिक तांत्रिक वेबपृष्ठ), अर्थात वह कुण्डलिनी क्रियाशील तो निरंतर बनी रही, परन्तु कभी जागृत नहीं हो सकी (प्रथम देवीरानी से आत्मज्ञान की कहानी देखें- आतंरिक तांत्रिक वेबपृष्ठ)। यद्यपि कालान्तर में द्वितीय देवीरानी ने प्रत्यक्ष/पूर्ण तंत्रयोग/ तथाकथित वामपंथी तंत्र (बाह्य वेबसाईट- isha.sadhguru.org) करवा कर, उन वृद्धाध्यात्मिक पुरुष के मानसिक चित्र की कुण्डलिनी को मेरे शरीर में बहुत ऊपर उठवाया व जागृत करवाया (वास्तविक समय की सम्बंधित कहानी इस आतंरिक वेबपेज पर देखें)। साथ में, यह इस तांत्रिक सिद्धांत को सिद्ध करता है कि तांत्रिक प्रेमिका / प्रेमी की संगति के साथ-२ आध्यात्मिक / तांत्रिक गुरु की संगति भी उपलब्ध होती रहनी चाहिए (आतंरिक तांत्रिक वेबपृष्ठ)। संभवतः इसी कुण्डलिनीजागरण/समाधि को ही सहस्रार चक्र/मस्तिष्क में कुण्डलिनी का परब्रम्ह/आत्मा से जुड़ना/एकाकार होना कहा गया है। प्रेमयोगी वज्र की वास्तविक समय की सम्पूर्ण तांत्रिक प्रेमकथा इन वेबपृष्ठों पर पढ़ सकते हैं (आतंरिक तांत्रिक वेबपृष्ठ)।

अतिरिक्त स्पष्टीकरण

प्रेमयोगी वज्र के अनुसार कुंडलिनी जागृति का अनुभव सामान्य, न्यूरोसाइंटिफिक रूप से व्याख्यात्मक और मूल रूप से मन-विज्ञान के अनुसार ही प्रतीत हुआ; कभी भी रहस्यमयी प्रतीत नहीं हुआ। कुण्डलिनी-जागरण के समय कुण्डलिनी का ध्यान अपने चरम पर होता है, अर्थात ध्याता(कुण्डलिनी का ध्यान करने वाला व्यक्ति), ध्येय(कुण्डलिनी) व ध्यान(ध्यान की प्रक्रिया), तीनों एक हो जाते हैं। इसे दूसरे शब्दों में ऐसे भी कह सकते है कि ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय एक हो जाते हैं। इसे पूर्ण समाधि की अवस्था भी कहते हैं। इसमें अन्धकारयुक्त आत्मा चमकती कुण्डलिनी के साथ एकाकार हो जाता है, अर्थात आत्मा प्रकाशपूर्ण हो जाता है। इससे साधक अनजाने में ही, स्वयं ही अपनी आत्मा को स्वच्छ करने के अभियान में लग जाता है। क्योंकि अद्वैतभाव से ही आत्मा स्वच्छ हो सकती है, अतः उसमें अद्वैतभाव स्वयं ही विकसित होने लगता है, जो उसकी जीवनशैली को भी सकारात्मक रूप से रूपांतरित कर देता है। प्रेमयोगी वज्र के कुण्डलिनी-जागरण को संभव बनाने वाली वास्तविक-समय(real time) की परिस्थितियों व तदनुसार किए गए प्रयासों को जानने के लिए Love story of a Yogi (आतंरिक तांत्रिक वेबपृष्ठ) का व अधिक विस्तृत जानकारी के लिए उपरोक्त ई-पुस्तक का अवलोकन किया जा सकता है।

साथ में, उपरोक्त प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, दोनों प्रकार के यौनतंत्रों के अस्तित्व का यह अर्थ भी है कि विवाहित जीवन में एक महिला की आकर्षकता का महत्त्व कम ही होता है।

कुण्डलिनीजागरण के मूल / ओरिजिनल विवरण (ओनलाईन फोरम की चर्चा के अंतर्गत) यहाँ पढ़ें (आतंरिक लिंक)।

प्रेमयोगी वज्र अपने आत्मजागरण/आत्मज्ञान(ENLIGHTENMENT) का वर्णन अपने शब्दों में इस प्रकार करता है

मैंमीठी निद्रा में एक स्वप्न देख रहा हूँ कि मैं अपने घर से लगभग २०० मीटर नीचे, घाटी की नदी के ऊपर बने हुए एक पुल पर खड़ा हूँ। तभी मैंने अचानक अपने को पूरा खुला हुआ अनुभव किया और मेरी अन्धकार से भरी आत्मा में अचानक प्रकाश छा गया। ऐसा लगा, जैसे कि मेरी आत्मा एक जकड़न से मुक्त हो गई। मन का प्रकाश जैसे आत्मा में फैल गया था। मैंने नदी में बहते जल को देखा। वह वैसे ही रूप-रंग का था, जैसा कि होता है, परन्तु वह मुझे अपनी आत्मा व पुल से अलग नहीं लग रहा था। पुल भी वैसा ही था, पर अनुभव-रूप में मेरी आत्मा व नदी-जल से अलग नहीं था। नदी से दूसरी ओर, सामने एक पहाड़ था, जिसका लगभग २० मीटर का मलबा, कई दिनों पहले, निरंतर हो रही भारी वर्षा के कारण गिरकर, नदी को संकरा किये हुए था। वह मलबा चमत्कारिक रूप से सीधे ही नीचे फिसला था, जिससे उसपर उपस्थित सभी पेड़-पौधे भी जीवित व सुरक्षित थे। उपरोक्त दिव्य, विचित्र व आत्मज्ञान से भरे स्वप्न में; मैंने उसकी ओर भी देखा, तो उस सब का अनुभव भी अलग नहीं था। फिर मैंने अपनी दृष्टि को ऊपर उठा कर, आसमान में चमकते हुए महान सूर्य को देखा। उसका अनुभव भी सभी के जैसा था और यहाँ तक कि चमक भी सभी के जैसी ही थी। इस सारे घटनाक्रम का अनुभव लगभग ५-१० सैकेंड में ही हो गया था। उस समय मैं परमानंद से ओत-प्रोत था। मुझे उस अनुभव में वह सभी कुछ मिल गया, जो कि मिलना संभव है। उन चंद क्षणों के लिए जैसे मैं संपूर्ण ब्रम्हांड/सृष्टि/अंतरिक्ष का राजा / परमदेवता-सदृश बन गया था। उस अनुभव में रात(अंधकार) और दिन(प्रकाश) जुड़े हुए थे। उस अनुभव में प्यार-घृणा, दोनों जुड़े हुए थे। इसका अर्थ है कि उस अनुभव में सभी कुछ विद्यमान था। वह एक पूर्ण अनुभव था। अपनी आत्मा के उस पूर्ण अनुभव-सागर में मुझे लग रहा था कि जैसे नदी, पुल, सूर्य, पहाड़ आदि के रूप में लहरें उठ रही थीं, जोकि उस एकमात्र अनुभव-सागर से

अलग नहीं प्रतीत हो रही थीं। अगली सुबह जब मैं अपनी शय्या से ऊपर उठा; तो मैंने अपने को पूर्ण, पूर्णकाम, आप्तकाम, नवजात-बालक सदृश, तनाव-रहित, चिन्तारहित, भयरहित, शांत, आनंदमय व इच्छाहीन पाया, तथा अपने को अपने स्वाभाविक आत्मरूप में प्रतिष्ठित महसूस किया। ऐसा लगा, जैसे कि मैंने अपने-आप को अब वास्तविक रूप में पहचाना है और अज्ञात समय से चली आ रही जिंदगी की दौड़ को पूरा कर लिया है। मुझे ऐसा लगा कि जैसे कभी अपने घर से भटका हुआ, अब मैं अपने वास्तविक घर में पहुँच गया हूँ। उस अनुभव ने मेरे जीवन को एकदम से, पूर्णतया व सकारात्मक रूप से परिवर्तित कर दिया।

उपरोक्त को मूलस्रोत में देखें (आतंरिक वेबपृष्ठ)

स्पष्टीकरण

आम अवस्था में अपना आपा अर्थात आत्मा (बाह्य वेबसाईट- vedicaim.com) एक गहरे अंधेरे से भरे कमरे की तरह होता है, और सांसारिक/मानसिक दृश्य, उस अंधेरे कमरे के चलचित्रपट पर दौड़ रहे प्रकाशमान दृश्य की तरह होते हैं। उस आत्मज्ञान के समय वह आत्मा रूपी अँधेरा कमरा अचानक व एकदम से प्रकाशमान हो गया, जिससे कमरे/आत्मा व चलचित्र दृश्य/मन-संसार के बीच का अंतर समाप्त हो गया और वे सभी एक जैसे दिखने लगे।

वास्तव में हमारी अपनी अंधकारमयी आत्मा सभी बुराइयों के रूप में विद्यमान है। हमारी चमकदार चित्तवृत्तियाँ/संकल्प-विकल्प सभी अच्छाइयों के रूप में विद्यमान हैं। जब आत्मा व चित्तवृत्तियाँ एकसमान चेतना व प्रकाश से युक्त अनुभव होती हैं, तब उपरोक्त आत्मजागरण के अनुभव के अनुसार अपनी आत्मा में अच्छाइयां व बुराइयां एकसाथ ही चमत्कार रूप से अनुभव होती हैं।

किसी भी ज्ञान/वस्तु/कर्म/फल की अभिव्यक्ति का आधार चित्तवृत्तियाँ ही तो हैं। जिस समय आत्मा जागृत होती है, उस समय सभी चित्तवृत्तियाँ उससे अलग नहीं, अपितु उसी की विविध आकार-प्रकार की हलचलें जान पड़ती हैं, जैसे कि सागर में विविध प्रकार की तरंगें। इसी कारण से प्रेमयोगी वज्र को लगा कि उसने सभी कुछ पा लिया था, व सभी कुछ कर लिया था।

परमदेवता को ही सभी कुछ सदैव प्राप्त होता है, व सभी कुछ उसने सदैव किया हुआ होता है; तभी तो वह अपने बनाए हुए जगत में कोई स्वार्थबुद्धि नहीं रखता। क्योंकि प्रेमयोगी वज्र को 10 सेकंड की यह

अनुभूति हुई कि उसने सभी कुछ प्राप्त कर लिया है, और सभी काम कर लिए हैं; इसलिए उसे लगा कि वह उस 10 सेकंड के लिए परमदेवता बन गया था। फिर भी, उसे उन चंद क्षणों के लिए भी ईश्वर नहीं कहा जा सकता, क्योंकि किसी के भी लिए भी ईश्वर बनना असंभव है, तभी तो उसने उन चंद क्षणों के लिए ईश्वर-सदृश / परमदेवता-सदृश ही बोला है, ईश्वर नहीं। यद्यपि उसे ईश्वर का पुत्र जरूर कहा जा सकता है। समस्त स्थूल सृष्टि ईश्वर के अन्दर, सागर में तरंगों की तरह ही विद्यमान है। किसी के मन में जो कुछ भी है, वह स्थूल सृष्टि का प्रतिबिम्ब ही है। इसलिए जीव के मन को सूक्ष्म सृष्टि भी कह सकते हैं। क्योंकि प्रेमयोगी वज्र ने अपने अन्दर (अपनी आत्मा के अन्दर) सूक्ष्म सृष्टि को, सागर में तरंगों की तरह अनुभव किया, स्थूल सृष्टि को नहीं, इसलिए वह ईश्वर का पुत्र या प्रतिबिम्ब ही कहलाया। इसीलिए वह शक्तियों के मामले में ईश्वर के सामने नगण्य ही था, और एक आम आदमी से बढ़कर कुछ भी नहीं था।

प्रेमयोगी वज्र ने आत्मज्ञानावस्था को द्वैत से भरे लोगों के लिए क्रोधपूर्ण पाया। ऐसा इसलिए है, क्योंकि क्षणिकात्मज्ञान की झलक के बाद, उन्होंने द्वैतवादी लोगों को अपने से भयभीत जैसा और अपने प्रति घृणायुक्त जैसा पाया, क्योंकि वे उनकी प्रबुद्ध आत्मस्थिति में अंधेरे जैसे का अनुभव करते थे। इसी प्रकार, उन्होंने प्रबुद्ध आत्मराज्य को वास्तविक अद्वैतवादी लोगों के लिए आशीर्वाद देने वाले के रूप में पाया। ऐसा इसलिए है, क्योंकि उनकी क्षणिकात्मज्ञान की झलक के बाद, उन्होंने अद्वैतवादी लोगों को अपने से प्यार करने वाले के रूप में और अपने प्रति आकर्षित होने वाले के रूप में पाया। वे अपने अद्वैतमयी दृष्टिकोण के स्तर के अनुसार प्रबुद्ध आत्मज्ञानराज्य में थोड़े अंधेरे से लेकर शून्य अंधेरे तक का अनुभव करते थे।

प्रेमयोगी वज्र के इस क्षणिक आत्मजागरण को संभव बनाने वाली परिस्थितियों (विशेषतः यिन-यांग आकर्षण से उत्पन्न दृढ़ समाधि) व तदनुसार किए गए प्रयासों को जानने के लिए Love story of a Yogi का व अधिक विस्तृत जानकारी के लिए उपरोक्त ई-पुस्तक का अवलोकन किया जा सकता है।

वैबपृष्ठ- गृह-2 (home-2)- शरीरविज्ञान दार्शनिकों की विशेष पूजा

एक पुस्तक-पाठक की कलम से

भाइयो, बहुत से लोग अपने अहंकारपूर्ण जीवन में व्यस्त हैं, जो नरक के लिए एक साक्षात द्वार है। इसी तरह, कुछ लोग त्याग-भावना के बहकावे में आ जाते हैं। उपरोक्त दोनों ही प्रकार के लोग आंशिक सत्य पर चलने वाले प्रतीत होते हैं। वास्तव में एक आदमी इस संसार में इतना अधिक विकसित हो जाना चाहिए कि उसे त्याग की आवश्यकता ही महसूस न हो, अपितु संसार उसके त्याग के लिए स्वयं ही बाध्य हो जाए। मित्रो, तब त्याग अपने आप ही होता है, जब एक आदमी इस संसार में अपनी आध्यात्मिक विकास की एक निश्चित सीमा को लांघ देता है। अद्वैत दृष्टिकोण से ही आध्यात्मिक विकास का यह निर्दिष्ट सीमाबिंदु सर्वाधिक सरलता, आनंद व व्यावहारिकता के साथ प्राप्त होता है। यद्यपि "अद्वैत दृष्टिकोण", केवल यह कहना आसान है, परन्तु इसे विकसित करके निरंतर बना कर रखना बहुत कठिन है। यदि केवल अद्वैत दृष्टिकोण के बारे में पढ़ना, लिखना व बोलना ही पर्याप्त होता, तब व्यावहारिक रूप वाली विस्तृत आध्यात्मिक व तांत्रिक प्रक्रियाओं का विकास न हुआ होता। उदाहरण के लिए, तंत्र या बौद्ध मार्ग के मन्त्रों, यंत्रों (बाह्य वेबसाईट- literature.awgp.org) व मंडलों को ही देख लें। वे अच्छी तरह से बनाए जाकर, नियमित रूप से पूजे जाने चाहिए, सांसारिक व व्यावहारिक रूप में, उन्हें सूक्ष्म-संसार अर्थात अंतहीन संसार के सूक्ष्म नमूने/अनुकृतियाँ समझते हुए। उस सूक्ष्म संसार में देवताओं के भावना-दर्शन करने चाहिए। उन देवताओं में अद्वैत दृष्टिकोण होता है, यद्यपि वे पूर्णतः हमारे जैसे आम लोगों की तरह ही काम करते हैं। इस तरह से, उन देवताओं का अद्वैतमयी व अहंकाररहित दृष्टिकोण अपने आप ही हमारे अन्दर सर्वाधिक निपुणता के साथ उतर आता है, और निरंतर जारी भी रहता है। मित्रो, इस भौतिक संसार से समानता रखने वालों में, हमारे अपने भौतिक शरीर से बढ़िया भला क्या वस्तु हो सकती है? वास्तव में हमारा अपना मानव शरीर, अनंत विस्तार वाले इस बाहरी व भौतिक संसार का सर्वाधिक सूक्ष्म व सर्वश्रेष्ठ नमूना है। शास्त्रों में भी यह इस सत्योक्ति से सिद्ध किया गया है, "यत्पिण्डे तत्ब्रम्हाण्डे" (बाह्य वेबसाईट- aniruddhafriend-samirsinh.com)। इस उक्ति का अर्थ है कि जो कुछ भी छोटी संरचना (शरीर आदि) में विद्यमान है, वही पूर्णतः समान रूप

से, सभी कुछ पूरे ब्रम्हांड में है, अन्य कुछ नहीं। हमारे शरीर में अत्यंत सूक्ष्म देहपुरुष विद्यमान होते हैं। वे मनुष्य के सूक्ष्मरूप होते हैं, और पूरी तरह से मनुष्य की तरह ही होते हैं, यद्यपि अतिरिक्त रूप से वे अद्वैतभाव को भी धारण करते हैं। वे यंत्र-मंडल के देवताओं की तरह होते हैं, यद्यपि तुलनात्मक रूप से अधिक चुस्त व क्रियाशील होते हैं। शास्त्र भी इस बात को सिद्ध करते हैं कि हमारे शरीर में सभी देवता विद्यमान हैं। मित्रो, फिर इस शरीर-मंडल (बाह्य वेबसाईट- pinterest) साथ प्रत्येक परिस्थिति में खड़ा रहता है, और प्रतिक्षण हमें अद्वैत दृष्टिकोण की सर्वोत्तमता की याद दिलाता रहता है। यह अन्य मंडलों की तरह अस्थायी व नश्वर भी नहीं है, यहाँ तक कि यह अनादिकाल से हमारे साथ है, और तब तक साथ रहेगा, जब तक हम मुक्त नहीं हो जाते। क्योंकि मुक्त होने तक कोई न कोई शरीर तो मिलता ही रहता है। इससे, शरीरविज्ञान दार्शनिक अपने होने वाले प्रत्येक जन्म में इसके अद्वैत से लाभ प्राप्त करते रहते हैं।

मित्रो, अधिकाँश लोग देहक्षायी यौनसम्बन्ध में संलिप्त रहते हैं। यौनसम्बन्ध एक आश्चर्यजनक क्रिया है, जिसके बारे में न्यूनतम अध्ययन किया गया प्रतीत होता है। यदि यह अनुचित विधि से किए जाने के कारण नरक/दुःख/बंधन की प्राप्ति करवा सकता है, तो यही स्वर्ग/सुख/मुक्ति की प्राप्ति भी करवा सकता है, यदि इसे उचित विधि व कुण्डलिनीयोग के साथ किया जाए। यह पुस्तक यौनाचार की अनुभूत व प्रमाणित तांत्रिक पद्धति का वर्णन करती है, जिससे उस कुण्डलिनीजागरण की प्राप्ति होती है, जो कि अंतिम मोक्ष के लिए द्वाररूप है। मित्रो, ये देहपुरुष हमारे शरीर में हर स्थान पर विद्यमान होते हुए, अपने देहदेश के प्रति महान देशभक्त व राष्ट्रवादी होते हैं। ये हमें भी इस तरह के गुण धारण करना सिखाते हैं, यदि आधुनिक दर्शन, शविद के माध्यम से इनका चिंतन किया जाए। हमारे अपने शरीर में प्रकृति अपने सम्पूर्ण विस्तार के साथ विद्यमान है। वह प्रकृति देहपुरुषों के द्वारा पूरी तरह से संरक्षित व विवर्धित की जाती रहती है। इसके विपरीत, आधुनिक स्थूलपुरुषों के द्वारा अपनी स्थूलप्रकृति नष्ट की जा रही है। यदि आप प्रकृति-प्रेमी और प्रकृति-संरक्षक हैं, तब तो यह पुस्तक आपके लिए ही है।

मित्रो, हमारा आश्चर्यजनक भौतिक शरीर (बाह्य वेबसाईट- bharatsvasthya.net) अनगिनत कोशिकाओं से बना हुआ है। वे सभी कोशिकाएं बेहतरीन तालमेल व सहयोग के साथ काम करती रहती हैं, जिससे हमारा शरीर एक सर्वोत्तम समाज बन कर उभरता है। हम ये कलाएं और अन्य भी बहुत कुछ उनसे सीख सकते हैं। इसके साथ ही, वे कोशिकाएं अद्वैतवादी व जीवन्मुक्त भी हैं। वे मनस्कता से पूर्ण हैं। यदि उन्हें मन से रहित माना जाए, तब तो उचित ढंग से क्रियाशील मन के बिना इस तरह के आश्चर्यमयी कारनामों की उनसे कल्पना नहीं की जा सकती। इससे यह सिद्ध होता है कि उनके अन्दर एक मन विद्यमान होता है, परन्तु इसी के साथ वे मन से रहित भी होते हैं, क्योंकि वे अपने अद्वैतभाव के कारण अपने मन में आसक्त नहीं होते। मनुष्य भी उस तरह के समाज को बनाने का प्रयास करता है, परन्तु हर बार बुरी तरह से असफल हो जाता है। इसका कारण है, हम उनके बारे में आध्यात्मिक/दार्शनिक विधि से पूर्ण विस्तार के साथ नहीं जानते। यह ई-पुस्तक इसी समस्या का हल करती है।

मित्रो, हम पूरी तरह से देहपुरुषों (वे कोशिकाएं) की तरह ही व्यवहार व कर्म करते रहते हैं, परन्तु केवल हम ही आसक्ति, अहंकार व अद्वैत को प्राप्त करते हैं, वे देहपुरुष नहीं। यह पुस्तक दिखाती है कि इस कारीगरी को उनसे कैसे सीखा जाए? देहपुरुष कई स्थानों पर एकवचन में ही लिखा गया है, यद्यपि वे असंख्य हैं। यह इसलिए, क्योंकि वे सभी, आध्यात्मिक रूप से अर्थात अपने वास्तविक आत्मरूप (असली आत्मा) से एक दूसरे से अभिन्न हैं। यह पुस्तक यह भी दिखाती है कि देहपुरुष को अपनी कुण्डलिनी कैसे बनाया जाए, और उसे उसके ध्यान से कैसे विवृद्ध किया जाए? इस संसार में अद्वैत के बारे में बहुत सी मिथ्या समझ व बहुत सी मिथ्या धारणाएं विद्यमान हैं, पढ़ें ईपुस्तक, कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है)। वे भी सभी इस पुस्तक में बहुत अच्छी तरह से व व्यावहारिक रूप से स्पष्टीकृत की गई हैं।

शरीरविज्ञान दार्शनिकों के द्वारा अनोखी अराधना

शरीरविज्ञान दार्शनिक प्रतिक्षण ही अनंत उपचारों से, अनायास ही, अर्थात अनजाने में ही, अर्थात बिना किसी औपचारिकताओं के ही देहपुरुषों की पूजा करते रहते हैं, क्योंकि देहपुरुष कहीं दूर नहीं, अपितु

उनके अपने शरीर में ही विद्यमान होते हैं। वे उन्हें नद, नदी, तालाब, समुद्र आदि अनेक जल-स्रोतों के जल से स्नान करवाते हैं, तथा उन्हें पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, अभिषेक व शुद्धोदक आदि के रूप में जल अर्पित करवाते हैं। विविध व सुगन्धित हवाओं के रूप में नाना किस्म के धूप लगाते हैं। औषधियों से उनकी चिकित्सा करते हैं। अनेक प्रकार के वाहनों में बैठाकर उन्हें एक प्रकार से पालकियों में घुमाते भी हैं। उनके द्वारा बोली गई शुभ वाणी से उनके उपदेश ग्रहण करते हैं। सुनाई देती हुई, अनेक प्रकार की शुभ वाणियों को उनके प्रति अर्पित स्तोत्र, घंटानाद व शंखनाद समझकर, उनसे उनकी स्तुति करते हैं। अनेक प्रकार के व्यंजनों से उन्हें भोग लगाते हैं। नेत्ररूपी दीप-ज्योति से उनकी आरती उतरवाते हैं। अनेक प्रकार के मानवीय मनोरंजनों, संकल्प-कर्मरूपी व्यायामों से व योग-भोगादि अन्यानेक विधियों से उनका मनोरंजन करते हैं। इस प्रकार से शरीरविज्ञान दार्शनिकों के द्वारा किए गए सभी मानवीय काम व व्यवहार ईश्वरपूजारूप ही हैं। पुरुष की सारी अनुभूतियाँ, उसके काम-काज को काबू में रखने वाली, उसकी चित्तवृत्तियाँ ही हैं, जिन्हें देहपुरुष ही अपने अन्दर पैदा करते हैं, देहदेश को नियंत्रित करने के लिए। ऐसा समझने वाला पुरुष देहपुरुषों को ही कर्ता-भोक्ता समझता है, और कर्मबंधन से मुक्त हो जाता है। साथ में, कुण्डलिनीयोग व शविद-अद्वैत के एकसाथ लम्बे आचरण से मानसिक कुण्डलिनीचित्र देहपुरुषों के ऊपर आरोपित हो जाता है, जिससे कुण्डलिनी बहुत पुष्ट हो जाती है। वास्तव में हम अनादिकाल से ही पूजा व सेवा करते आ रहे हैं, इस देहमंडल की। परन्तु हमें इसका पर्याप्त लाभ नहीं मिलता, क्योंकि हमें इस बात का ज्ञान नहीं है, और यदि ज्ञान है तो दृढ़ता से विश्वास करते हुए, इस बात को मन में धारण नहीं करते। शविद के अध्ययन से यह विश्वास दृढ़ हो जाता है, जिससे धारणा भी निरंतर पुष्ट होती रहती है। इससे हमें पुराने समय के किए हुए, अपने प्रयासों का फल एकदम से व इकट्ठा, कुण्डलिनीजागरण के रूप में मिल जाता है। इस तरह से हम देख सकते हैं कि शरीरविज्ञानदार्शनिक पूरी तरह से वैदिक-पौराणिक पुरुषों की तरह ही होते हैं। बाहर से वे कुछ अधिक व्यवहारवादी व तर्कवादी लग सकते हैं, परन्तु अन्दर से वे उनसे भी अधिक शांत, समरूप व मुक्त होते हैं। वे उस तूफान से भड़के हुए महासागर की तरह होते हैं, जो बाहर से उसी की तरह, तन-मन से भरपूर चंचल-चलायमान होते हैं, परन्तु अन्दर से उसी की तरह शांत व स्थिर भी होते हैं।

वैबपृष्ठ- गृह-3 (home-3)- हमारा अपना शरीर एक अद्वैतशाली ब्रम्हांड-पुरुष

हमारे अपने शरीर के अन्दर प्रेम-प्रकरण

हर पल हमारे शरीर के भीतर अनगिनत प्रेम-सम्बंधित मामले और विवाह उदीयमान होते रहते हैं। इसी तरह, स्थूल दुनिया की तरह ही, प्रिय व सुकोमल बच्चों का भी हमारे देहदेश के अंदर अच्छी तरह से पालन किया जाता रहता है। हमारे शरीर के अंदर होने वाले विवाह (क्लासिक स्वयंमवर प्रथा) के लिए कई प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहता है, जहां पर विभिन्न प्रतियोगी सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे होते हैं। प्रतिस्पर्धियों को चट्टानी इलाकों और पहाड़ों के साथ-२, एक बहुत लंबे और कष्टप्रद मार्ग/ट्रैक पर दौड़ना पड़ता है। इस दौड़ के दौरान, भूख और प्यास के कारण कई लोग मर जाते हैं। कई स्पर्धी जंगली जानवरों के द्वारा मार दिए जाते हैं। आतंकवादियों के संदेह से सुरक्षा बलों के द्वारा कई लोगों की हत्या कर दी गई होती है। उनमें से कई, पहाड़ की किसी न किसी जोखिम-भरी सतह से गिर जाते हैं, और कई प्रकार की जहरीली जड़ी-बूटियों और जहरीले फलों को खाने के बाद कई लोग मर जाते हैं। उनमें से केवल एक कुमार ही उस सुंदर राजकुमारी से शादी करने में सफल हो पाता है।

हमारे अपने शरीर के अंदर हड़ताल, गुस्सा और युद्ध

अनगिनत संख्या में युद्ध, इस शरीर-देश के अंदर और बाहर चल रहे हैं, हर पल। घृणा से भरे कई दुश्मन, लंबे समय तक सीमा दीवारों के बाहर जमे रहते हैं, और शरीर-मंडल/देश पर आक्रमण करने के सही अवसर की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं। जब किसी भी कारण से इस जीवित मंडल की सीमा-बाड़ क्षतिग्रस्त हो जाती है, तो वे दुश्मन सीमा पार कर जाते हैं। वहां पर वे रक्षा विभाग की पहली पंक्ति के द्वारा हतोत्साहित कर दिए जाते हैं, जब तक कि रक्षा-विभाग की दूसरी पंक्ति के सैनिक उन दुश्मनों के खिलाफ कड़ी नफरत और क्रोध दिखाते हुए, वहां पहुँच नहीं जाते। फिर महान युद्ध शुरू होता है। अधिकांश मामलों में, शरीर-देश जीत जाता है। लेकिन कुछ असाधारण मामलों में, उन गंदे दुश्मनों ने युद्ध जीत लिया, और शरीर-देश के आंशिक या देहदेश के पूरे हिस्से को नियंत्रण में ले लिया। फिर उस देहदेश ने उन आक्रमणकारी व कचरा दुश्मनों को, विदेशी सहायता से नष्ट कर दिया। कई बार, वे शत्रु

आक्रमित राष्ट्र को नष्ट कर देते हैं, ताकि वे अपनी स्वतंत्र और गंदी इच्छा के वश में होकर, पूरे राष्ट्र को नष्ट करके, एकसाथ ही उसका उपभोग कर सकें।

हमारे अपने स्वयं के शरीर के भीतर सार्वजनिक प्रताड़नाएँ और क्रांतियाँ

कई बार, शरीर-देश के अंदर देशनिवासियों के कुछ समूह इतने परेशान हो जाते हैं कि वे अपने देश के खिलाफ विद्रोह कर देते हैं। वे कई साधारण नागरिकों को भी राष्ट्र-विरोधी लोगों में बदल देते हैं। कभी-कभी, वे बाहरी दुश्मनों के साथ सांठगांठ करके, उनके साथ एक हो जाते हैं। बदले में, देहदेश-सरकार उन्हें प्यार से व अन्य साधनों से शांत करने की कोशिश करती है, लेकिन जब वे क्रांति को नहीं छोड़ते हैं, तो सुरक्षा बलों के पास सशस्त्र संघर्ष में उन्हें मारने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता है। शरीर-देश जीतता है, कभी-कभी क्रांतिकारी शरीर का नियंत्रण हासिल कर लेते हैं, और अपने बदसूरत व क्षणिक लाभ के लिए उसे नष्ट कर देते हैं।

हमारे अपने शरीर के अंदर ईर्ष्या

जब कुछ गरीब और पीड़ित नागरिक, जो हमारे उस देहदेश के भीतर हैं, जिसके हम स्वयं राजा हैं, वे अमीर नागरिकों के प्रति ईर्ष्यापूर्ण हो जाते हैं, तो वे एक सशस्त्र संघर्ष शुरू कर देते हैं, और उस देश के सभी संसाधनों का उपभोग मनमानी व बर्बादी के साथ करने लग जाते हैं; जबकि वे समाज के लिए बिना किसी उपयोगी काम के निष्क्रिय अतः हानिपूर्ण बने रहते हैं।

हमारी अपनी खुद की निकाय के अंदर इच्छाएं और चुनाव

हमारे देहदेश (शरीर-देश) के देहपुरुष (हमारे शरीर-देश के नागरिक/शरीर-कोशिकाएं/ऐन्जाईम/होरमोन) भी हमारे जैसे खाद्य पदार्थ, पेय पदार्थ और अन्य पर्यावरणीय आराम चाहते हैं। ये इच्छाएं अच्छी तरह से पूरी होती हैं। विकल्प/चुनाव के भाव भी उनके द्वारा दिखाए जाते हैं। एक विशेष जाति, नस्ल या धर्म के देहशत्रु (देहदेश के दुश्मन), हमला करने के लिए विशेष देहपुरुषों को ही पसंद करते हैं, दूसरे उनसे भी कमजोर देहपुरुषों को छोड़ते हुए। इसी तरह, एक विशेष देहपुरुष केवल एक विशेष देहपुरुष-श्रेणी के साथ ही शादी का सम्बन्ध बनाता है, तथा अन्य समाजों के खूबसूरत लोगों को भी इनकार कर देता है।

हमारे अपने स्वयं के शरीर के अंदर लालच

देहराक्षस बहुत लालची हैं। वे एक भी दूसरे विचार के बिना, सभी संसाधनों का एकसाथ व मनमर्जी से उपभोग करने के लिए, लालच के वशीभूत होकर, आक्रमित किए गए देहदेश को नष्ट कर देते हैं।

हमारे अपने शरीर के अंदर भ्रम

भ्रम के कारण, राजकुमार देहपुरुष देहदेश-स्वयंवर (देहदेश में विवाह करने के लिए एक लड़की/रानी द्वारा जीवन साथी के स्वतंत्र-चयन की प्रक्रिया) में देहदेशराजकुमारी के लिए मर जाते हैं।

हमारे अपने स्वयं के शरीर के अंदर मद

कभी-कभी, देहसेनिक मद व अहंकार के पागलपन से भर जाते हैं, और अपने स्वयं के देहेदेश के नैष्ठिक देहपुरुषों को ही नुकसान पहुंचाने लग जाते हैं, और उन्हें मारने लग जाते हैं।

हमारे अपने शरीर के अंदर मित्रता

देहपुरुष अपने स्वयं के लाभ के लिए, अपने दोस्तों को अच्छी तरह से खिलाते-पिलाते हैं, और उनकी देखभाल करते हैं। बदले में, उनके दोस्त उनके लिए एक चमत्कारी तरीके से काम करते हैं, और उनके लिए आवश्यक वस्तुओं का निर्माण करते हैं।

हमारे अपने शरीर के अंदर परिवार नियोजन

इसके कारण, देहेदेश के अंदर जनसंख्या घनत्व को सबसे अधिक लाभदायक स्तर पर स्थिर व एकसमान रखा जाता है।

हमारे अपने स्वयं के शरीर में सफाई

देहेदेश के अंदर एक परिपूर्ण स्वच्छता रखी गई है।

सामाजिक कार्यशाला हमारे अपने स्वयं के शरीर में

हमारे अपने शरीर के अंदर एक महान सामाजिक कानून और व्यवस्था मौजूद है। अधिकारियों के कई चरण हैं, अर्थात अधिकारियों के ऊपर अधिकारियों की लम्बी सूचि विद्यमान होती है। वे सभी परिस्थिति के अनुसार अपने उच्च अधिकारियों के आदेशों का पालन करते रहते हैं।

हमारे अपने शरीर के अंदर श्रम-विभाजन

देहपुरुषों के कुछ समूह किसान हैं, कुछ ड्राइवर हैं, कुछ इंजीनियर आदि हैं। ऐसा शरीर-समाज को शीर्ष दक्षता के साथ चलाने के लिए होता है।

हमारे अपने स्वयं के शरीर के अंदर समूहीकरण

देहपुरुष हमेशा अलगाव में नहीं, समूहों में काम करते हैं। समूह के कारण, वे प्रभावी ढंग से सहयोग करते हैं, जिसके कारण उनके काम की गुणवत्ता और ताकत नाटकीय रूप से सुधर जाती है।

हमारे अपने स्वयं के शरीर में विशेषज्ञता

हमारे अपने शरीर के अंदर विशेषज्ञता और अति-विशेषज्ञता (सुपर-स्पेशलाइजेशन) का काफी प्रभावी ढंग से व एक विकसित रुझान है। जो देहपुरुष उपचार कार्य कर रहे हैं, वे स्वास्थ्य के क्षेत्र में विशिष्ट हैं। इसी तरह, ड्राइवर ड्राइविंग आदि में विशिष्ट होते हैं। सभी देहपुरुष सभी कलाओं को जानते हैं, और एक साथ काम करते हैं, लेकिन केवल उस काम में ही विशिष्ट होते हैं, जिसे वे नियमित रूप से करते हैं।

राजा, मंत्री और उच्च अधिकारी हमारे अपने स्वयं के शरीर के अंदर

वे सूक्ष्म देश में भी उसी तरह मौजूद हैं, जैसे वे स्थूल-देश में मौजूद हैं।

हमारे अपने स्वयं के शरीर के अंदर सभी अन्य लोगों का व प्रक्रियाओं का अस्तित्व

खेल, प्रशिक्षण, सम्मलेन, योजनाएं, दुःख-निवारण समितियां, चुटकुले, सार्वजनिक शिकायतें, खतरे, जन्म, विकास, परिपक्वता, मौत आदि-२; अन्य सभी जीवन-गतिविधियाँ; और भावनाएं हमारे अपने शरीर के भीतर होती रहती हैं, जैसे कि एक बड़े राष्ट्र के बड़े समाज में होती हैं। ये सब कुछ सूक्ष्म-देश/हमारे

शरीर के अंदर उसी तरह से मौजूद हैं, जैसे कि ये स्थूल-देश या दुनिया या यहां तक कि ब्रम्हांड/सृष्टि/ अंतरिक्ष में मौजूद हैं।

मानसिक रूप से और शारीरिक रूप से लगातार बदलते होने के बावजूद, देहपुरुष हमेशा अपरिवर्तनीय-ताओ की तरह अपरिवर्तनीय हैं। शरीर-विज्ञान-दर्शन (शविद) ताओवाद की तरह है, हालांकि उससे अधिक ईश्वरवादी, यथार्थवादी और व्यावहारिक रूप में। यद्यपि शविद ईश्वर को मानवता, देहपुरुषरूप/अद्वैतरूप/द्वैताद्वैतरूप व अनायास/मानवतापूर्ण प्रकृति से अलग नहीं मानता, जो कि अन्य धर्मों/दर्शनों से कुछ हट कर है।

वास्तव में जो कुछ भी संभव/कल्पनागम्य है, वह सभी कुछ हमारे अपने देहदेश में विद्यमान है, यद्यपि इस देश के निवासी पूर्णरूप से अनासक्ति व अद्वैत से भरे हुए हैं।

वैबपृष्ठ- गृह-4 (home-4)- कुण्डलिनीयोग, यौनयोग व आत्मज्ञान का अनुभूत विवरण

एकश्लोकी शविद

मानवता से बड़ा धर्म नहीं, (आतंरिक वेबपृष्ठ)

काम से बढ़ कर पूजा नहीं;

समस्या से बड़ा गुरु नहीं, (ईपुस्तक, कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित)

गृहस्थ से बड़ा मठ नहीं। (आध्यात्मिक एकांतवास- पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक)

उपरोक्त तांत्रिक छंद उस समय प्रेमयोगी वज्र के होंठों से एक सहज उत्सर्जन है, जिस समय वह अपने ज्ञान की चोटी पर था। हालांकि यह उपलेखक के द्वारा दुनिया में प्रदर्शित किया गया था। यह वाक्यांश प्रकृति में तांत्रिक जैसा प्रतीत होता है। शायद यहां 'मास्टर / गुरु' शब्द मुख्य रूप से धार्मिक चरमपंथियों के अहंकार-पूर्ण प्रमुखों को इंगित करता है, और साथ में अपने विभिन्न अनुयायियों को गुमराह करके उनसे अमानवीय कार्य करवाने वाले नेताओं को भी इंगित करता है। यह वाक्यांश अन्यथा प्रतीत नहीं होता है, क्योंकि उसने गुरु के माध्यम से ही अपनी आध्यात्मिक सफलता प्राप्त की है, और वह साथ में मानवता को भी उजागर कर रहा है, गुरु जिसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका एक अर्थ यह भी है कि जो गुरु अपने शिष्य के लिए मानवतापूर्ण ढंग से जितनी अधिक समस्याएँ उत्पन्न करते हैं, वे उतने ही अधिक सफल सिद्ध होते हैं। प्राचीनकाल में गुरु द्वारा ली जाने वाली गुरुपरीक्षा इसी सिद्धांत पर ही तो आधारित होती थी। वह पूजा से इंकार नहीं कर रहा है, क्योंकि वह हमेशा वैदिक पुरोहित/पुजारी की कंपनी में रहा, और उसने थोड़ी अवधि के लिए एक वैदिक-पूजा प्रकार के पुजारीपन को भी अपनाया था; लेकिन उसका तात्पर्य है कि पूजा से किसी के द्वारा अपने काम को नकारात्मक रूप से प्रभावित नहीं करना चाहिए, और अपने स्वयं के काम को ही पूजा बनाना सर्वोत्तम है, जिसके लिए लौकिक/कस्टम पूजाओं की सहायता ली जा सकती है। उसका यह भी मतलब प्रतीत होता है कि मूल समस्या को समझे बिना, मास्टर भी बहुत अच्छा नहीं कर सकता है। उसका तात्पर्य

यह भी प्रतीत होता है कि बुरे कर्मों को कभी भी क्षमा नहीं किया जा सकता है, उनके खराब प्रभावों को सहन किए बिना (बाह्य वेबसाईट- गायत्री परिवार)। इसी प्रकार, वह धर्म को नकारने वालों में भी प्रतीत नहीं होता है, लेकिन वह इस तथ्य को इंगित करता है कि सबसे अच्छा धर्म केवल मानवता है, और अमानवीय गतिविधियों को धर्म के नाम पर उचित नहीं ठहराया जा सकता है। वह धार्मिक सभाओं को नकारने वालों में नहीं दिखता है, लेकिन इस तथ्य को इंगित करता है कि धार्मिक सम्मलेन/समूहीकरण अहिंसक होना चाहिए, और एक परिवार की तरह प्यार/मानवता से भरा होना चाहिए, या एक पूर्ण परिवार को एक अहिंसक धार्मिक-सभा की तरह जीना चाहिए, और आपस में पूर्णरूप से प्यार करना चाहिए। पूरा शविद / शरीरविज्ञान दर्शन (वह हिंदी ई-बुक) २० वर्षों के एक लंबे समय में, इसी एकल वाक्यांश शविद की एक ही आधार-नींव पर विकसित किया गया था, जिसके २० वर्षों के व्यावहारिक अनुशीलन से प्रेमयोगी वज्र को कुण्डलिनी-जागरण की एक झलक मिली थी, जिसका वर्णन गृह-8 पृष्ठ पर किया गया है।

कुंडलिनी-योगा कितना असली है

यह उतना ही वास्तविक है, जितना कि हमारा अस्तित्व है। रहस्यवादी प्रेमयोगी वज्र ने अपने कुंडलिनीजागरण (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक) के बारे में अपने स्वयं के जीवंत अनुभवों का वर्णन किया है। उन्होंने उन सभी आवश्यक परिस्थितियों का विस्तृत विवरण दिया है, जिनका उन्हें अपनी कुंडलिनी-जागृति से पहले सामना करना पड़ा। उन्होंने इस ई-पुस्तक में अपने कुंडलिनी-जागृति और इसके प्रभावों के वास्तविक समय के अनुभव को अच्छी तरह से समझाया है।

कुंडलिनी-योगा में कोई कठोर और तेज़ नियम नहीं, भौतिक रूप से

थोड़ी देर के लिए शरीर के अलग-अलग भागों का झुकाव, उन झुकावों की जोड़ों आदि पर संवेदनाओं में अनुभूत कुंडलिनी-छवि (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक) को भड़काने वाली श्वास पहुँच जाती है। वो जोड़ों के विशेष भाग/चक्र आदि सांस के साथ हिलते हैं/कंपन करते हैं। अभ्यास से उन चक्रों की विशेष पहचान हो जाती है, क्योंकि कुण्डलिनी अपनी अभिव्यक्ति के लिए खुद ही साधक को निर्देशित करती रहती है। श्वास उस कुण्डलिनी को उसी तरह से आग लगाती है, जैसे हवा सुलगते हुए कोयले को आग लगाती

है। इसी प्रकार, सीधी पीठ के साथ बैठने की सिद्धासन आदि की मुद्रा में, और किसी उपयुक्त मुद्रा के साथ बैठने पर, मूलाधार (रूट) चक्र-रूपी अपने मूल घर में कुंडलिनी-छवि पर पैर एड़ी का दबाव लगता है। उसे विभिन्न चक्रों में यौगिक बंधों की सहायता से सीमित कर दिया जाता है, जहां पर उन बंधों से ही पूरे शरीर का प्राण इकट्ठा हो जाता है, जो कुण्डलिनी को भड़का देता है। आसानी से एक सामान्य सा नियम है कि शरीर के अंगों के झुकाव के दौरान जब योगी अपने पेट को दबाता है (उदाहरण के लिए, खड़े होने पर आगे झुकना), तब सांस छोड़ दी जाती है, और शरीर/शरीर के अंगों के विपरीत दिशा में झुकाव के दौरान, सांस खींची जाती है। विशिष्ट तकनीक को तो केवल प्रगति को और तेज बनाने के लिए बनाया गया है। किसी भी योग प्रक्रिया का अभ्यास करते हुए अपनी सहन करने की ऊपरी व सुरक्षित सीमा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।भोजन हल्का होना चाहिए, और लगातार अंतराल पर लिया जाना चाहिए, कभी भी थोड़ा सा भारी नहीं होना चाहिए, नहीं तो वह सुस्ती पैदा करता है। प्रेमयोगी वज्र के अनुसार, कुंडलिनी योग (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक) यौनयोग के मौलिक आधार पर कृत्रिम रूप से तैयार/डिजाइन किया गया प्रतीत होता है। व्यावहारिक/प्रैक्टिकल और वास्तविक समय का तांत्रिक विवरण तो “एक योगी की प्रेम कहानी” में है, और इस ई-बुक (हिंदी) में और अधिक गहरी जानकारी पढ़ी जा सकती है।

कुंडलिनी के ऊपर आधारित धर्म

प्रेमयोगी वज्र के अनुसार, सभी धर्म विशेष रूप से हिंदु / सनातन धर्म पूरी तरह से कुंडलिनी-उन्मुख हैं।भारतीय संस्कृति में सब कुछ केवल कुंडलिनी जगाने के लिए था। आज यह गलत समझा जा सकता है। आप उन चीजों को मूर्ति-पूजा, मंत्र-उच्चारण, यज्ञ, देवदर्शन (भगवान के दर्शन), तीर्थयात्रा, ज्योतिष आदि के रूप में बुला सकते हैं। और भी बहुत से धार्मिक क्रियाकलाप, उनके अपने असली या आंतरिक रूपों में, वे सभी एक विशाल कुंडलिनी मशीन के विभिन्न स्पेयर पार्ट्स के रूप में काम करते थे।

ऐसा लगता है, जैसे धार्मिक चरमपंथियों की उन धार्मिक गतिविधियों के हानिकारक प्रभावों के लिए यह सर्वाधिक सही स्पष्टीकरण है, जो हमारे इतिहास की बहुत लंबी श्रृंखला में आज भी स्पष्ट है।

धार्मिक गतिविधियों के माध्यम से प्राप्त की गई मानसिक ऊर्जा को यदि एकल कुंडलिनी-छवि पर केंद्रित (ध्यान-योग आदि के माध्यम से) किया जाता है, तो यह हमारे जीवन के हर पहलू में चमत्कार पैदा करती है, जबकि यदि मास्टर / ईश्वर / प्रिय आदि (कुंडलिनी) की अकेली मानसिक छवि पर इसे केंद्रित नहीं किया जाता है, तो यह इसी प्रकार से परेशानियाँ भी पैदा कर सकती है।

आत्मज्ञान (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक), क्या यह स्वयं में एक मुक्ति है, या मुक्ति की ओर ले जाता है?

आश्चर्यजनक रूप से, आत्मज्ञान स्वयं में मुक्ति के रूप में नहीं (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक) है। इसके बजाय यह उस जीवनशैली को अपनाने में मदद करता है, जो मुक्ति की ओर ले जाती है। प्रेमयोगी वज्र ने इस वास्तविकता को अपने तार्किक, वैज्ञानिक और अनुभवी तथ्यों की मदद से साबित कर दिया है, क्योंकि उन्हें बहुत पहले एक झलक रूप में आत्मज्ञान का अनुभव हुआ था। उन्होंने ज्ञान के बारे में प्रचलित विभिन्न मिथकों को भी भंग कर दिया है। यदि अद्वैत का सही ढंग से और कठोर रूप से अभ्यास किया जाता है, तो आत्मज्ञान या कुंडलिनी-जागृति के बिना भी मुक्ति संभव दिखाई देती है। जब अद्वैतभावना अपने शीर्ष स्तर तक पहुंच जाती है, तो इसे ही आत्मज्ञान कहा जाता है (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक)। यह अचानक से असाधारण चमक के साथ हो सकता है, जैसे प्रेमयोगी वज्र ने वेबपृष्ठ 'गृह-1' पर वर्णित किया है, या ऐसी चमक वहां नहीं भी हो सकती है। अगर केवल आत्मज्ञान ही मुक्ति के लिए ज़िम्मेदार होता, तो हर प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक व्यवस्था ने नियमित रूप से एक मंत्र का जप करने पर भी हर जगह मुक्ति का दावा नहीं किया होता। दूसरी तरफ, अगर आत्मज्ञान या कुंडलिनी-जागृति के बाद भी अद्वैतयुक्त जीवनशैली को बलपूर्वक इनकार किया जाता है (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक), तो उससे किसी की मुक्ति संदिग्ध दिखाई देती है। वास्तविक अद्वैत-प्रेमियों को कोई भी आध्यात्मिक उपलब्धि नहीं चाहिए होती है, क्योंकि वे बहुत खुश होते हैं, और अद्वैत-दृष्टिकोण के साथ अपने व्यवसाय से पूरी तरह से संतुष्ट होते हैं। यह हमारे दैनिक जीवन में शविद (शरीरविज्ञान दर्शन) और शरीरमंडल (शरीर-ब्रह्मांड / सूक्ष्म ब्रह्मांड) के महत्त्व को दर्शाता है, जिनसे समय के हर पल में अद्वैतभाव को मजबूत किया जा सके।

यौनयोग (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक), यह कितना असली है?

प्रेमयोगी वज्र का कहना है कि यौन योग / तंत्र योग (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक) उतना ही वास्तविक है, जितना कि यौन प्रजनन स्वयं ही है, और यह सबसे प्रभावी योग है। प्रेमयोगी वज्र ने अप्रत्यक्ष / दक्षिणपंथी तांत्रिक, और समवाही यौनयोग के माध्यम से आत्मज्ञान की झलक प्राप्त की है, जबकि उन्हें प्रत्यक्ष / वामपंथी तांत्रिक, और विषमवाही यौनयोग के माध्यम से कुंडलिनी-जागरण हो गया है। यह प्रत्यक्ष / पूर्ण, या अप्रत्यक्ष / सांकेतिक हो सकता है। यह समवाही (कुंडलिनी-छवि और कुंडलिनी-उत्थापक, दोनों रूपों में एक ही तंत्र-प्रेमिका है), या विषमवाही (कुंडलिनी छवि के रूप में गुरु / देवता / अन्य प्रेमी आदि, और कुंडलिनी उत्थापक के रूप में तंत्र-प्रेमिका, दोनों अलग-2 हैं)। वह आगे कहता है कि यौन योग की मदद लिए बिना सांसारिक व्यक्ति द्वारा आध्यात्मिक सफलता प्राप्त करना सिर्फ एक दुःस्वप्न की तरह है, या कहता है कि यह लगभग असंभव है। वह यह भी कहते हैं कि यौनयोग की सफलता के लिए, एक तांत्रिक जोड़े को पूरी तरह से एक-दूसरे के प्रति अनासक्त व अद्वैतभाव-युक्त रहना चाहिए, और प्रत्येक ध्यान कुंडलिनी पर केंद्रित होना चाहिए। वह अनुभव-रूप से स्पष्ट करता है कि यौनयोग कुंडलिनी-विकास के अंतिम चरण में विशेष रूप से सहायक है, जो कि जागृति के लिए चमकती कुंडलिनी को अंतिम दौड़ में भागने के लिए विशाल व आवश्यक गति (escape velocity) प्रदान करता है। उन्होंने इस ई-बुक में यौनयोग तकनीक को काफी सरल, सभ्य व विस्तृत तरीके से समझाया है, जिसमें इसके लिए सहायक कारक और इससे संभावित जोखिम भी शामिल हैं। इससे सम्बंधित कुछ वास्तविक-समय के अनुभवी विवरण 'एक योगी की प्रेम-कहानी' (Love story of a Yogi) पर भी मिल सकते हैं। वह कहता है कि लैंगिक-सम्बन्ध सबसे अजीब है। वह ओशो की इस उक्ति का भी समर्थन करता है कि इसका अध्ययन बहुत कम किया गया है। अगर यह तुरंत कुंडलिनी को सक्रिय कर सकता है, तो यह इसे एकदम से धो भी सकता है। यौनसम्बन्ध एक रूपांतरक-रसायन (alchemy) की तरह काम करता है, जो एक व्यक्तित्व को विभिन्न रूपों / व्यक्तित्वों / अहंकार-रूपों में प्रभावी रूप से बदल देता है, खासकर यदि इसका एक सिद्ध तांत्रिक तरीके से अभ्यास किया जाता है। वह लक्षित / केंद्रित यौन-रूपांतरण नियमित रूप से होने दिया जाने पर, धीरे-धीरे, समय के साथ जागृति के पूर्ण परिवर्तन में समाप्त हो जाता है। इस ई-बुक में, आचार्य रजनीश / ओशो के उस तांत्रिक बयान(पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक) का समर्थन किया जाता है कि यौन-आकर्षण मुख्य रूप से समाधि-स्थिति

(कुंडलिनी-जागृति) को प्राप्त करने के लिए ही उत्पन्न होता है। उनकी तथाकथित विवादास्पद पुस्तक, "सम्भोग से समाधि तक" (बाह्य वेबसाईट- मुफ्त पुस्तक डाऊनलोड) में उनके तांत्रिक बयान कि समाधि / कुंडलिनी-जागृति की झलक यौन योग के माध्यम से आसानी से अनुभव की जा सकती है, जिसे फिर नियमित रूप से किए जाने वाले पूर्ण-कुण्डलिनीयोग के रूप में जारी रखा जा सकता है, उसे भी प्रेमयोगी वज्र के द्वारा अनुभव-रूप से सत्यापित किया जाता है। तांत्रिक यौन-आकर्षण चाहे प्रत्यक्ष हो या परोक्ष, दोनों ही यौगिक-रूपांतरक की तरह काम करते हैं। इसे इस वेबसाइट के "एक योगी की प्रेम कहानी" से संबंधित विशिष्ट / समापन वेब पेज पर वास्तविक-समय, मूल, व्यावहारिक, तांत्रिक और अनुभवपूर्ण रूप में भी पढ़ा जा सकता है।

वैज्ञानिक रूप से पतंजलि-योग एक अति घनीभूत प्रेम-प्रकरण ही है

प्रेमयोगी वज्र कहते हैं कि हाँ, यह सच है। पतंजलि योग कुछ भी खास नहीं है, बल्कि एक गहन प्रेम-संबंध का व्यावहारीकृत रूप ही है।

एक गहरे प्रेम संबंध अर्थात एक मजबूत यिन-यांग आकर्षण में, विपरीतलैंगिक साथी पर ध्यान स्वतः ही केंद्रित हो जाता है, और मानसिक एकाग्रता तेजी से विकसित होती हुई सम्प्रज्ञात समाधि विकसित हो जाती है (बाह्य वेबसाईट- भारतकोष)। जानबूझकर या सहज ही भौतिकसम्बन्ध के टूटने के साथ, मानसिक समाधि अपने चरम पर पहुंच जाती है, और जल्द ही असम्प्रज्ञात समाधि में परिवर्तित हो जाती है, जो किसी भी समय सहज कुण्डलिनीजागरण या आत्मज्ञान का कारण बन सकती है। इस तरह, वह विकसित व मजबूत यिन-यांग आकर्षण, जब वर्षों तक बना कर रखा जाता है, तो अपनी पारंपरिक जागृति की आवश्यकता के बिना ही, वर्षों तक वह कुंडलिनी स्वयं ही प्रचंड रूप से सक्रिय (अर्थात प्रेमी या प्रेमिका/कंसोर्ट की मानसिक छवि हमेशा मस्तिष्क के अंदर बनी रहती है) बनी रहती है। यह कृत्रिम ध्यान की तुलना में प्राकृतिक / सहज यिन-यांग आकर्षण से उत्पन्न सहज ध्यान की विशिष्टता है। हालांकि, इस तरह के प्राकृतिक / यौनयोग मार्ग के साथ एक अच्छी तरह से सक्षम तांत्रिक गुरु की आवश्यकता होती है, जो यौनयोग / तंत्र-मार्ग से उत्पन्न होने वाली मानसिक ऊर्जा की विशाल मात्रा को संभावित बर्बादी से रोकने के लिए, और अनुचित कार्यों / विचारों के माध्यम से उसके

दुरुपयोग को रोकने के लिए प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में कदम उठाते हैं; जैसा अवसर प्रेमयोगी वज्र के लिए उपलब्ध हुआ था।

इस ई-पुस्तक में प्रेमयोगी वज्र द्वारा प्रदान किए गए अनुभवी विवरण को पढ़ने पर आप स्वयं विश्वास करेंगे। यह सभी कुछ लगातार बन रही मानसिक छवि / चित्र का ही चमत्कार है। इसी तरह, यदि कोई भी, प्राथमिक रूप से व्यक्तित्वमयी छवि लंबे समय से बार-बार किसी के दिमाग में घूमती है, तो यह एक संकेत है कि उसके पास मानसिक कुंडलिनीछवि सक्रिय है, या उसके पिछले जन्म में वह जागृत हुई है, और वह आसानी से उसे फिर से जगा सकता है, जिसके लिए उसे कुंडलिनीयोग अभ्यास के साथ-२ अद्वैतमयी जीवनशैली अपनानी होगी। यह सब इस तांत्रिक वेबसाइट के "एक योगी की प्रेम कहानी" के निम्नलिखित वेब पृष्ठों पर एक बहुत ही अनुभवी तरीके से समझाया गया है।

कुंडलिनी-जागरण के लिए केवलमात्र द्वार के रूप में यौनयोग

प्रेमयोगी वज्र कहते हैं कि हां, यह बात सांसारिक जीवन के मामले में बिल्कुल सही है। कोई भी, सामान्य सांसारिक जीवन में, यौनयोग की कम या अधिक सहायता के बिना कुंडलिनी-जागृति को प्राप्त नहीं कर सकता है। हालांकि इसमें सफल होने के लिए अत्यधिक अभ्यास; धैर्य विशेषतः इस मामले में कि सामाजिकता के साथ यौनसम्बन्ध एक ही साथी तक लम्बे समय तक / जीवनभर / जब तक कि विशेष आध्यात्मिक सफलता प्राप्त नहीं हो जाती, तब तक जारी रखने; लम्बे समय तक निरंतर जारी अद्वैतमयी तांत्रिक दृष्टिकोण के अभ्यास (यद्यपि यह सभी कुछ रुचिकर/रोमांचक/क्रीड़ाप्रद/आनंददायक होता है), अतिरिक्त समय, तनाव-रहित मन/शरीर, दृढ़ निश्चय, एकांत, खुले-डुले परिवेश, व्यवधान-रहित स्थान/कक्ष, भद्र व स्वच्छ/स्वास्थ्यप्रद जीवनशैली, प्रेमपूर्ण दृष्टिकोण (मुख्यतया दोनों तांत्रिक साथियों के बीच में), परस्पर सहयोग, आत्मनियंत्रण, अनासक्तिमय दृष्टिकोण (मुख्यतया दोनों के बीच में परस्पर), कुण्डलिनी पर केन्द्रित ध्यान रखने, सामाजिक रूप से अच्छे व्यवहार/उत्तरदायित्व, प्रकृति-प्रेम, शान्ति; जोड़े के द्वारा मनोरंजक भ्रमण (विशेषतया सुन्दर स्थानों पर), अद्वैतमयी दृष्टिकोण, कुण्डलिनीयोग अभ्यास (न्यूनतम एक घंटे की अकेली योगाभ्यास बैठक व दिन में दो बैठकें), समर्पण, विशवास, चौकसी, सावधानी/बचाव के तरीकों, हिम्मत, निरंतरता और दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। दोनों

भागीदारों के पास अलग-अलग प्रकार की हल्की या अधिकतम रूप से मध्यम रणनीतियों के माध्यम से एक दूसरे को सही योगिक जीवन शैली में लाने का बराबर अधिकार है, यदि कोई भी किसी भी प्रकार से गड़बड़ कर रहा हो। यद्यपि व्यावहारिक रूप से महिला साथी इस संबंध में थोड़ी बड़ी भूमिका निभाती है। अगर कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष यौनयोग की सहायता के बिना ही अपनी कुंडलिनी को जागृत करना चाहता है, तो उसे निश्चित रूप से सांसारिक जीवन, कम या ज्यादा मात्रा में छोड़ना ही पड़ता है। प्रेमयोगी वज्र ने इसे इसी वेबसाइट और उपरोक्त ई-पुस्तक में अनुभवी रूप से समझाया है।

पसंद-नापसंद एक अलग बात है, सत्य एक अलग बात है

प्रेमयोगी वज्र का कहना है कि पसंद और सच्चाई को हमेशा बराबर और समानांतर नहीं बनाया जा सकता है। किसी भी योग तकनीक (यौनयोग सहित) को किसी के द्वारा नापसंद किया जा सकता है, लेकिन वह उस तकनीक के पीछे छुपे हुए वैज्ञानिक, अनुभवी और तार्किक सत्य से इंकार नहीं कर सकता है। यदि कोई व्यक्ति पूरी निष्ठा से, पूर्णता से और पूर्ण विश्वास के साथ वास्तविकता को स्वीकार करता है, तो वह निश्चित रूप से उसके लाभ को स्वचालित रूप से प्राप्त कर लेता है, भले ही वह उस पर नहीं चल सके, बशर्ते कि वह मानवता-सीमा के भीतर पूरी तरह से बना रहे। प्रेमयोगी वज्र के साथ भी यही हुआ था। वह विभिन्न कारणों से कई सालों तक पूरी तरह से तंत्रानुसार कार्य नहीं कर सका, लेकिन उसे तांत्रिक सिद्धांत पर पूर्ण विश्वास था। नतीजतन, अपने विस्फोटक कुण्डलिनीजागरण के रूप में उसे तब तांत्रिक उपलब्धि प्राप्त हुई, जब उसे अपने जीवन में, विशेषतः यौनजीवन में तांत्रिक सिद्धांतों को लागू करने का, बहुत कम समय के लिए एक बहुत अच्छा अवसर प्राप्त हुआ।

अद्वैत-तंत्र एक सबसे अन्यथा समझा गया और सबसे अन्यथा प्रयोग में लाया गया दर्शन है।

धार्मिक चरमपंथी इसके सबसे अच्छे उदाहरण हैं। आम सोच के खिलाफ, वास्तविक तांत्रिक पारंपरिक ऋषियों से अलग नहीं हैं, परन्तु अपेक्षाकृत रूप से तंत्रयोगी अन्दर से अधिक परिष्कृत हैं, हालांकि बाहरी रूप से वे अधिक व्यावहारिक दिखाई दे सकते हैं। बहुत से लोग खुद को तांत्रिक के रूप में मानने की कोशिश करते हैं, हालांकि वे वास्तव में तांत्रिक नहीं होते हैं, क्योंकि केवलमात्र तांत्रिक ही सर्वोच्च कोटि

के वास्तविक ब्रम्हचारी होते हैं (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक)। अधिकांश लोग तांत्रिक शैली को नकारात्मकता, घृणा, विरूपण, भय और संदेह के साथ देखते हैं; और इस प्रकार से खुद को ही धोखा दे रहे होते हैं। इस तरह, धार्मिक और अमानवीय चरमपंथियों को देख कर लगता है कि विभिन्न अमानवीय प्रथाओं में तांत्रिक शक्ति का दुरुपयोग करने के लिए, उनके रूप में तांत्रिकों को पथभ्रष्ट किया गया है। यद्यपि तंत्र कुंडलिनी जगाने के लिए एक उत्पथ/अनियंत्रित पथ/असामाजिक पथ/विचित्र पथ प्रतीत होता है, लेकिन साथ ही यह समाजवाद और मानवता पर भी बहुत बल देता है। केवल तंत्र के साथ ही प्राचीन भारत में प्रचलित महिला के सम्मान को पूरी तरह से वापस लाया जा सकता है।

प्रेमयोगी वज्र आगे कहते हैं

त्रायते यत् तनात् तत् तंत्रम्। जो हमें अपने शरीर से मुक्त करने में मदद करता है, वह तंत्र है (बाह्य वेबसाईट- shabarmantraonline.blogspot)। तंत्र का दूसरा अर्थ है, "त्रायते यस्मात् तनं तत् तन्त्रं"। इसका मतलब है कि स्वस्थ जीवनशैली के साथ स्वस्थ शरीर का निर्माण आत्मजागृति के लिए अत्यावश्यक है। तंत्र अध्यात्मविदों का विज्ञान है। तंत्र राजाओं का आध्यात्मिक अभ्यास है। तंत्र एक सबसे शक्तिशाली मुक्तिकारी यंत्र/मशीन है। तंत्र में हर मानवीय कार्य और भावना अनुमत है, हालांकि एक अनासक्त / अद्वैत रवैये के साथ। मानवीय सामाजिक कार्य और प्रथाएं, जो बंधन उत्पन्न करती हैं, वे ही मुक्ति उत्पन्न करने के लिए तंत्र में कार्यरत की जाती हैं; जैसे कि अग्नि का दुरुपयोग भी किया जा रहा है, और साथ ही साथ हमारी सभ्यता की शुरुआत के बाद से ही इसका सदुपयोग भी किया जा रहा है। मैं कई लोगों के मत से आगे जा रहा हूं। वे कहते हैं कि केवल शुद्ध सनसनी/मानसिकता महसूस करनी चाहिए, भावना नहीं; लेकिन मैं कहता हूं कि साथ ही भावनात्मक सनसनी भी महसूस करनी चाहिए, हालांकि अद्वैत के साथ ही; जैसे कि देहपुरुष भी महसूस करते हैं। इस तरह से भावनाएँ शुद्ध हो जाती है, जो हमें अचानक ही एक अद्भुत आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाती हैं। तंत्र के शब्दों में, कोई भी मानवीय गतिविधियां खराब नहीं होती हैं, बल्कि यह रवैया/दृष्टिकोण है, जो खराब या अच्छा हो सकता है। द्वैतपूर्ण रवैये को बुरा माना जाता है, जबकि अद्वैतपूर्ण रवैये को अच्छा माना जाता है। तंत्र हमें सिखाता है कि कैसे जीवित रहते हुए ही जीवनमुक्त बन कर रहा जाए।

वैबपृष्ठ- गृह-5 (home-5)- तंत्र, अद्वैत व गुरु का अनुभूत विवरण

प्राचीन भारतीय समाज के पारिवारिक जीवन में महिला की भूमिका

प्राचीन भारतीय समाज में, पुरुष एक भौतिक देखभाल करने वाला और महिला एक आध्यात्मिक देखभाल करने वाली होती थी। महिला परिवार की कक्षा का केंद्र होता था। वह कुंडलिनी प्रक्रिया और यौन-नैतिकीकृत तांत्रिक जीवनशैली में आध्यात्मिक रूप से उत्थान प्रदान करने के मामले में अपनी भूमिका के बारे में अच्छी तरह से जागरूक होती थी। उसे तांत्रिक मास्टर के रूप में माना जाता था, जैसे कि वह इस संबंध में अधिकांश जिम्मेदारियाँ संभाल रही होती थी।

यह एक आम अविश्वास है कि महिलाओं का तंत्र में शोषण होता है। शायद यह तंत्र या धर्म के नाम पर धार्मिक चरमपंथियों की दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों के माध्यम से उभरा (पढ़ें ईपुस्तक, कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है)। वास्तव में, तांत्रिकयोगी योगियों की शीर्ष श्रेणी में आते हैं। किसी भी असली योगी ने किसी का भी शोषण किया हो, ऐसा हम कहीं भी एक उदाहरण भी नहीं देखते हैं। असल में तांत्रिक अपनी पत्नी के प्रति बहुत आभारी हो जाता है, क्योंकि वह उसकी कुंडलिनी को जगाने में बहुत मदद करती है। तो बदले में, वह उसके सांसारिक और आध्यात्मिक विकास के लिए भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करता है।

अद्वैत और गुरु को समझना

प्रेमयोगी वज्र के अनुसार, वास्तविक अद्वैत केवल द्वैताद्वैत के साथ ही मौजूद (बाह्य वेबसाईट- गायत्रीपरिवार- literature.awgp.org) है। “अद्वैत” शब्द के साथ “अ” उपसर्ग कैसे लगाया जा सकता है यदि यह शब्द ही उपस्थित न हो। इसका मतलब है कि द्वैताद्वैत / विशिष्टाद्वैत (बाह्य वेबसाईट- भारतकोष) ही एकमात्र सच्चा और वास्तविक अद्वैत है। जो लोग द्वैतमुक्त जीवन जीते हैं, वे वास्तविक में अद्वैत का अनुभव नहीं कर सकते हैं। जब द्वैत का पक्ष लेने की स्थितियां विद्यमान होती हैं; केवल तभी शविद, पुराण आदि के माध्यम से, या किसी अन्य दार्शनिक माध्यमों से अद्वैत को लागू करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होते हैं। यह उसी तांत्रिक सिद्धांत को सत्यापित करता है जिसके

अनुसार बुरी चीजें हमेशा खराब नहीं होती हैं (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक)। तांत्रिक, तांत्रिक पंचमकारों में शराब (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक), मांस (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक), मैथुन (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक) आदि का उपयोग करते हैं, अपनी कुंडलिनी को जागृत करने के लिए। दरअसल, द्वैत पर आरोपित अद्वैत, जो कि अद्वैतपूर्ण रवैये के साथ लगातार काम करने से बना होता है, वह किसी की आत्म-जागृति के लिए तेजी से बढ़ता है। इस जीवनशैली को कर्मयोग भी कहा जाता है (बाह्य वेबसाईट- विकिपीडिया)। निरंतर की कामकाजी जीवनशैली और निरंतर का अद्वैतपूर्ण रवैया, दोनों एक साथ चलने के लिए ऊर्जा की निरंतर आपूर्ति की मांग करते हैं। पंचमकारों का न्यायिक और समझदार उपयोग उस मानसिक ऊर्जा का सबसे अच्छा स्रोत (बाह्य वेबसाईट- adhyashakti.com) है। पञ्चमकारों का उपयोग करके, एक प्रकार से कर्मयोग को तंत्र में बदल दिया जाता है। पञ्चमकारों का उपयोग करने वाले व्यक्तियों की संगति भी वैसे ही प्रभावी होती है, जैसे कि अप्रत्यक्ष तरीके से पंचमकारों का उपयोग करना। इस प्रकार से तांत्रिक लाभों को उनके प्रत्यक्ष उपयोग से भी अधिक मजबूती से प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि उस मामले में अपने आप के द्वारा पंचमकार को उपयोग करने का भी कोई अहंकार नहीं होता है। यह आध्यात्मिक सफलता के लिए पारस्परिक सहकारी समाज के महत्व पर भी प्रकाश डालता है। यद्यपि एक अनुभवी आध्यात्मिक गुरु / गुरु की संगति / मजबूत कुण्डलिनी को इस तरह की तांत्रिक प्रथाओं के साथ अवश्य ही विद्यमान होना चाहिए, क्योंकि यदि इन प्रथाओं से कोई स्वर्ग में ले जाया जा सकता है, तो ये जल्द ही नरक में भी ले जा सकती हैं, मुख्य रूप से अगर इन्हें अनुचित रूप से लागू किया जाता है। केवल औपचारिकता के लिए गुरु बनाना तंत्र में काम नहीं करता है, बल्कि गुरु को स्वाभाविक रूप से या ध्यान के माध्यम से किसी के दिमाग में मजबूती से और स्थायी रूप से तैनात किया जाना चाहिए।

यौन तंत्र "सभी कुछ या कुछ नहीं" के रूप में कार्य करता है। इसका मतलब है कि अगर यह ठीक से किया जाता है, तो आध्यात्मिक रूप से सब कुछ हासिल किया जा सकता है, अन्यथा एक बड़ा शून्य ही हासिल होता है। तांत्रिक इन पंचमकारिक / सांसारिक प्रथाओं के साथ शुरुआत में द्वैताद्वैत की दौड़ में शामिल हो जाते हैं, जिससे वे जल्द ही अद्वैत को बढ़ाते हैं, जो पहले के मुकाबले ज्यादा मजबूत होता है, और आनुपातिक आनंद के साथ, किसी भी अनुकूल / व्यावहारिक अद्वैत-दर्शन (शविद आदि) के

माध्यम से पर्याप्त मजबूत बने उनके अद्वैतमयी तांत्रिक दृष्टिकोण की सहायता से। इसका मतलब यह भी है कि वास्तविक आध्यात्मिकता वह है, जो भौतिक संसार को भी साथ-2 ले कर चलती है, हालांकि एक अनासक्तिमय रवैये के साथ। आम सोच के मुकाबले, असली अद्वैत पूरी तरह से सांसारिक और प्रगतिशील होता है। असल में, एक गुरु, लगातार रूप से एक तांत्रिक के दिमाग में बने रहने के लिए इन पांच मकारों से प्राप्त द्वैताद्वैत की शक्तिशाली मानसिक ऊर्जा को अवशोषित करता रहता है, और फिर एक कठिन व तेज़ कुंडलिनी (उस गुरु की मानसिक छवि) में परिवर्तित हो जाता है, जो बाद में कुण्डलिनी-जागरण के रूप में जागृत हो जाती है। अन्यथा सांसारिक और द्वैतमयी क्षेत्रों में ऊर्जा बर्बाद हो जाती है, जिससे एक गंभीर आध्यात्मिक चोट लगती है।

असल में, गुरु का मतलब है कि एक व्यक्ति जिसका व्यवहार मानवतापूर्ण, अहंकारहीन, मुस्कुराते हुए / व्यावहारिक / स्पष्ट / समावेशी / साधारण-सरल, बिना तनाव वाला / कम तनाव वाला, अद्वैतपूर्ण / अनासक्तिपूर्ण, लोकप्रसिद्ध, मित्रवत, सामाजिक, वास्तविक रूप से आध्यात्मिक (अद्वैतपूर्ण और अनासक्तिपूर्ण), अच्छा लगने वाला और अपने दिमाग में अच्छी तरह से बैठने वाला हो। इस तरह, अपने पितामह से बेहतर किसी का गुरु कौन हो सकता है, अधिमानतः साथ में यदि वह वास्तविक रूप से आध्यात्मिक / अद्वैतपूर्ण / अनासक्त भी हो। ये सभी उपरोक्त गुण प्रेमयोगी वज्र के गुरु में मौजूद थे। ध्यान या समाधि या अन्य शुभ आध्यात्मिक साधना से संपन्न गुरु की संगति के साथ, व्यक्ति के यौन-आत्मनियंत्रण में भी सुधार हो जाता है, क्योंकि रोमांस वास्तव में समाधि (कुंडलिनी-जागृति) स्थिति को प्राप्त करने के लिए ही तो किया जाता है। कुंडलिनी योग के अभ्यास के माध्यम से किसी व्यक्ति के लिए अपने गुरु पर ध्यान देना आसान होता है, क्योंकि भगवान या देवता या किसी और चीज के चित्र पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय सक्रिय रूप से साथ रह रहे गुरु पर ध्यान केन्द्रित करना शिष्य के लिए आसान होता है। गुरु शिष्य की तरह ही साक्षात जीवन जी रहे होते हैं, अतः उनका चित्र अनेक प्रकार के सांसारिक आयामों के साथ शिष्य के मन में दृढ़तापूर्वक संलग्न हो जाता है। इसके अलावा, शिष्य के उस समुदाय / परिवार के लोग भी समान समुदाय के लोगों के बीच में चलने वाली मानसिक संलग्नन की अंतःक्रिया के माध्यम से शिष्य के मस्तिष्क के अंदर अपने उन करीबी कार्यक्षेत्र के गुरु की छवि को मजबूत करने में अप्रत्यक्ष रूप से मदद करते हैं, जो उस गुरु की प्रेमपूर्ण संगति में रह रहे

होते हैं। यह मामला तब नहीं नहीं बन पाता है, या यह कुछ हद तक ही बनता है, यदि एक देवता / किसी अन्य चीज को कुंडलिनी छवि के रूप में विकसित किया गया हो। उस हालत में ध्यान केंद्रित करने की पूरी जिम्मेदारी योगी पर आ जाती है, जिससे उसे अपेक्षाकृत रूप से अधिक प्रयास करने पड़ते हैं, समान यौगिक सफलता प्राप्त करने के लिए।

आमिष के, मुख्य रूप से मछली के भक्षण के दौरान, उनमें स्थित अद्वैतशील देहपुरुषों के रूप में कुंडलिनी को तांत्रिक द्वारा देखा जाता है। मद्य के प्रभाव में होने के दौरान, कुंडलिनी को आराम करते हुए, हालांकि अद्वैतमयी और आनंददायक देहपुरुषों के रूप में अपने शरीर के अंदर तांत्रिक के द्वारा देखा जाता है। इसी प्रकार, यौन संबंध रखने के दौरान, अद्वैतमई देहपुरुष के रूप में कुंडलिनी को अपने शरीर के विभिन्न चक्रों और मुख्य रूप से कामुक जननांग भागों में तांत्रिक द्वारा देखा जाता है। ये विधियां, परिणामस्वरूप अद्वैतपूर्ण रवैये के साथ मानसिक तरंगों के माध्यम से उत्पन्न होने वाली मानसिक ऊर्जा की विशाल मात्रा को कुंडलिनी के विकास के लिए प्रसारित करती हैं, और शरीर के ऊर्जावान तरल पदार्थों की बर्बादी को भी रोकती हैं, जिनके लिए बहुत सारी मानसिक ऊर्जा की जरूरत होती है।

अद्वैत एक सबसे व्यावहारिक ध्यान-पद्धति है। इसका दिन में 24 घंटे के लिए अभ्यास किया जा सकता है। हालांकि, कुंडलिनीयोग के अभ्यास को कम से कम एक घंटे के लिए और दिन में दो बार, कुंडलिनी को अतिरिक्त बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है।

कुछ लोग वास्तविक समय के अद्वैत-निर्माता हैं (वे वास्तविक समय पर अद्वैत के साथ अपने सभी मानसिक रूपों का अनुभव करते हैं), और कुछ लोग वास्तविक जीवन-प्रक्रिया के बाद, समय-समय पर अद्वैत-निर्माता बनते रहते हैं (वे बाद में अपने आराम के समय के दौरान, अपनी वर्तमान मानसिक संरचनाओं में अद्वैत को तब दृढ़ करते हैं, जब वे स्मृति-भण्डार से बाहर घूम रही होती हैं)। ये दोनों प्रकार की प्रथाएं प्रभावी हैं, हालांकि पूर्व प्रकार की प्रथा से तेजी से आध्यात्मिक-प्रगति होती है, क्योंकि उसमें द्वैत को अपना फन उठाने का कोई मौका ही नहीं मिलता। पूर्व-प्रकार का तरीका कम

व्यावहारिक प्रतीत होता है, लेकिन वह बाद के प्रकार के तरीके की तुलना में अधिक आध्यात्मिक होता है।

एक भौतिक संतुलक / बफर के रूप में अद्वैत

अद्वैतभाव एक संतुलकभाव है, जो अपने अन्दर सभी मानसिक चीजों को सबसे उपयुक्त अनुपात में आत्मसात करता है, और किसी की भी अति नहीं होने देता।

सामाजिक समरसता / सोशल-हार्मनी में वास्तविक अद्वैत

हिंदी में हार्मनी (सद्भाव) का अर्थ है, "हार मानी"। प्रेमयोगी वज्र के अनुसार रंग, जाति, जन्म, उत्पत्ति आदि के आधार पर लोगों के बीच में कोई सामाजिक भेदभाव नहीं होना चाहिए, सर्वाधिक व्यावहारिक और प्रभावी तरीके से अद्वैत को लागू करने के लिए। हालांकि, प्राकृतिक मतभेदों को स्वीकार करने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन मतभेदों के आधार पर किसी के दिमाग में हीनता पैदा करना एक बुरी बात है। जैसे अद्वैतभाव से सभी को एकसमान समझने का गुण उत्पन्न होता है, उसी प्रकार से सभी को एकसमान समझने से अद्वैतभाव की उत्पत्ति होती है। इसी तरह, किसी भी आध्यात्मिक शैली से नफरत नहीं की जानी चाहिए (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक)। हर किसी को अलग-अलग चरणों से गुजरना पड़ता है, इसलिए किसी विशेष आध्यात्मिक चरण में स्थित किसी व्यक्ति से नफरत करना अच्छी तरह से काम नहीं करता है। उदाहरण के लिए, अपनी यात्रा की शुरुआत में, पूरी तरह से भौतिकवादी मानसिक-साम्राज्य के चरण में रचा-पचा एक व्यक्ति अद्वैत-चरण में प्रविष्ट होता है। उसके बाद वह कुंडलिनीयोग-चरण में प्रगति करता है। अंत में, वह सीधे ही कुंडलिनीजागृति तक पहुंच सकता है, या तांत्रिकयोग के एक छोटे चरण से भी गुजर सकता है। फिर आत्मज्ञान का अंतिम / सुपर फाइनल चरण है। इसलिए अलग-अलग चरणों में स्थित लोगों को स्वस्थ समाज को बनाए रखने के लिए एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना चाहिए, क्योंकि स्वस्थ समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से / अदृश्य रूप से सहयोग करता है। जो लोग सीधे शीर्ष चरणों तक पहुंचते देखे जाते हैं, वे वास्तव में अपने पिछले जन्मों में निचले चरणों को प्राप्त होए हुए होते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी को

भी एक मानव-छिपकली / ह्यूमन सैलामैंडर की तरह, आस-पास की स्थिति के अनुसार अपना रंग बदलना चाहिए, अर्थात मानवीय तरीके से तदनुसार हर जगह समायोजित हो जाना चाहिए।

कुंडलिनी और अद्वैत

येदोनों एक और एक ही चीज़ हैं। अद्वैत कुंडलिनी को पोषण देता है, और उसे अपने दिमाग में उज्ज्वल रूप से व्यक्त करता है। इसी तरह, कुंडलिनी-योग अद्वैत का उत्पादन करने में मदद करता है। एक अनुभवी तांत्रिक पहले तो लंबे समय तक किसी भी उपयुक्त सांसारिक साधन के साथ अपने अद्वैतमयी दृष्टिकोण को समृद्ध करता है, और फिर कुंडलिनी को ऊपर की ओर विशाल धक्का देने के लिए, श्मशान (अंतिम संस्कार स्थान) आदि किसी भी शांतिपूर्ण और निर्बाध स्थान पर कुंडलिनीयोग अभ्यास का आयोजन करता है। अंत में, वह यौनयोग का सहयोग भी अपनी उग्र कुंडलिनी को अंतिम भागने का वेग / एस्केप विलोसिटी प्रदान करने के लिए लेता है, और इस प्रकार उसे जागृत करता है। यह एक वास्तविक समय के अनुभवपूर्ण विस्तार में भी समझाया गया है, जो इस तांत्रिक वेबसाइट पर उपलब्ध है।

क्या ईश्वर अधिक श्रेष्ठ हैं या प्रकृति?

ये दोनों एक दूसरे के बराबर हैं। वैसे ही, जैसे शिव (भगवान) और पार्वती (प्रकृति) एक दूसरे के समान हैं। असली कला अर्धनारीश्वर (आधे पुरुषपन और आधे महिलापन वाला देवता) या शिव-शक्ति (उस शांतियुक्त और आनंदमय शिव पर नृत्य करने वाली देवी काली, जो नीचे लेटा है) या उस नटराज (नृत्यलीन अद्वैतमयी शिव) बनने में असली कला है, जो भीतर से शांत और आनंदमय भगवान है, जबकि बाहर से नृत्य करती प्रकृति / सृजनशक्ति / सृष्टि / देवी के रूप में है।

मुक्ति के लिए आत्मज्ञान आवश्यक भी नहीं हो सकता

ये शब्द अजीब लगते हैं, लेकिन यह बिल्कुल सही है। प्रेमयोगी वज्र ने अपने स्वयं के प्रत्यक्ष अनुभवों के साथ इसे समझाया है। असल में, यह अद्वैत है, जो अधिक महत्वपूर्ण है (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक)। प्रेमयोगी वज्र के द्वारा उसके अपने जीवन में द्वैतपूर्ण व बाह्यवादी / भौतिकवादी दृष्टिकोण को

अपनाए जाने के बाद, वह पूरी तरह से अपने प्रभाव के साथ अपने ज्ञान-अनुभव को भूल गए थे, क्योंकि वे जानबूझकर एक सहज व प्राकृतिक प्रवाह के खिलाफ जा रहे थे। हालांकि, वह फिर से अद्वैत और छुटपुट योगसाधना का अभ्यास करने के कई सालों बाद उस ज्ञान के किंचित निशान को पुनः याद करने में सफल हो गया था।

ज्ञान का अनुभव भी किसी भी अन्य, दिमाग से किए गए सांसारिक अनुभव की तरह समय के साथ दूर हो जाता है। प्रेमयोगी वज्र में, उस ज्ञान के अनुभव को लगभग पहले तीन वर्षों के लिए प्रकृति के द्वारा पूरी तरह से भड़का दिया गया था, और फिर वह धीरे-धीरे फीका हुआ था। फिर अचानक और सहजता से उन्होंने दुनिया को कुछ साबित करने के लिए द्वैत से भरी जीवनशैली अपनाई, जिसके परिणामस्वरूप उनका आत्मज्ञान-अनुभव पूरा फीका हो गया, उन्हें केवल यही ज्ञान रहा कि एक बार उनके पास आत्मज्ञान-अनुभव था। फिर उन्होंने फिर से शविद (शरीरविज्ञान दर्शन / बॉडी साइंस फिलोसोफी) के माध्यम से अद्वैतपूर्ण जीवन शैली को अपनाया, जैसे कि वह उनकी एक जीवनधारण-वृत्ति हो, जिसने उनके आध्यात्मिक विकास को दोबारा शुरू किया। उससे उनका प्रगतिशील सांसारिक विकास भी पुनः बहाल हो गया, क्योंकि आध्यात्मिक व भौतिक विकास, दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह सब लगभग 15 वर्षों की लंबी अवधि के बाद उनकी कुंडलिनी-जागृति में समाप्त हो गया। इसका मतलब यह भी है कि आम धारणा के विपरीत सांसारिक और आध्यात्मिक लाभ एक साथ आगे बढ़ते हैं। आत्मज्ञान के माध्यम से प्राप्त अद्वैतमयी रवैया स्थायी रूप से मूलरूप में जारी रह सकता है, अगर किसी भी व्यावहारिक / सांसारिक अद्वैतदर्शन के माध्यम से या / और किसी अच्छी / आध्यात्मिक संगति में रहा जाए, साथ में यदि उसे जानबूझकर और बलपूर्वक न त्याग दिया जाए। एक आदमी जो आग के हानिकारक प्रभावों का अनुभवात्मक ज्ञान रखता है, और एक वह जो उस बारे में ज्ञान नहीं रखता है; दोनों को ही आग के द्वारा समान रूप से जला दिया जाता है। इसी तरह, एक व्यक्ति जो आत्म-जागृति के माध्यम से द्वैत के हानिकारक प्रभावों का अनुभवात्मक ज्ञान रखता है, और एक वह जो वैसा ज्ञान नहीं रखता है; दोनों ही द्वैत के द्वारा समान रूप से प्रभावित या बद्ध / गुलाम कर दिए जााते हैं।

कौन आत्मज्ञानी है, और कौन नहीं?

यह बयान कि हम किसी के आत्मज्ञान का न्याय नहीं कर सकते हैं, केवल आंशिक रूप से सच है। क्या हम यह न्याय नहीं कर सकते कि कोई अद्‌वैतावस्था में है या द्‌वैतावस्था में। प्रत्येक का चेहरा इस बात को स्पष्ट रूप से बताता है, और यहां तक कि एक बच्चा भी इसका न्याय कर सकता है। यदि कोई नियमित रूप से और सही तरीके से अद्‌वैतभाव के साथ व्यवहार कर रहा है, तो उसे प्रबुद्ध-अनुभव के ज्ञाता के रूप में माना जा सकता है, चाहे भले ही उसके पास आत्मज्ञान का अनुभव हो या नहीं। दूसरी तरफ, अगर आत्मज्ञान का अनुभव करने के बाद भी कोई यदि द्‌वैतमयी हो जाता है, तो उसे एक आत्मज्ञान से अनजान होने के रूप में माना जाना चाहिए। क्योंकि यह अद्‌वैत के रूप में आत्मज्ञान का प्रभाव है, जो कि मायने रखता है, न कि एतदकारक आत्मज्ञान (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक)। इसलिए अद्‌वैत और आत्मज्ञान, दोनों को किसी की आध्यात्मिक स्थिति का न्याय करने के लिए मानदंड होना चाहिए, न कि केवल आत्मज्ञान को, और किसी के ज्ञान के बारे में संदेह के मामले में केवल अद्‌वैतदृष्टिकोण ही एकमात्र मानदंड होना चाहिए। इसलिए केवल अद्‌वैत ही मायने रखता है, फिर चाहे उसके साथ आत्मज्ञान हो या न हो। इस प्रकार से, आत्मज्ञान एक अद्‌वैतपूर्ण निरंतर जीवन प्रक्रिया या जीवनशैली है, केवल उसकी मानसिक जगमगाहट का एक क्षणिक अनुभवमात्र नहीं है। आत्मज्ञान केवल जीवन के साथ अपनाए जाने योग्य सही दृष्टिकोण के बारे में बताता है, न कि जीवन के वास्तविक अनुभवों को दर्शाता है (बाह्य लिंक- क्वोरा)। जीवन जीने का तरीका तो मानवीय रूप से सामाजिक जीवन को लम्बे समय तक जीने से प्राप्त व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से ही सीखने में आता है।

किसी भी आध्यात्मिक नींव / संस्था के द्‌वारा उत्पादित आत्मप्रबुद्ध प्राणियों की संख्या के बारे में, यदि किसी भी संस्था के द्‌वारा एक भी अद्‌वैतभाव वाला व्यक्ति उत्पादित किया जाता है, तो वह उस संस्था द्‌वारा उत्पादित सैकड़ों आत्मचमक-प्रबुद्ध प्राणियों से बेहतर होता है, जो उस चमक का सदुपयोग ही नहीं करते हैं। असल में, उस व्यक्ति के द्‌वारा आत्मज्ञान की मांग नहीं की जाती है, जो अद्‌वैत-अमृत के आनंद में गहराई से डूबा हुआ है। यह अद्‌वैत की महानता है। असल में, आत्मज्ञान एक महान गुरु का एक प्रकार है, जो एक व्यक्ति को अद्‌वैत का महत्व बहुत कुशलता से सिखाता है।

एक सुपर-डुपर रोमांस के रूप में आत्मज्ञान

प्रेमयोगी वज्र के अनुसार, कोई भी बिना रोमांटिक मानसिक जीवन को व्यतीत किए या उसे समझे, ज्ञान को नहीं समझ सकता है। आत्मज्ञान के बारे में गलतफहमी इसी कारण से है कि हम रोमांस और आत्मज्ञान को दो अलग-अलग विषयों में वर्गीकृत करते हैं। वास्तव में ज्ञान सात्विक रोमांस के जैसा ही होता है। एक सुपर रोमांस तब होता है, जब कोई व्यक्ति सालों के लिए लगातार मस्तिष्क के अंदर अपने प्रेमी की छवि को बंद कर देता है। वह बहुत आनंददायक होता है। वह उस सुपर रोमांस से परे तब कूदता है, जब वह उस प्रेमी के प्रति आसक्ति को नष्ट करने का प्रबंधन करता है। वह आत्मज्ञान है। वह सुपर-डुपर आनंददायक है। वह हर उपलब्धि की चोटी है। वह अवर्णनीय है। सांसारिक जीवन में उसके प्रभाव का केवल सुपर मानसिक रोमांस के माध्यम से अनुमान लगाया जा सकता है। सुपर-डुपर रोमांस / आत्मज्ञान एक पारलौकिक घटना है। प्रबुद्ध होने के भौतिक संकेत एक सुपर रोमांटिक होने के साथ मेल खाते हैं, हालांकि पूर्व मामले में मानसिक रूप से अधिक बलवान होते हैं। उदाहरण के तौर पर, मीरा और भगवान कृष्ण को ही देख लें (बाह्य वेबसाईट- isha.sadhguru.org), बस उनके मानसिक रोमांस का उद्देश्य दुनिया से परे अनंत देश-काल तक चला गया था। इस वेबसाइट के तांत्रिक वेबपृष्ठ “एक योगी की प्रेम कहानी” पर यह सब अच्छी तरह से समझाया गया है।

कुंडलिनी-जागरण किसी को याद करने की तरह

प्रेमयोगी वज्र के अनुसार, कुंडलिनी-जागृति एक जादुई गोली नहीं है। अपनी प्रिय या किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की कल्पना / याद में खो गया कोई भी इतनी गहराई से खो सकता है कि परिणामी मानसिक घटना जैसे कुंडलिनी जागृति हो जाती है। किसी की कल्पना में खोने और उसके रूप की कुण्डलिनी के जागृत होने के बीच में कोई अंतर नहीं है। अंतर केवल उस को याद करने की तीव्रता में है। जब वे आनंददायक यादें एक निश्चित सीमा / थ्रेशहोल्ड स्तर को पार करती हैं, तो वही याद किया गया मनुष्याकृत रूप जैसे कुंडलिनी-जागृति बन जाता है। आश्चर्यजनक बात यह है कि यह एक ही समय में एक साधारण मानसिक प्रक्रिया भी है, और एक बहुत ही जटिल व अड़ियल घटना भी, जिसे वश में करना असंभव सा हो जाता है।

वैबपृष्ठ- गृह-6(home-6)- कुण्डलिनी-संबंधित मिथ्या अवधारणाएँ

कुंडलिनी के संबंध में विवाद

रूट चक्र में कोई भौतिक गड्ढा नहीं है, जहां एक वलायाकृत सांप के आकार में कोई भी शारीरिक कुंडलिनी निष्क्रिय के रूप में लेती हुई हो। इन सभी अलंकृत प्रकारों में साधारण सांसारिक लोगों को खुश / प्रेरित करने के लिए केवल दार्शनिक तुलना और सौंदर्यीकरण किया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि कुण्डलिनीप्रकरण के साथ जैव-भौतिक क्रियाएं भी चलती हों, लेकिन कुंडलिनीयोग में वर्णित सबकुछ केवल अनुभवात्मक ही है। दरअसल, प्रत्येक मानसिक छवि सर्वव्यापक चेतना का एक प्रकार का कुंडलित या संकुचित या घटा हुआ रूप ही है। जब सभी चक्र स्पष्ट होते हैं, तो वह छवि एक सांप, एक कीड़ा इत्यादि रूपों में मस्तिष्क की ओर, ऊपर चढ़ते हुए दिखाई दे सकती है, अन्यथा वह पथ के बीच में दिखे बिना ही बंदर की तरह अचानक कूद सकती है, जैसा कि प्रेमयोगी वज्र के साथ हुआ था। एक बार प्रेमयोगी वज्र ने अपनी मानसिक छवि (वह आध्यात्मिक बूढ़ा आदमी) को अपने बेस चक्रों से गर्म हवा के गुब्बारे की तरह उभरकर अपने मस्तिष्क की ओर जाते हुए, अदृश्य रास्ते की यात्रा करते हुए व लगभग 3-4 सेकंड का कुल समय लेते हुए अनुभव किया। संभवतः इन सभी विस्तारों को अभ्यास के साथ अनुभव किया जाता है, हालांकि कुंडलिनी-जागृति के लिए ये आवश्यक प्रतीत नहीं होते। कुंडलिनी भौतिक चीज़ की तरह कुछ भी नहीं है, हालांकि वह जागृत होने पर किसी भी भौतिक इकाई की तुलना में अधिक वास्तविक और स्पष्ट दिखाई देती है। दरअसल, कुंडलिनी की कल्पना की जानी चाहिए। इसी प्रकार, चक्र कोई भौतिक चीजें नहीं हैं, लेकिन ये केवल अनुभवात्मक हैं। वे शरीर बिंदु जहां आसपास के क्षेत्र की तुलना में वह छवि अधिक स्पष्ट है, उन्हें चक्र कहा जाता है। यह अभ्यास के साथ सब स्पष्ट हो जाता है। इसी तरह, नाड़ियाँ भी (कल्पनाओं / संवेदनाओं के मस्तिष्कीय / गैर-मस्तिष्कीय रास्ते) कोई भौतिक वस्तु नहीं हैं। वे केवल सूक्ष्म पथ हैं, जिनका केवल छवि के साथ अनुमान लगाया जा सकता है, जैसे कि आकाश मार्ग का उस पर चल रहे एक विमान के साथ निर्णय लिया जाता है / अनुमान लगाया जाता है, उसे अलग रूप में वैसे अनुभव नहीं किया जाता है, जैसे कि कोई भौतिक इकाई हो। आप उस काल्पनिक / आभासी / अनुमानित पथ को नाड़ी कह सकते हैं, जिस

पर कुंडलिनी छवि ऊपर की ओर बढ़ती है। मस्तिष्क तो केवल मस्तिष्क है। यह केवल एक चक्र है। आज्ञा और सहस्रार चक्रों में इसे विभाजित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। चक्रों पर लोटस / कमल (तंत्र में भी इसका एक यौन-अर्थ है), रंगों, मन्त्रों इत्यादि को केवल चक्रों पर कुंडलिनी-छवि की पूजा करने के लिए स्थापित किया गया है, ताकि उसे और अधिक संतुष्ट और व्यक्त किया जा सके। आज लोगों के पास इस तरह की विस्तृत और भ्रमित करने वाली औपचारिकताओं को निष्पादित करने के लिए पर्याप्त खाली समय और मस्तिष्क उपलब्ध नहीं है। एक सामान्य तरीके से, कुंडलिनी-जागरण ऐसी गतिविधियों के बिना एक दुःस्वप्न की तरह प्रतीत होता है। केवल तंत्र ही इन औपचारिक गतिविधियों का उल्लंघन कर सकता है, और इस प्रकार कुंडलिनी योग को बहुत सरल बना सकता है। इसलिए बुनियादी और सरल कुंडलिनी योग को तांत्रिक प्रथाओं के साथ आगे बढ़ाया गया है, जो आज के व्यस्त व तकनीकी समय के लायक है। कुंडलिनी योग का अपना अलग आधार नहीं है, लेकिन यह केवल शास्त्रीय पतंजलियोग या राजयोग का तकनीकी संवर्धन ही है। शायद राज योग मस्तिष्क के अंदर सीधे और निरंतर रूप से कल्पित की गई कुंडलिनी-छवि को पोषित करने की सलाह देता है। यह सामान्य सांसारिक लोगों के लिए बहुत अधिक अव्यवहारिक, अप्रभावी और मुश्किल हो जाता है। इन समस्याओं को हल करने के लिए, कुंडलिनी योग तैयार किया गया है, जो कुंडलिनी को बढ़ाने और मूल राजयोग को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए यौनसिद्धांत को उसके साथ नियोजित करता है। वह यौन सिद्धांत कहता है कि यौन क्षेत्र में पोषित मानसिक छवि को, उसके सक्रियण के लिए मस्तिष्क तक उठाना और उसे लगातार अभ्यास के साथ जागृत करना बहुत आसान है। यह हमारे दैनिक जीवन में भी स्पष्ट है, जहां यौनाकर्षण या यिन-यांग आकर्षण (यिन- स्त्री शक्ति, यांग- पुरुष शक्ति) सामाजिक जीवन के सबसे शक्तिशाली और निर्णायक कारक के रूप में देखा जाता है। कुंडलिनी योग में मुख्य रूप से वही प्राकृतिक और तांत्रिक सिद्धांत नियोजित किया गया है। यही कारण है कि शक्तिशाली यौनयोग को कुंडलिनीयोग की चोटी के रूप में जाना जाता है, और यह उसकी शुरुआत के एकदम बाद से ही कई सनकी लोगों के द्वारा उसमें नियोजित किया जाता है, हालांकि सैद्धांतिक रूप से और नैतिक रूप से, इसे कुंडलिनीयोग के अंतिम चरण में, कुण्डलिनी को आवश्यक भागने का वेग (एस्केप विलोसिटी) प्रदान करने के लिए शामिल किया जाता है, ताकि कुण्डलिनी जागृत हो सके। ऊपर बताए

गए शरीर के चक्रों व शरीर के अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी कुण्डलिनी-छवि को पोषित किया जा सकता है, हालांकि यौन चक्रों की तुलना में उनके पास कम प्रभावशीलता है।

चित्र-विचित्र कुंडलिनी-अनुभव

प्रेमयोगी वज्र का कहना है कि उस उपयुक्त, जाने-माने और प्यारे व्यक्ति के व्यक्तित्व की मानसिक छवि की कल्पना (ध्यान) की जानी चाहिए अपनी कुंडलिनी के रूप में, जो कि एक बड़े आध्यात्मिक व्यक्ति / परिवार के सदस्य / मास्टर / गुरु के रूप में प्रभावशाली होता है, और / या हमेशा संपर्क में रहता है। उससे उस कुण्डलिनी पर स्वाभाविक रूप से या ध्यान के माध्यम से मानसिक एकाग्रता अच्छी तरह से बनी रहती है। इस तरह, मानसिक कुंडलिनी छवि को और अधिक दक्षता / दृढ़ता प्राप्त हो जाती है, और साथ ही, भावनात्मक, व्यवहारिक, ध्यान-उन्मुख, सामाजिक, मानवीय और एक अच्छी तरह से योग्य / आध्यात्मिक व्यक्ति के कई अन्य गुण भी प्राप्त होते हैं। वह एकल, अत्यधिक मजबूत और लगातार मन में बनी हुई कुंडलिनी-छवि अधिकांश मामलों में आत्मज्ञान के लिए अत्यावश्यक है। चित्र-विचित्र रोशनियों, ध्वनियों या अन्य अजीबोगरीब वस्तुओं को कुण्डलिनी-छवि के रूप में अनुभव करने से मानसिक ऊर्जा इधर-उधर बिखर जाती है, और उपरोक्त एकल प्रकार की कुंडलिनी छवि पर फोकस / केन्द्रित नहीं हो पाती है, जिससे कुंडलिनी-शक्ति कम हो जाती है। साथ में, उन अजीब व मनुष्याकृति-रहित अनुभवों से मानवीय गुणों का भी कम ही विकास हो पाता है।

एक कुंडलिनी-जागरण के बाद परिवर्तन / आत्मरूपांतरण

सामान्य सांसारिक आयाम (कुंडलिनी की निद्रावस्था) में, एक व्यक्ति का स्वयं का अधिकांश भाग (आत्मा) अनुपस्थित रूप (अभाव रूप) में होता है, जिससे वह अपना आत्मा पूरी तरह से अंधेरे जैसा दिखाई देता है। लेकिन जब कुंडलिनी वास्तविक की जागृति-प्रक्रिया के तहत कुछ सेकंड (क्षणों) तक के लिए होती है, तो उस सीमित समय के दौरान, कुंडलिनी-छवि उस ध्यानकर्ता के अपने स्वयं (अपनी आत्मा) के साथ पूरी तरह से एकजुट हो जाती है। उस समय, ऊपर वर्णित-अनुसार स्वयं की सामान्य रूप से अनुभव की जाने वाली उदासीन और अंधेरी स्थिति के विपरीत, अपने आप में एक महान आनंद और चमक दिखाई देती है। चूंकि उस आनंद / चमक की कभी भी सांसारिक या कामुक आनंद / चमक

से तुलना नहीं की जा सकती है, इसलिए सहजता या स्वाभाविक प्रकृति उस ध्यानकर्ता के मस्तिष्क को बाहरी स्रोतों में उस आनंद / चमक की खोज करने को कम करने के लिए निर्देशित करती है, ताकि वह अपने स्वयं के न्यूरोनल सर्किट (मस्तिष्कीय संवेदना-परिपथ) विकसित कर सके, ताकि कुंडलिनी-छवि हमेशा उसके मस्तिष्क में व्यक्त रहे। इस तरह, लगातार अपने स्वयं के मस्तिष्क के अंदर विद्यमान कुंडलिनी छवि, उसे समाधि (कुंडलिनी-जागृति) के उस सुपर (परम) आनंद के स्मरण सहित निरंतर आनंद का अनुभव कराती है। परिवर्तन (आत्मरूपांतरण) प्रक्रिया के दौरान, प्रेमयोगी वज्र का सांस लेने के लिए प्रयास ऊंचा उठा रहता था, वह खुद को पर्याप्त थका हुआ / नींद में महसूस कर रहा था, और उसकी कुंडलिनी छवि उसके मस्तिष्क में अनुभव रूप से बढ़ रही थी, मुख्य रूप से उसकी अपनी सांसारिक गतिविधियों के समय।

कुंडलिनी जागरण या निरंतर समाधि के बाद (पढ़ें ईपुस्तक, कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है) आत्मज्ञान तक

कुंडलिनी छवि पर सभी भौतिक और मानसिक दुनिया स्वचालित रूप से आरोपित हो जाती हैं। इस चरण को सम्प्रज्ञात समाधि भी कहा जाता है। सम्प्रज्ञात का अर्थ “समान रूप से और सही ढंग से जाना गया” होता है (संस्कृत शब्द, सम-समान रूप से, और प्रज्ञात-ठीक से जाना गया)। इसका मतलब है कि इस चरण में गहन अद्वैत और आनंद होता है। यह स्तर अलग-अलग समय अवधि के लिए बन सकता है। प्रेमयोगी वज्र में, यह स्तर लगभग 2 वर्षों तक चलाता रहा। उसके बाद कुंडलिनी छवि के एक निश्चित सीमा-स्तर तक पहुंचने / पकने के बाद, अंततः उसका रिग्रेशन / पतन होता है। कुंडलिनी छवि के पतन के साथ, कुण्डलिनी पर आरोपित दुनिया भी आभासिक रूप से पतित हो जाती है। अंततः इसके कारण, आनंददायक शून्य ही अनुभव किया जाता है (नोट- इस अवस्था में अवसाद भी हो सकता है, यदि उससे अच्छी तराह से न निपटा जाए- पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक)। इस चरण को असम्प्रज्ञात समाधि के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि इसमें कुंडलिनी की अनुपस्थिति के कारण कुछ भी समान रूप से और गहराई से ज्ञात नहीं होता है। इसमें अज्ञात स्रोत से समाधि का गहन आनंद होने के कारण, इस चरण को भी समाधि ही कहा जाता है। योगी को समर्थन देने और उसे और ऊपर उठाने के लिए, सहजता / प्रकृति द्वारा प्रदत्त आत्मज्ञान योगी द्वारा अचानक या आश्चर्यजनक

रूप से अनुभव किया जाता है (जैसे कि किसी की नींद में आत्मज्ञान की बहुत छोटी सी झलक भी उत्पन्न हो सकती है, खासकर अगर कोई व्यक्ति स्वयं के पर्याप्त अपरिपक्व या गैर-सांसारिक होने के कारण, उसके पूर्ण रूप को सहने में सक्षम नहीं है, जैसा कि प्रेमयोगी वज्र के मामले में हुआ था)। यही तभी होता है, जब कोई व्यक्ति अपने गुरु की कृपा और / या अनुकूल प्रकृति / पर्यावरण की सहायता से अपने आत्मज्ञान तक इस अंतिम चरण को पूरी तरह से सहन कर लेता है, और योग से स्वतःप्राप्त सभी साधारण शक्तियों / जादुई शक्तियों / सिद्धियों को सिरे से नकार देता है।

साथ में, जो कुंडलिनी नियमित रूप से कुंडलिनी योग-ध्यान के माध्यम से या प्राकृतिक / तांत्रिक प्रेम से निरंतर रूप से मन में रखी जाती है, वह जीवन / चेतना का मुख्य स्रोत बन जाती है। उससे नियमित रूप की सांसारिक गतिविधियों को मन के द्वारा साइड बिजनेस के रूप में माना जाता है, मुख्य व्यवसाय के रूप में नहीं। इस कारण दुनिया की ओर अद्वैत व अनासक्ति स्वयँ ही उत्पादित हो जाती है।

कुंडलिनी-उत्थान के बाद सुपर पावर / दिव्य शक्तियां

प्रकृति कभी भी किसी भी व्यक्ति को कुंडलिनी ऊर्जा के लिए सहायक सिंक / मामूली सिंक / सहायक अवशोषक के रूप में जानी जाने वाली सुपर शक्तियों को प्रदान नहीं करना चाहती है, जैसा करना उस परमज्ञान / आत्मज्ञान को अनुभव करने से रोकता है; जो मानसिक कुंडलिनी ऊर्जा की विशाल मात्रा के लिए एक सबसे बड़े, अंतिम और मुक्तिकारी सिंक / अवशोषक के रूप में कार्य करता है। इस संबंध में, प्रेमयोगी वज्र अपने स्वयं के अनुभवों का वर्णन अपने शब्दों में निम्नलिखित प्रकार से करते हैं-

मैं हमेशा आश्चर्यचकित हूं कि कुछ लोगों को एक बार के लिए भी सुपर शक्तियां कैसे मिलती हैं (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक), क्योंकि मैंने खुद को अपने झलकमात्र आत्मज्ञान के बाद एक तरह से भगवान की तरह महसूस किया, और ऐसा लगा जैसे कि मैं हर तरह से पूरी तरह से संतुष्ट हो गया था। उस समय, मुझे सुपर शक्तियों की तत्काल आवश्यकता थी, लेकिन भगवान ने मुझे उनको प्रदान नहीं किया। इससे मुझे लगता है जैसे कि भगवान सुपर शक्तियों की पेशकश नहीं करता है, बल्कि अन्य

सभी उपलब्ध शक्तियों को छीनने का भी प्रयास करता है, वह इसलिए क्योंकि सभी विशेष उपलब्धियां आत्मज्ञान को पर्याप्त गंभीर रूप से रोकती हैं। आत्मज्ञान एक सबसे बड़े मानसिक ऊर्जा के सिंक के रूप में कार्य करता है। मेरे मनमंदिर में मेरी तांत्रिक देवीरानी की एक सतत छवि के रूप में मेरी मानसिक ऊर्जा, मेरी झलक-प्रबुद्धता /आत्मज्ञान के बाद पर्याप्त क्षीण हो गई थी, हालांकि वह क्षणिक आत्मज्ञान पूरी तरह से उस मानसिक ऊर्जा को अवशोषित करने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं था। उसासे वह ऊर्जा मेरे सांसारिक जीवन के माध्यम से धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी, जैसे कि नदी विभिन्न इलाकों को पार करते हुए बढ़ती जाती है। अंत में मेरे द्वारा बर्दाश्त से बाहर होने पर, मेरे द्वारा वह संचित मानसिक ऊर्जा एकल-वाक्यांश शविद के रूप में, दुनिया को लाभान्वित करने वाले शब्दों के रूप में स्वतः ही वैसे ही उत्सर्जित हो गई, जैसे कि पूरी तरह से लोड / जलभारपूर्ण नदी खुद को महान समुद्र में उत्सर्जित / भारविहीन करती है। वह वाक्यांश बाद में मेरे लिए सच साबित होता हुआ प्रतीत हुआ। असल में, कभी-कभी भगवान / प्रकृति एक प्रबुद्ध व्यक्ति के शब्दों के माध्यम से अपनी सांसारिक इच्छाओं को पूरा करते हैं। हो सकता था कि यदि मैंने उस ऊर्जा को उस तरह से उत्सर्जित नहीं किया होता, तो वो मेरी सुपर पावर के रूप में अभिव्यक्त होने के लिए जमा हो जाती। यह भी हो सकता था कि मेरी मानसिक ऊर्जा मेरे दूसरे और पूर्ण आत्मज्ञान के रूप में रिलीज / उत्सर्जित होने के लिए होती रहती। यह केवल एक ऊर्जा-खेल है। कुछ भी मुफ्त में नहीं आता है। परिस्थिति के अनुसार इन उपर्युक्त परिणामों में से किसी के रूप में भी अभिव्यक्ति प्राप्त करने के लिए ऊर्जा को बूंद-2 करके इकट्ठा करना पड़ता है।

अगली बार, दैव के द्वारा मेरे तांत्रिक मास्टर की एक सतत छवि के रूप में मेरी संचित मानसिक ऊर्जा को कुंडलिनी जागृति के रूप में उत्सर्जित किया गया था। अभी मैं उस ऊर्जा को स्वचालित रूप से और तेजी से जमा कर रहा हूं। अब मेरे पास किसी भी तरह की सुपर पावर के रूप में मेरी संचित ऊर्जा को मुक्त करने के प्रति मेरे झुकाव के कई अवसर सामने आ सकते हैं, लेकिन अंतिम ऊर्जा-अवशोषक रूपी आत्मज्ञान तक पहुंचने के लिए, मेरे द्वारा उन अवसरों का सावधानीपूर्वक प्रतिरोध करना अत्यावश्यक है। असल में, कोई व्यक्ति उस अंतिम ऊर्जा सिंक तक तभी पहुंचता है, जब वह किसी भी सांसारिक लाभ के लिए अपनी ऊर्जा को मुक्त करने के लिए सांसारिक प्रलोभनों का विरोध

करता है, परन्तु इसके परिणामस्वरूप, संचित मानसिक ऊर्जा आगे से आगे बढ़ती हुई, सहन करने के लिए बहुत बड़ी हो जाती है। हालांकि, आध्यात्मिक गुरु / गुरु / गाइड (पथप्रदर्शक) / मित्र की अच्छी कंपनी / संगति के बिना उसे हासिल करना बहुत मुश्किल है।

अपने आत्मज्ञान के बारे में दूसरों को बताया जाना चाहिए या नहीं?

कुछ लोग कहते हैं कि अपने अहंकार को बढ़ने से रोकने के लिए अपनी कुंडलिनी-जागृति या अपना आत्मज्ञान दूसरों के लिए बहुत जल्दी नहीं बताया जाना चाहिए। लेकिन मुझे लगता है कि बोधिसत्व प्रकार के लोग अपने बारे में कम ख्याल रखते हैं, और दूसरों को आध्यात्मिक रूप से लाभान्वित करते रहते हैं। इसके अलावा, उपहार में दिया गया ज्ञान एक अर्जित ज्ञान ही है। प्रेमयोगी वज्र के साथ भी यही हुआ था। जब उन्होंने अपने आत्मज्ञान के बारे में ऑनलाइन घोषित किया (पढ़ें उपरोक्त ईपुस्तक), तो उन्हें बदले में अपने लिए कुंडलिनी-जागृति मिली, जैसे कि वह एक इनाम हो। कुछ छिपाने से किसी के लिए कुछ खास अच्छा नहीं होता है, बल्कि उससे ऐसा करने वाले की छवि केवल एक ऐसे आतंकवादी या गुंडा प्रकार की बनती है, जो अक्सर कुछ महत्वपूर्ण चीजों / सूचनाओं को छुपाता है, और हमेशा किसी को नुकसान पहुंचाने के या कुछ छीनने के सही अवसर की तलाश में रहता है। निश्चित रूप से इसे सड़कों पर या किसी के अपने जीवन सर्कल / सम्बंधित जीवनक्षेत्र में घोषित नहीं किया जाना चाहिए, ताकि दूसरों की हंसी और ईर्ष्या से संभावित प्रभावों से बचा जा सके; इसके बजाय इसे अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त सोशल मीडिया जैसे कि क्वोरा, अन्य प्रसिद्ध / आध्यात्मिक वेबसाइटों / ब्लॉग इत्यादि पर ही घोषित किया जाना चाहिए। साथ में छद्म नाम के पक्ष में अप्रत्यक्ष रूप से आध्यात्मिक उपलब्धि को बताने की कोशिश की जानी चाहिए, ताकि करीबी सर्कल के लोग भी वास्तविकता को समझ सकें, और साथ ही जागृत व्यक्ति का अहंकार भी बहुत विकसित न हो सके। हालांकि, जागृत व्यक्ति को अहंकार जागृत होने से ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचता है। उसके अहंकार का उसकी कुंडलिनी के साथ विलय हो चूका होता है, इसलिए उसका बढ़ता अहंकार / मैं, उसके बढ़ने के रूप में कुछ और नहीं बल्कि उसकी बढ़ती कुंडलिनी ही है। असल में, यह जागृत होने का केवल आभासी / झूठा अहंकार है, जो संपर्क में स्थित लोगों द्वारा प्रतिबिंबित होता है, और उनके द्वारा सत्य रूप में अनुभव किया जाता है। यही कारण है कि जागृत व्यक्ति के लिए भी अहंकार को धारण करने से मना

किया जाता है। जागृत होने के कारण व्यक्ति को एक जागरूक सामाजिक आचरण का पालन करना पड़ता है, क्योंकि वह उन कई लोगों के लिए अनुसरणीय होता है, जो जाने या अनजाने में उसके आचरण का पालन करते रहते हैं।

क्या कुंडलिनी-मशीन कभी संभव है?

हाँ, यह शायद सबसे अधिक संभावित है। कुंडलिनी घटना एक शुद्ध मानसिक विज्ञान है, जिसके अंदर कुछ भी रहस्यमय नहीं है। वैज्ञानिक रूप से, कुंडलिनी-जागृति कुछ खास नहीं है, लेकिन संभवतः उन न्यूरोकेमिकल्स की अचानक एक ही केंद्रित छवि की ओर अचानक दौड़ होती है, जो आम तौर पर पूरे मस्तिष्क के अंदर बिखरे हुए होते हैं। वह तंत्रिकावैज्ञानिक प्रक्रिया आंखों के सामने एक दृश्यमान भौतिक इकाई की तरह ही उस छवि को जीवंत बना देती है। यही कारण है कि इस जागृति प्रक्रिया को तीसरी आंख के उद्घाटन के रूप में भी जाना जाता है। यदि वर्तमान में कुल वैज्ञानिक बजट का 1% भी कुंडलिनी-शोध में लगा दिया जाता है, तो कुंडलिनी-मशीन वास्तविक सपने के रूप में दिखाई देती है।

सोशल मीडिया-प्लेटफार्म से विकास

प्रेमयोगी वज्र ने अपनी कुंडलिनी को एक मूल (गैर-संपादित) रूप में, निम्नलिखित चर्चा के अंत में जागृत किया, जो पूरे वर्ष 2016-18 (26-10-2016 से 08-05-2018) में ब्रिलियानो कुंडलिनी-रिसर्च /खोजबीन के ऑनलाइन मंच पर चला था, लगभग डेढ़ साल। इसलिए, इस चर्चा में सूक्ष्म शक्ति छिपी हो सकती है। इस वास्तविक समय चर्चा का वर्णन इसी वेबसाईट के "Love story of a Yogi / एक योगी की प्रेम कहानी" में किया गया है। उनके साऊल मेट / जीवन साथी, लेखक / सह-लेखक ने क्वोरा- 2018 से अपने कई आध्यात्मिक उत्तरों को शामिल किया है, जिसके लिए उन्हें "Top Writer 2018 / शीर्ष लेखक 2018 के रूप में भी सम्मानित किया गया है। इस स्थापित उपलेखक ने कई प्लेटफार्मों पर उस गुप्तताकाँक्षी रहस्यमयी व्यक्ति के रहस्यवाद से संबंधित अनुभवों और विचारों को लिखने में बहुत मदद की है।

दोस्तो, व्यक्तिगत रूप से इकट्ठा होने और आध्यात्मिक विचारों को विकसित करने के लिए एक आध्यात्मिक कंपनी / समूह बनाने की परंपरा पुरानी थी। आज एक आधुनिक और बहुत व्यस्त युग है,

जहां ऑनलाइन सोशल मीडिया ने मानसिक उपस्थिति के साथ भौतिक उपस्थिति की मजबूरी को लगभग समाप्त ही कर दिया है, चाहे जो भी काम / व्यवसाय हो, और चाहे भौतिक हो या आध्यात्मिक हो। यह आज का चमत्कार है कि पहले से प्रचलित भौतिक संगति की तुलना में ऑनलाइन बातचीत के साथ आध्यात्मिक रूप से बेहतर विकास हो सकता है। इसका जीवंत उदाहरण प्रेमयोगी वज्र है। उन्होंने अपनी कुंडलिनी को डेढ़ सालों तक ऑनलाइन आध्यात्मिक वार्तालाप के माध्यम से जागृत किया, जिसे मेरे दूसरे लॉन्गरीड / वृहदपठन / लम्बे लेख, "Love story of a Yogi / एक योगी की प्रेम कहानी" में मूल रूप में लिखा गया है। कोई भी उस पूरे लेख को एक सांस में भी पढ़ सकता है, लेकिन शायद वह केवल तभी सर्वोत्तम काम करता है, अगर उसे लंबे समय तक छोटी किस्तों में नियमित रूप से परस्पर बातचीत (comments / टिप्पणियों, likes / पसंद आदि के साथ) के साथ नियमित रूप से पढ़ा जाता है, और साथ में अन्य नियमित आध्यात्मिक प्रयासों (ई-किताबों के अध्ययन इत्यादि) को भी यदि इच्छा के मुताबिक किया जाता रहे, जैसा कि प्रेमयोगी वज्र ने किया था। यदि आध्यात्मिक दृष्टिकोण को ऑनलाइन रूप के छोटे और नियमित आध्यात्मिक एक्सपोजरों के साथ लंबे समय तक बना कर रखा जाता है, तो यह आश्चर्यजनक परिणाम उत्पन्न करता है, जैसा कि प्रेमयोगी वज्र के मामले में स्पष्ट है।

कोई सिंगल बुक / अकेली पुस्तक सम्पूर्ण नहीं है

प्रेमयोगी वज्र ने कई कुंडलिनी से संबंधित किताबें / ई-किताबें पढ़ीं, जिससे उन्हें पता चला कि इस संबंध में कोई भी पुस्तक पूरी नहीं है, इसके बजाय कुंडलिनी योग के आत्म-अभ्यास के साथ-साथ विभिन्न पुस्तकों से एकत्रित किए गए मुख्य बिंदु ही अधिक गुणवत्ता से काम करते हैं। उन्होंने इन सभी कुण्डलिनी-जागरण के कारकों को इस व्यापक ई-बुक के कच्चे माल के रूप में एक साथ एकत्रित किया, और इन सभी उपरोक्त प्रथाओं / कारकों के माध्यम से उत्पन्न अपनी कुंडलिनी-जागृति (वास्तव में उस जागृति से प्राप्त शक्ति के माध्यम से) के तुरंत बाद उन्हें पुस्तक-रूप में संकलित किया। कई कारणों से कुंडलिनी के संबंध में अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त शास्त्रों में भी महान गोपनीयता को रखा गया है। यहां तक कि कुंडलिनी को भी ठीक से परिभाषित नहीं किया गया है। इस अंतर को

भरने के लिए, प्रेमयोगी वज्र ने कुंडलिनी को सबसे अच्छे व मान्यताप्राप्त तरीकों में से एक तरीके के माध्यम से रहस्योद्घाटित कर दिया है।

गुप्तता रखने के लिए सलाह

तंत्र एक गुप्त आध्यात्मिक विज्ञान है। यह खुले तौर पर प्रदर्शित किया गया है, क्योंकि आज खुली दुनिया है, और कुछ भी रहस्यमयी प्रतीत नहीं होता है। आज के लोग काफी परिपक्व, शिक्षित और बुद्धिमान हैं। इसलिए तंत्र के सम्बन्ध में गलतफहमी और गलत धारणाओं की बहुत कम संभावनाएं हैं। फिर भी सावधानी बरतनी चाहिए, और इसे यहाँ तक कि अप्रत्यक्ष रूप से भी या अजीब / मजाकिया तरीके से भी उनके सामने प्रकट करने की कोशिश नहीं की जानी चाहिए, जो इस से असहज महसूस कर सकते हैं। पूरी संभावना है कि वे इसे गलत समझेंगे, जिससे वे खुद को कम या ज्यादा रूप से नुकसान पहुंचा सकते हैं।

वैबपोस्ट-1(webpost-1)- योग व तंत्र-एक तुलनात्मक अध्ययन (तंत्र के बारे में कुछ रोचक तथ्य, तंत्र व इस्लाम के बीच में समानता)

तंत्र क्या है?

तंत्र में प्रारंभ से ही एक व्यक्ति अपने आपको देहपुरुष की तरह अद्वैतपूर्ण, मुक्त व अनासक्त समझते हुए ही समस्त व्यवहार करता है। परन्तु योग में एक व्यक्ति पहले अपनी कुण्डलिनी को जगाता है। उससे उसे अद्वैत से जुड़े हुए महान आनंद का अनुभव होता है। उस कुन्डलिनीजागरण के आनंद के वशीभूत होकर ही वह अनायास ही अद्वैतमयी आचरण प्रारम्भ करता है, और धीरे-२ तांत्रिक की तरह अद्वैतपूर्ण बन जाता है। एक योगी कुण्डलिनीजागरण से आगे बढ़ते हुए आत्मज्ञान को भी अनुभव कर सकता है। उससे उसके अद्वैतज्ञान को और अधिक दृढ़ता मिलती है। इसका अर्थ है कि तंत्र योग की अपेक्षा अधिक आसान, सर्वसुलभ, स्वाभाविक व मानवतापूर्ण है। जब योगोपलब्धि के बाद भी तंत्र को स्वीकारना ही पड़ता है, तब क्यों न उसे प्रारम्भ से ही स्वीकार किया जाए। बहुत से तंत्र का अभ्यास करने वाले लोग समय के साथ स्वयं ही कुण्डलिनीजागरण व आत्मज्ञान प्राप्त कर लेते हैं, बिना किसी भिन्न या विशेष प्रयास के। कई लोगों को तो तंत्र को सिद्ध करने का भी स्वाभाविक रूप से अवसर मिलता है, और योग को भी; जैसा कि इस वेबसाईट के नायक प्रेमयोगी वज्र के साथ हुआ। बहुत से लोग तंत्र को पंचमकारों तक ही सीमित कर देते हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि तंत्र एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है। यह एक अद्वैतपूर्ण जीवनपद्धति है। हिन्दू संस्कृति के अधिकाँश अचार-विचार एक तांत्रिक पद्धति के ही विभिन्न अंग हैं, चाहे वह वेद-पुराणों का अध्ययन हो, या उनसे जुड़े हुए विभिन्न क्रियाकलाप। प्राचीनकाल में जिन लोगों को आत्मज्ञान हुआ, उन्हें आम साधारण जनजीवन में जीवन व्यतीत करना बहुत कठिन लगा। इसका कारण यह था कि आम लोग तो भौतिक दृष्टिकोण से जीवन जीने के आदी थे, जिसे आत्मज्ञानी लोगों का ज्ञानपूर्ण मन स्वीकार न कर सका। अतः उन्होंने आम अज्ञानी लोगों के व्यवहार की नक़ल को छोड़कर प्रकृति की नक़ल करते हुए अपना जीवन जीने का प्रयास किया। वैसा इसलिए, क्योंकि उन्हें प्रकृति के सभी व्यवहार ज्ञानपूर्ण लगे। वैसा करने से उनके आध्यात्मिक स्तर में और अधिक इजाफा हुआ, और वे जीवन्मुक्त बन गए। प्राकृतिक जीवनशैली से अपने को लाभ होते देखते हुए उनके मन में औरों को भी वैसा लाभ दिलाने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

अतः उन्होंने प्राकृतिक घटनाओं को जीवंत रूप में लिपिबद्ध करना शुरू कर दिया। वे ही लिपिबद्ध संग्रह कालान्तर में वेद-पुराणों के नाम से विख्यात हुए, जिन्होंने बहुत से लोगों के लिए जीवन्मुक्ति को सुलभ करवाया। उन पुराणों को लिखने वाले आत्मज्ञानी लोग ऋषि-मुनि कहलाए।

तंत्र के बारे में कुछ रहस्यात्मक तथ्य

उपरोक्त प्रकार की ही घटना तांत्रिक प्रेमयोगी वज्र के साथ भी घटित हुई। उसे भी बचपन में ही क्षणिक आत्मज्ञान हो गया था। उसके बाद वह भी आम लोगों की तरह जीवनयापन करने में अपने आप को अक्षम पा रहा था। इसीलिए उसने अपने लाभ के लिए शरीरविज्ञान दर्शन नामक, पौराणिक दर्शन से मिलता-जुलता एक जीवन दर्शन बनाया। उसके सान्निध्य से उसे जो अद्वैत व अनासक्ति की उपलब्धि हुई, उससे उसकी चहुंमुखी प्रगति सुनिश्चित हुई, और यहाँ तक कि अनायास ही कुण्डलिनीजागरण की एक झलक भी मिली। उसी लाभ से प्रेरित होकर उसने उसी दर्शन पर आधारित एक पुस्तक की रचना की, जिसे हम आधुनिक पुराण भी कह सकते हैं। पुराणों में तो बाहर मौजूद स्थूल सृष्टि का वर्णन है, परन्तु शरीरविज्ञान दर्शन में हमारे अपने भीतर मौजूद सूक्ष्म सृष्टि का वर्णन है। 'यत्पिंडे तत्ब्रम्हांडे' नामक वेदोक्ति के अनुसार दोनों सृष्टियों के बीच में लेशमात्र भी अंतर नहीं है। इसलिए हम प्रेमयोगी वज्र को आधुनिक ऋषि भी कह सकते हैं। उसकी पुस्तक भी पुराणों की तरह ही तांत्रिक ही है, यद्यपि साथ में कुछ अंश पंचमकारी विद्या का भी है, श्रीमद देवीभागवत पुराण से मिलता जुलता। अब रही बात पंचमकारी तंत्र की, तो वह विशाल तांत्रिक पद्धति का केवलमात्र एक छोटा सा हिस्सा ही है। तांत्रिक पद्धति का बहुत लम्बे समय तक आचरण करने के बाद जब आम साधक का तांत्रिक दृष्टिकोण बहुत परिपक्व हो जाता है, तभी एक योग्य गुरु के मार्गदर्शन में तंत्र के पंचमकारी अंग का आश्रय लेना चाहिए, ताकि कुण्डलिनीजागरण के लिए पर्याप्त शक्ति मिल सके। समय से पहले अपनाने पर या अयोग्य गुरु के मार्गदर्शन में यह लाभ के स्थान पर हानि भी पहुंचा सकता है। साथ में, पंचमकारी तांत्रिकों का ध्येय हिंसा नहीं, अपितु कुण्डलिनीजागरण ही है। शक्ति के सर्वश्रेष्ठ स्रोत तो माँस, मैथुन व मद्य ही हैं, जो हिंसा के बिना प्राप्त नहीं किए जा सकते हैं। इसलिए उनके कम से कम प्रयोग से अधिक से अधिक आध्यात्मिक लाभ को प्राप्त करने को ही प्राथमिकता दी गई है। इसका उदाहरण है, मत्स्य-सेवन। क्योंकि मछली को आवश्यकतानुसार न्यूनतम मात्रा में भी पकड़ा जा सकता

है, इसलिए उससे निरर्थक हिंसा नहीं होती, जिससे हिंसा-दोष न्यूनतम स्तर पर बना रहता है। साथ में, मछली ठंडी प्रकृति की होती है। इसलिए यह पंचमकारी के अन्दर उस क्रोध को नहीं पनपने देती, जो आध्यात्मिक राह में सबसे बड़ा विघ्न होता है। साथ में, यह आमिषाहारों में सबसे कम तमोगुण उत्पन्न करता है, और इसके शरीर के ऊपर दुष्प्रभाव भी अन्य की तुलना में न्यूनतम होते हैं। इसी तरह इसमें एकपत्नीव्रत को प्राथमिकता दी गई है, ताकि यौनता की अति से बचा जा सके, क्योंकि वह भी एक विशेष प्रकार की हिंसा ही है, विशेषकर यदि सही तांत्रिक नियम न अपनाए जाएं। फिर भी थोड़ी-बहुत भूल-चूक तो सीखते समय स्वाभाविक ही है। यदि तांत्रिक-साथी को बदलना ही पड़े, तो बहुत लम्बे समय के बाद व विशेष आध्यात्मिक प्रगति को प्राप्त करने के बाद ही। स्त्री पर बुरी नजर सर्वथा वर्जित है। यौनता / पञ्चमकारों के बारे में भद्दे शब्द व भद्दे मजाक भी वर्जित हैं। स्त्री को देवी व गुरु की तरह सम्मान देना पड़ता है। किसी की बेटी या किसी की पत्नी को तांत्रिक-साथी नहीं बनाया जाता, क्योंकि उन्हें दूसरों की भावनात्मक संपति के अंश के रूप में देखा जाता है। प्राचीनकाल के अधिकाँश प्रख्यात तांत्रिक वही हैं, जो पहले आम जनमानस में प्रचलित साधारण तांत्रिक पद्धतियों से जीवन व्यतीत करते थे, परन्तु बाद में विभिन्न कारणों से उसके पंचमकारी अंग का भी सेवन करने लगे। उन कारणों में एक मुख्य कारण था, समाज से बहिष्कृति या समाज में पर्याप्त सम्मान न मिलना। तभी तो कुछ प्रख्यात तांत्रिक आज के पंजाब की भारत-पाकिस्तान सीमा के आसपास हुए हैं, कुछ तो आज के पाकिस्तान में भी हुए हैं। दूसरा कारण है कि पंजाब शुरु से ही समृद्ध रहा है, इसलिए वहां खाने-पीने व मौज-मस्ती करने वालों की परंपरा रही है। उसी तरफ को तांत्रिक मंदिर भी बहुतायत से पाए जाते हैं। पंजाब में गुरु-परम्परा का बोलबाला भी तंत्र के अनुरूप ही विकसित हुआ है। मैंने स्वयं पंजाब के सुदूर व पाकिस्तान की दिशा के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहकर सभी कुछ प्रत्यक्ष रूप में अनुभव किया है। उन सुदूर क्षेत्रों तक हिन्दुओं की आम तांत्रिक पद्धति की पहुँच ढीली थी, अतः वहां पर रहने वाले लोगों को सामूहिक आध्यात्मिकता से मिलने वाले बल की प्राप्ति नहीं हो रही थी। उसके प्रतिकारस्वरूप उन्होंने पंचमकारी तंत्र को सही ढंग से अपनाया, व त्वरित सफलता को प्राप्त किया, क्योंकि पंचमकारी शक्ति से उत्पन्न आध्यात्मिक बल सामूहिक आध्यात्मिकता के बल से भी कहीं अधिक था। निस्संदेह वे तांत्रिक आम सर्वसाधारण या आध्यात्मिक समाज से कटे-२ से रहे, फिर भी वे सिद्धियों के चरम पर

पहुंचे, और दूसरों को भी प्रेरित करते रहे। स्वाभाविक है कि वैसे तांत्रिकों में बहुत से दलित व पिछड़े वर्गों के लोग भी इन्हीं उपरोक्त कारणों से शामिल हुए। वैसा ही उदाहरण दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में कष्टमय व एकाकी जीवन बिताने वाले तिब्बती बौद्धों का भी है। उन्हें सुविधामय मैदानी क्षेत्रों में प्रचलित साधारण तंत्र की अपेक्षा पंचमकारी तंत्र ही अधिक उपयुक्त लगा, इसीलिए यह वहां आज भी अच्छी तरह से जिन्दा है। चाईनी ताओ धर्म में तो एक यौनसनकी साधु को ही आदर्श साधु बताया गया है। वास्तव में जब से पंचमकारों का तंत्र से अलगाव हुआ, तब से ही आध्यात्मिकता का पतन प्रारंभ हो गया। पंचमकारों को उत्पथगामियों का आचार बताया गया। इससे हुआ यह कि पंचमकारों की शक्ति उत्पथगामियों को ही मिलती रही, और वे उससे पुष्ट होते रहे। धीरे-२ करके सारी धरती उत्पथगामियों से परिपूर्ण हो गई। दूसरी ओर आध्यात्मिकता आवश्यक शक्ति के बिना क्षीण होती गई, क्योंकि पंचमकारों को उससे दूर रखा गया। आजकल पंचमकारी तंत्र को तो गलत बोला जाता है, वैसे पंचमकारों का उपयोग धड़ल्ले से व बिना किसी रोक-टोक के खुल्लम-खुल्ला हो रहा है, आध्यात्मिकता के लिए नहीं, अपितु अंधी भौतिकता के लिए। इससे सिद्ध होता है कि आज असली तांत्रिकों की समाज को सख्त आवश्यकता है।

तंत्र एक विद्रोही सम्प्रदाय की तरह

प्रेमयोगी वज्र के साथ भी कुछ-२ ऐसा ही हुआ। वह भी आम जनमानस की तंत्रपद्धतियों को अपनाता था। परन्तु उससे उसका आध्यात्मिक विकास बहुत धीरे-२ हो रहा था। जब बहुत लम्बे समय तक भी उसे कुण्डलिनीजागरण की झलक की आशा तक भी नहीं मिली, तब वह आम अध्यात्मिक जनमानस के विरुद्ध बागी जैसा हो गया। उससे उसका बहुत अपमान होने लगा। उसका विरोध भी तांत्रिक पंचमकारों के सेवन के रूप में बढ़ता ही जा रहा था। ये दोनों कार्य-कारण एक दूसरे को बढ़ाते जा रहे थे। अपमान से विरोध व विरोध से अपमान। यह चक्र तब तक चलता रहा, जब तक उसे कुण्डलिनीजागरण की झलक नहीं मिल गई। उससे वह संतुष्ट होकर शांत हो गया, और पंचमकारी तंत्र के ऊपर उसका विश्वास बढ़ गया।

योग और तंत्र वस्तुतः एक ही चीज है

वास्तव में योग (आम आध्यात्मिक तांत्रिक पद्धतियों सहित) व तंत्र (पंचमकारी योग) एक ही हैं, केवल प्रचंडता के स्तर में ही अंतर है। पंचमकारी योग से साधारण योग की अपेक्षा कुण्डलिनी अधिक प्रचंड रहती है। अतः एक बुद्धिमान तांत्रिक व्यक्ति दोनों का समयानुसार आश्रय लेता रहता है। दोनों में कुछ भी विरोध नहीं है। तांत्रिक तो सभी आध्यात्मिक लोग हैं, पर पंचमकारी तांत्रिक को ही तांत्रिक कहने का प्रचलन है। उसे हम पंचमकारी साधु भी कह सकते हैं, क्योंकि साधारण साधु व पंचमकारी साधु के बीच में तत्त्वतः कोई अंतर नहीं है, कुण्डलिनी की अभिव्यक्ति के स्तर को छोड़कर।

तंत्र सात्विक धर्मों (हिंदु, जैन, बौद्ध आदि) का सहयोगी ही है, विरोधी नहीं

ऐसा प्रतीत होता है कि तंत्र में मैथुन मकार ही सबसे प्रमुख है, क्योंकि इसीसे कुण्डलिनी को आश्चर्यजनक बल प्राप्त होता है। अन्य मकार तो केवल आवश्यकतानुसार इस मुख्य मकार के सहायक ही हैं। अन्य पंचमकारी धर्मों को तो मैं तंत्र का ही एक रूपांतरित स्वरूप मानता हूँ। उनमें जो शक्ति विद्यमान है, और जिसके प्रति अधिकाँश लोग आकर्षित होते हैं, वह पंचमकारिक तांत्रिक शक्ति ही प्रतीत होती है। परन्तु सात्विक हिन्दु धर्म / तंत्र का विरोध करके वे विरोधी धर्म आध्यात्मिक लाभ की प्राप्ति नहीं करा सकते, अपितु उल्टा हानि ही कराते हैं, यह बात तो तय है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि यह सिद्धांत है कि पंचमकार तभी सफल होते हैं, यदि वे सात्विक तंत्र / योग / धर्म के सान्निध्य में रहें। इससे दोनों पद्धतियों को आध्यात्मिक व भौतिक, दोनों प्रकार के लाभ मिलते हैं। अन्यथा पंचमकार पापों के भण्डार ही तो हैं। अतः सभी धर्मों के सहयोगात्मक सहअस्तित्व में ही सबका भला है। स्वर्णसंज्ञक या आकर्षक व्यक्तित्व / रंग-रूप वाले हिंदु पंडितों के लिए इसीलिए अनुष्ठानपरक, निस्स्वार्थी, मानवतापूर्ण, प्रेमपूर्ण, संतोषी, सामाजिक व अहिंसावादी होकर रहने का निर्देश दिया गया है, ताकि उनमें अद्वैतभाव व अनासक्तिभाव के साथ-२ एक दिव्य तेज व आकर्षण भी विद्यमान रहे। तभी तो अन्य आम या पंचमकारी लोग उन्हें गुरु बना कर उनके रूप की कुण्डलिनी को अपने मन में पुष्ट कर सकते हैं। तभी पंचमकारों की शक्ति कुण्डलिनी को लगेगी, अन्यथा वह उनके लिए नरक का रास्ता ही साफ करेगी।

तंत्र के मूल के बारे में विविध विचार

कई स्थानों पर तो पंचमकारों का सेवन संकेतमात्र या औपचारिकता मात्र के लिए इसलिए निर्दिष्ट किया गया है, ताकि किसी को यह अहंकार न होए कि मैं बहुत शुद्ध हूँ, और साथ में उत्तम प्रकार का अद्वैतभाव भी बना रहे। तंत्र में यह सिद्धांत भलीभांति ध्यान में रखा गया है कि कर्म का फल तो मिल कर ही रहेगा, इसलिए पंचमकारों के प्रयोग में बहुत संयम व सावधानी बरती जाती है। कई स्थानों पर इसलिए उनका प्रयोग बताया गया है, ताकि हिंसक या राक्षस प्रकृति के लोगों को सही ढंग से खाना-पीना व भोग-विलास करना सिखाया जा सके, और उनके भोग-विलास के अन्दर अध्यात्म का बीज डालकर उन्हें भी अध्यात्म की ओर मोड़ा जा सके। बाद में धीरे-२ वे खुद सुधर जाते हैं। परन्तु कुछ भी हो, पंचमकारी तंत्र की आश्चर्यजनक शक्ति को नकारा नहीं जा सकता। सिद्ध तांत्रिक तो यहां तक कहते हैं कि तंत्र विशेषकर यौनतंत्र के बिना आत्मज्ञान को प्राप्त ही नहीं किया जा सकता है।

तंत्र के बारे में अन्य रोचक तथ्य

तंत्र के बारे में और भी बहुत से रोचक तथ्य विद्यमान हैं। तंत्रसमाज को गुह्य समाज भी कहते हैं। कई तो उनमें महान ब्राम्हण पंडित भी शामिल हो गए थे। कई तांत्रिकों की तो उनकी अपनी बहन ही उनकी तांत्रिक गुरु थी। इस्लाम में भी अपनी बहन से (यद्यपि सहोदर बहन से या पिता की पत्नी से पैदा हुई के साथ नहीं) विवाह की अनुमति है। इससे कुछ अंदाजा लगता है कि इस्लाम के मूल में कहीं न कहीं पंचमकारी तंत्र विद्यमान है। काबा में जिस काले पत्थर को चूमने का रिवाज है, उसे अधिकाँश लोग शिवलिंग ही मानते हैं। भगवान शिव तो तंत्रमार्ग के आदि प्रवर्तक हैं ही। विषमवाही तंत्र के मामले में तो यह भी माना गया है कि तांत्रिक प्रेमिका जितनी अधिक बदसूरत या अनाकर्षक हो, वह उतनी ही अधिक तंत्रसम्मत होती है, बशर्ते कि वह तांत्रिक गुणों से संपन्न हो। ऐसा इसलिए, क्योंकि उसमें अहंकार नहीं होता, जिससे वह दूसरों / गुरु के रूप की कुण्डलिनी को अपने ऊपर आसानी से पनपने देती है। विषमवाही तंत्र का अर्थ है कि मानसिक कुण्डलिनी छवि किसी और की (गुरु आदि की) होती है, जबकि कुण्डलिनीवाहक तो तांत्रिक प्रेमिका ही होती है। समवाही तंत्र का अर्थ है कि मानसिक कुण्डलिनी छवि भी तांत्रिक प्रेमिका के रूप की होती है, और कुण्डलिनी-वाहक भी वही होती है। समवाही तंत्र में सांकेतिक / अप्रत्यक्ष तांत्रिकमैथुन अधिक कारगर है, परन्तु विषमवाही तंत्र में पूर्ण / स्पष्ट / प्रत्यक्ष तांत्रिकमैथुन क्रिया। इसीलिए अधिक से अधिक यौनाकर्षण उत्पन्न करने के लिए समवाही

तांत्रिका आकर्षक होनी चाहिए। समवाही व विषमवाही नाम के तंत्र के दो प्रकार मैंने इसी मेजबान वेबसाईट पर प्रेमयोगी वज्र के अनुभवात्मक विवरण में देखे, अन्य स्थान पर नहीं, यद्यपि तंत्र में यह प्रचलित धारणा है कि पिछड़े वर्ग की महिलाएँ प्रत्यक्ष तांत्रिकसम्बन्ध के लिए सर्वोत्तम होती हैं। इससे प्रेमयोगी वज्र का कथन स्पष्ट हो जाता है। कहा जाता है कि एक बार एक प्रख्यात तांत्रिक-गुरु की बदसूरत व काली तांत्रिक प्रेमिका का उनके शिष्य ने उपहास उड़ाया था। उससे नाराज होकर उस तांत्रिक-प्रेमिका ने उसको उसके जीवनकाल में आत्मज्ञान की प्राप्ति न होने का श्राप दिया। उससे वैसा ही हुआ।

अब हम तंत्र व इस्लाम के बीच समानता पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

तंत्र व इस्लाम की शुरुआत लगभग एकसाथ हुई। दोनों में ही संसार-त्याग को अस्वीकार किया गया है, और सांसारिक प्रवृत्ति पर जोर दिया गया है। दोनों में ही स्त्री को महत्त्व दिया गया है। खतना के पीछे भी तान्त्रिक सिद्धांत ही प्रतीत होता है। इस्लाम में मौलवी के द्वारा हलाला करने की रिवाज भी तंत्र की उस प्रथा का विकृत रूप प्रतीत होती है, जिसमें गुरु व शिष्य की संयुक्त तांत्रिक-प्रेमिका होती है। दोनों ही साधना-पथ सभी सर्वसाधारण व शुद्धि-बुद्धि से रहित लोगों को भी मुक्ति प्रदान करने के लिए बनाए गए हैं। तांत्रिक नाथ सम्प्रदाय के बहुत से गुरुओं को बहुत से मुसलमान अपना भी गुरु मानते हैं। तांत्रिक गुरुओं को पीर बाबा भी कहा जाता है। जिस तरह दक्षिणपंथी, हिन्दुओं के शुद्धिवादी हैं, उसी तरह सूफी साधना-पथ इस्लाम में शुद्धिवादी व नरमपंथी विचारधारा है। अधिकांशतः, हिन्दु धर्म के दक्षिणतंत्र व वामतंत्र को एक-दूसरे का विरोधी बताया जाता है। परन्तु प्रेमयोगी वज्र के तांत्रिक अनुभव के आधार पर मैंने इस लेख में यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि वामतंत्र व दक्षिणतंत्र आपस में विरोधी नहीं, अपितु सहयोगी हैं। साधारण तांत्रिक पद्धतियों को दक्षिणतंत्र कह लो, व पंचमकारी तंत्र को वामतंत्र। इसी तरह हिन्दु धर्म व इस्लाम धर्म भी एक दूसरे के सहयोगी ही सिद्ध हुए, क्योंकि वृहद् परिपेक्ष्य में हिन्दु धर्म को दक्षिणतंत्र एवं इस्लाम को वामतंत्र कह लो। इसलिए दोनों के बीच में वैमनस्य या कटुता के लिए कोई स्थान नहीं है। दोनों ही धर्म एक-दूसरे से घृणा करके अनजाने में ही एक दूसरे से प्रेम कर रहे होते हैं। परन्तु उससे पूरा काम नहीं चलता। फिर क्यों न ये दोनों सीधे तौर पर एक-दूसरे से प्रेम करें, जिससे वे एक-दूसरे की शक्ति को और अधिक मात्रा में व

अधिक सकारात्मकता के साथ प्राप्त कर सकें। विचारों में भिन्नता तो मानवमात्र का स्वभाव है ही, परन्तु उससे आपसी प्रेम व सहयोग पर दुष्प्रभाव नहीं पढ़ना चाहिए। यदि उन्हें अपने प्राचीन धर्मशास्त्रों में संशोधन करने की आवश्यकता पड़े, तो मानवता के हित में धर्मसभा या सर्वधर्मसभा बैठाकर कर लेना चाहिए। मैं यहाँ स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यहाँ पर सभी धर्मों की बात हो रही है, किसी विशेष धर्म की नहीं। सभी को अमानवीयता, कट्टरता व घृणा से भरे हुए शब्दों में इस तरह से संशोधन करने पर विचार करना चाहिए, जिससे सभी धर्मों का सम्मान भी बना रहे, और जमाने के अनुसार उनमें संशोधन भी हो जाएं। उदाहरण के लिए जब से हिंदु धर्म में बलि प्रथा का विरोध होने लगा, तब से ही प्रतीतात्मक रूप में नारियल की बलि दी जाती है। तंत्र में कुण्डलिनी / गुरु के नाम पर पंचमकारों का सेवन किया जाता है, तो इस्लाम में अल्लाह (ईश्वर) के नाम पर, यद्यपि दोनों कुछ समानता साझा करते हैं। वास्तव में निराकार ईश्वर के निरंतर ध्यान से भी कुण्डलिनी ही पुष्ट होती है, यह रहस्य सभी को पता नहीं है। परन्तु कट्टर इस्लाम में पंचमकारों में मानव के प्रति हिंसा व झूठ-फरेब को भी सम्मिलित किया गया है। तुलनात्मक रूप से हल्के स्तर पर ऐसा हिन्दु धर्म व इसाई धर्म में भी हुआ, यद्यपि अधिकाँश मामलों में यह कहा जाता है कि ऐसा प्रतिक्रियास्वरूप हुआ। अब पुराने जमाने में इसकी क्या जरूरत पड़ी होगी, यह स्पष्टतया कह नहीं सकते, परन्तु आज के शिक्षित व मानवतापूर्ण युग में यह जरा भी प्रासंगिक नहीं है, ओर पूरी तरह से त्याज्य है। हालांकि घोर आत्मरक्षा के लिए (जान बचाने के लिए) इनके प्रयोग पर विरले मामलों में विचार किया जा सकता है। असली त्याग तो भावना का त्याग है। सुप्त भावना भी काम करती रहती है। इसलिए तत्संबंधित संकल्पों की दृढ़ अभिव्यक्ति से अमानवता का खंडन करना चाहिए, तभी सुप्त भावना (संस्कार) नष्ट होती है। ये सभी तथ्य इस वेबसाईट के नायक व एक तांत्रिक, प्रेमयोगी वज्र के अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर लिखे गए हैं, यह मात्र खाली थ्योरी नहीं है। प्रेमयोगी वज्र एक आत्मज्ञानी है, व उसकी कुण्डलिनी भी जागृत हो चुकी है। उसे भी तभी आध्यात्मिक सफलता मिली, जब उसने लगभग 25 वर्ष पूर्व अमानवता का सार्वजनिक रूप से कड़े शब्दों में खंडन किया। इसे इसी मेजबान वेबसाइट पर स्थित वेबपेज के निम्न लिंक पर पढ़ा जा सकता है- कुण्डलिनीयोग, यौनयोग व आत्मज्ञान का अनुभूत विवरण

तंत्र को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए, क्योंकि भ्रष्ट होने पर यह नरक के द्वार भी खोल सकता है

एक स्पष्टीकरण यहाँ युक्तियुक्त प्रतीत हो रहा है। यदि ईश्वर की खिलाफत करने वाले बन्दे को ईश्वर के स्मरण के साथ यातना दी जाए जेहाद आदि के नाम पर, तब उसके बदले में जो यातनारूपी फल उस यातना देने वाले को मिलेगा, उसके साथ स्वयं ही ईश्वर का स्मरण बढ़ते समय के साथ दुगुने या अधिक रूप में हो जाएगा, क्योंकि कर्म व उसका फल दोनों आपस में जुड़े हुए होते हैं। फिर यदि वह यातनाफल सहते हुए मर ही जाए, तब तो सीधा मुक्त हो गया, क्योंकि सनातन धर्म में भी कहा है कि मरते समय जिसका स्मरण किया जाए, वही रूप मरणोपरांत मिलता है। परन्तु यदि ऐसा नहीं हुआ, तो नरक का द्वार खुला है। यह अलग बात है कि उसे नरक में भी ईश्वर का स्मरण होता रहेगा। इसलिए बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। इसी तरह, अब जब कोई ईश्वर के नाम पर पीड़ा सहेगा, तो स्वाभाविक है कि उसमें भी ईश्वर का स्मरण जागेगा, जिससे वह भी ईश्वर को प्रिय हो जाएगा। इससे पीड़ा देने वाले का व पीड़ा सहने वाले का, इन दोनों का एकसाथ भला होगा। अतः स्पष्ट है कि इसमें पीड़ा सहने वाले से अधिक बुरा तो पीड़ा देने वाले का होगा, क्योंकि यदि वह तंत्र का आचरण सही ढंग से नहीं कर पाया, तो बुरे कर्म से पैदा होने वाली नरकरुपी तलवार सदैव उसके ऊपर लटकी रहती है। क्योंकि यह महान कर्म-सिद्धांत है कि जब तक कोई मुक्त नहीं हो जाता, तब तक कर्म का फल तो मिल कर ही रहेगा। इसीलिए इसमें 'सबकुछ' या 'कुछ भी नहीं' होता है, बीच वाले स्तर नहीं होते। यही तंत्र का भी, विशेषतः अतिवादी तंत्र का भी सिद्धांत है। यही एक मुख्य कारण है कि महान इस्लाम एक अतिवादी तंत्र की तरह लगता है। परन्तु दुर्भाग्य से अतिवादी तंत्र के डर के कारण ही बहुत से लोग साधारण तंत्र से भी दूर रहने लगे, जिससे वे एक विज्ञानमिश्रित आध्यात्मिक पद्धति के लाभों से अछूते रहने लगे। प्रेमयोगी वज्र ने इसे अपने अनुभव से सिद्ध किया। उसने कुण्डलिनी के ध्यान के साथ मांसाहार किया। जब उससे उसे छिटपुट चोट के रूप में उसका फल मिला, तब एकदम से उसके मस्तिष्क में वह कुण्डलिनी प्रचंड होकर प्रकट हो गई, और उससे जुड़ा हुआ माँसभक्षण का पापकर्म भी उसे स्मरण हो आया। अब जो कहा है कि अल्लाह के बन्दे को परेशान नहीं करना चाहिए, वह भी सनातन धर्म के अनुसार ही है, जिसमें कहा गया है कि ईश्वरभक्त का बुरा करने वाले को

ईश्वर कभी क्षमा नहीं करते। वास्तव में सभी धर्म एकरूप ही हैं, केवल समझने भर का फर्क है। इसी तरह, एक बार प्रेमयोगी वज्र ने कुण्डलिनीध्यान / अद्वैतपूर्ण जीवन के साथ हल्का-फुल्का राजद्रोह किया। वास्तव में वह राजद्रोह नहीं था, अपितु राजद्रोह का अभिनय मात्र ही था मूलतः, क्योंकि उसमें अहिन्सापूर्वक सर्वलोकहित छुपा हुआ था। जब उसे सजा मिली, तो उसने दिव्य प्रेरणा से सजा से बचने का पूरा प्रयास किया, जिसमें उसे अनौखी सफलता भी मिली। जब उसे उसकी हल्की-फुल्की सजा मिली, तब वह उसे ईनाम की तरह लगी, और उसके मन में कुण्डलिनी-ध्यान / अद्वैतभाव पहले से भी प्रचंड हो गया मूलकर्म के स्मरण के साथ, जिससे उसका थोड़े से योग के प्रयास के साथ कुण्डलिनीजागरण हो गया। साथ में कहें, जैसे योग के समय शारीरिक जोड़ों पर सांसों / मुड़ने / गति आदि के प्रभाव से उत्पन्न संवेदना के ऊपर कुण्डलिनी आरोपित होकर प्रचंड हो जाती है, उसी प्रकार धर्मसम्मत वेदना आदि के समय ईश्वर, संवेदना के ऊपर आरोपित होकर अति स्पष्ट हो जाते हैं।

कोई भी, किसी से भी, कभी भी घृणा कर ही नहीं सकता; प्रेम ही सत्य है

तभी तो मैं कहता हूँ कि कोई भी किसी से कभी घृणा कर ही नहीं सकता। यदि एक आदमी दूसरे आदमी से संपर्क स्थापित करता है, तो वह हर हालत में उससे प्रेम ही करता है। यदि वह उसका भला करता है, तो उसको प्रत्यक्ष रूप से आगे बढ़ने का मौक़ा देकर, और यदि वह बुरा करता है, तो उसके पापों को नष्ट करके अप्रत्यक्ष रूप से। यद्यपि पहले वाला तरीका अधिक प्रशंसनीय व व्यावहारिक है। दूसरे तरीके का प्रयोग यदि मजबूरीवश करना ही पड़े, तो हल्के या अधिक से अधिक मध्यम स्तर तक ही, अतिवादी स्तर तक कभी नहीं।

इतिहास गवाह है कि मक्का में रहने वाले मुस्लिम मूर्तिपूजक थे। इसका सीधा सा मतलब है कि वे तंत्रयोगी थे। क्योंकि वहां के लोग मांस-मदिरा, यौन-भोग आदि पंचमकारों का सेवन तो वैसे भी पहले से करते आए हैं। इनके साथ मूर्तिपूजन जुड़ जाए, तो वह स्वतः ही तंत्र बन जाता है।

अमानवतावादी धर्म कैसे बने

हो सकता है कि प्राचीनकाल में आम जनजीवन में लड़ाई-झगड़ों की, युद्धादि की व पशु आदि के प्रति हिंसाओं की बहुतायत हुआ करती थी, जिनका निवारण संभवतः असंभव था। इसलिए उन्हें ही धर्म का आवरण पहना कर शुद्ध व मुक्तिकारी कर दिया गया। क्योंकि हिंसाओं व अशुद्धियों से भरे हुए वातावरण में शुद्ध वैदिक क्रियाएं लाभ के स्थान पर हानि पहुंचा सकती थीं, इसीलिए उनके प्रति घृणा को फैलाया गया। बाद में स्थिति बदल गई, परन्तु उनके बनाए गए नियम सदा के लिए हो गए, क्योंकि वे निष्ठा व विश्वास से लिखित रूप में पक्के कर दिए गए थे। उस समय यातायात व संचार की भी संतोषजनक सुविधाएं नहीं होती थीं। इसलिए एक छोटे से दुष्कर / विशेष परिस्थिति वाले क्षेत्र में सीमित लोग समझते थे कि पूरी दुनिया उन्हीं के जैसी थी। इसीलिए वे अपनी विचारधारा को पूरी दुनिया में फैलाने की मंशा रखते थे।

इसी तरह पुराने समय में तंत्र में भी विरले मामलों में नर-बलि की प्रथा थी, जो अब नहीं है। दोनों में ही शरीर-सुख को अधिक महत्त्व दिया गया है। दोनों में ही हठयोग के आसन हैं। दोनों ही पलायनवादी नरम हिंदुत्व के विरोधस्वरूप ही बने थे। यद्यपि तंत्र इस्लाम की अपेक्षा नरम हिंदुत्व के प्रति बहुत अधिक उदारवादी बना रहा, और उसके बीच में पूरी तरह से घुल-मिल कर जीवित बना रहा।

यहाँ हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि इस्लाम में 5 मकार न होकर 4 मकार ही हैं, कम या अधिक रूप से। उसमें मदिरा निषिद्ध है। यद्यपि मैं तो माँस के प्रभाव को मदिरा के प्रभाव के समकक्ष ही मानता हूँ। दोनों ही तमोगुणस्वरूप हैं। साथ में यह भी स्पष्ट करना चाहता हूँ कि वे पञ्चमकार वहां तंत्र की तरह स्पष्ट व अच्छी तरह से परिभाषित न होकर पञ्चमकार की तरह ही प्रतीत होते हैं, क्योंकि उनका प्रभाव पञ्चमकारों की तरह ही ईश्वरीय शक्ति की ओर ले जाने वाला है।

उपरोक्त तथ्यों के लिए अन्य प्रामाणिक लेख निम्नोक्त लिंक पर पढ़े जा सकते हैं।

At first glance, Islam and Tantrism might seem an unlikely pair for comparison, the former known for its austere simplicity and uncompromising monotheism, the latter presenting a plethora of rituals, mantras and deities. But looking beneath the surface at the underlying philosophical principles will reveal that the two share much in common——

http://greatvashikaranspecialist.com/islamic-tantra

In Sanskrit language Allah, Akka and Amba are synonyms. They signify a goddess or mother. The term 'ALLAH' forms part of Sanskrit chants invoking goddess Durga, also known as Bhawani, Chandi ——

अल्लाह संस्कृत का शब्द है- स्क्रिब्ड

अंततः धार्मिक उन्माद से बचाने वाली, व वास्तविक मानवता-धर्म सिखाने वाली संक्षिप्त जानकारी इसी वेबसाईट पर (जिसका नायक प्रेमयोगी वज्र है) प्राप्त की जा सकती है, और विस्तृत जानकारी वाली पुस्तक को निम्नलिखित लिंक पर प्राप्त किया जा सकता है।

यदि आपको इस पोस्ट से कुछ लाभ प्रतीत हुआ, तो कृपया इसके अनुसार तैयार की गई उपरोक्त अनुपम ई-पुस्तक (हिंदी भाषा में, 5 स्टार प्राप्त, सर्वश्रेष्ठ व सर्वपठनीय उत्कृष्ट / अत्युत्तम / अनौखीरूप में निष्पक्षतापूर्वक समीक्षित / रिव्यूड) को यहाँ क्लिक करके डाऊनलोड करें। यदि मुद्रित पुस्तक ही आपके अनुकूल है, तो भी, क्योंकि इलेक्ट्रोनिक डीवाईसिस / फोन आदि पर पुस्तक का निरीक्षण करने के उपरांत ही उसका मुद्रित-रूप / print version मंगवाना चाहिए, जो इस पुस्तक के लिए इस लिंक पर उपलब्ध है। इस पुस्तक की संक्षिप्त रूप में सम्पूर्ण जानकारी आपको इसी पोस्ट की होस्टिंग वेबसाईट / hosting website पर ही मिल जाएगी। धन्यवाद।

वैबपोस्ट-2(webpost-2)- द्वैत और अद्वैत दोनों एक-दूसरे के पूरक के रूप में

द्वैत क्या है?

दुनिया की विविधताओं को सत्य समझ लेना ही द्वैत है। दुनिया में विविधताएं तो हमेशा से हैं, और सदैव रहेंगी भी, परन्तु वे सत्य नहीं हैं। दुनिया में जीने के लिए विविधताओं का सहारा तो लेना ही पड़ता है। फिर भी उनके प्रति आसक्ति नहीं होनी चाहिए।

अद्वैत क्या है?

उपरोक्तानुसार, दुनिया की विविधताओं के प्रति असत्य बुद्धि या अनासक्ति को ही अद्वैत कहते हैं। वास्तव में द्वैताद्वैत को ही संक्षिप्त रूप में द्वैत कहते हैं। अद्वैत अकेला नहीं रह सकता। यह एक खंडन-भाव है। अर्थात यह द्वैत का खंडन करता है। यह खंडन "द्वैत" से पहले लगने वाले "अ" अक्षर से होता है। जब द्वैत ही नहीं रहेगा, तब उसका खंडन कैसे किया जा सकता है? इसलिए जाहिर है कि द्वैत व अद्वैत दोनों साथ-२ रहते हैं। इसीलिए अद्वैत का असली नाम द्वैताद्वैत है।

एक ही व्यक्ति के द्वारा द्वैत व अद्वैत का एकसाथ पालन

ऐसा किया जा सकता है। यद्यपि ऐसा जीवनयापन विरले लोग ही ढंग से कर पाते हैं, क्योंकि इसके लिए बहुत अधिक शारीरिक व मानसिक बल की आवश्यकता पड़ती है। इससे लौकिक कार्यों की गुणवत्ता भी दुष्प्रभावित हो सकती है, यदि सतर्कता के साथ उचित ध्यान न दिया जाए।

द्वैताद्वैत को बनाए रखने के लिए श्रमविभाजन

ऐसा विकसित सभ्यताओं में होता है, व बुद्धिमान लोगों के द्वारा किया जाता हहै। वैदिक सभ्यता भी इसका एक अच्छा उदाहरण है। इसमें द्वैतमयी लौकिक कर्मों का उत्तरदायित्व एक भिन्न श्रेणी के लोगों पर होता है, और अद्वैतमयी धार्मिक क्रियाकलापों का उत्तरदायित्व एक भिन्न श्रेणी के लोगों पर। वैदिक संस्कृति की जाति-परम्परा इसका एक अच्छा उदाहरण है। इसमें ब्राम्हण श्रेणी के लोग पौरोहित्य (धार्मिक कार्य) का कार्य करते हैं, और अन्य शेष तीन श्रेणियां विभिन्न लौकिक कार्य करती हैं।

द्वैताद्वैत में श्रम-विभाजन के लाभ

इससे व्यक्ति पर कम बोझ पड़ता है। उसे केवल एक ही प्रकार का भाव बना कर रखना पड़ता है। इससे परस्पर विरोधी भावों के बीच में टकराव पैदा नहीं होता। इसलिए कार्य की गुणवत्ता भी बढ़ जाती

है। वैसे भी दुनिया में देखने में आता है कि जितना अधिक द्वैत होता है, कार्य उतना ही अच्छा होता है। अद्वैतवादी के अद्वैतभाव का लाभ द्वैतवादी को मिलता रहता है, और द्वैतवादी के द्वैतभाव का लाभ अद्वैतवादी को मिलता रहता है। यह ऐसे ही होता है, जैसे एक लंगड़ा और एक अंधा एक-दूसरे की सहायता करते हैं। यद्यपि इसमें पूरी सफलता के लिए दोनों प्रकार के वर्गों के बीच में घनिष्ठ व प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बने रहने चाहिए।

गुरु-शिष्य का परस्पर सम्ब्बंध भी ऐसा ही द्वैताद्वैत-सम्बन्ध है

प्रेमयोगी वज्र को भी इसी श्रमविभाजन का लाभ मिला था। उसके गुरू (वही वृद्धाध्यात्मिक पुरुष) एक सच्चे ब्राम्हण-पुरोहित थे। प्रेमयोगी वज्र स्वयं एक अति भौतिकवादी व्यक्ति तथा। दोनों के बीच में लम्बे समय तक नजदीकी व प्रेमपूर्ण सम्बन्ध बने रहे। इससे प्रेमयोगी वज्र का द्वैत उसके गुरु को प्राप्त हो गया, और गुरु का अद्वैत उसको प्राप्त हो गया। इससे दोनों का द्वैताद्वैत अनायास ही सिद्ध हो गया, और दोनों मुक्त हो गए। इसके फलस्वरूप प्रेमयोगी वज्र को क्षणिक आत्मज्ञान के साथ क्षणिक कुण्डलिनीजागरण की उपलब्धि भी अनायास ही हो गई। साथ में, उसकी कुण्डलिनी तो उसके पूरे जीवन भर क्रियाशील बनी रही।

यही द्वैताद्वैत समभाव ही सर्वधर्म समभाव है

कोई धर्म द्वैतप्रधान होता है, तो कोई धर्म अद्वैतप्रधान होता है। इसीलिए दोनों प्रकार के धर्मों के बीच में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बने रहने चाहिए। इससे दोनों एक-दूसरे को शक्ति प्रदान करते रहते हैं। इससे वास्तविक द्वैताद्वैत भाव पुष्ट होता है। विरोधी भावों के बीच में परस्पर समन्वय ही वैदिक संस्कृति की सफलता के पीछे एक प्रमुख कारण था। शरीरविज्ञान दर्शन में इसका विस्तार के साथ वर्णन है।

वैबपोस्ट-3(webpost-3)- पुलवामा के आतंकी हमले में शहीद सैनिकों के लिए सैद्धांतिक श्रद्धांजलि

इतिहास गवाह है कि हमलावर ही अधिकाँश मामलों में विजयी हुआ है। यदि वह जीतता है, तब तो उसकी कामयाबी सबके सामने ही है, परन्तु यदि वह हारता है, तब भी वह कामयाब ही होता है। इसके पीछे गहरा तांत्रिक रहस्य छिपा हुआ है। हमला करने से पहले आदमी ने मन को पूरी तरह से तैयार किया होता है। हमले के लिए मन की पूरी तैयारी का मतलब है कि वह मृत्यु के भय को समाप्त कर देता है। मृत्यु का भय वह तभी समाप्त कर पाएगा, यदि उसे जीवन व मरण, दोनों बराबर लगेंगे। जीवन-मरण उसे तभी बराबर लगेंगे, जब वह मृत्यु में भी जीवन को देखेगा, अर्थात मृत्यु के बाद जन्नत मिलने की बात को दिल से स्वीकार करेगा। दूसरे शब्दों में, यही तो अद्वैत है, जो सभी दर्शनों व धर्मों का एकमात्र सार है। उसी अद्वैतभाव को कई लोग भगवान्, अल्लाह आदि के नाम से भी पुकारते हैं। तब सीधी सी बात है कि हरेक हमलावर अल्लाह का बन्दा स्वयं ही बन जाता है, चाहे वह अल्लाह को माने, या ना माने। अगर तो वह भगवान या अल्लाह को भी माने, तब तो सोने पे सुहागा हो जाएगा, और दुगुना फल हासिल होगा।

अब हमला झेलने वाले की बात करते हैं। वह मानसिक रूप से कभी भी तैयार नहीं होता है, लड़ने व मरने-मारने के लिए। इसका अर्थ है कि वह द्वैतभाव में स्थित होता है, क्योंकि वह मृत्यु से डरता है। वह जीवन के प्रति आसक्ति में डूबा होता है। इसका सीधा सा प्रभाव यह पड़ता है कि वह खुल कर नहीं लड़ पाता। इसलिए अधिकाँश मामलों में वह हार जाता है। यदि कभी वह जीत भी जाए, तो भी उसका डर व द्वैतभाव बना रहता है, क्योंकि विजयकारक द्वैत पर उसका विश्वास बना रहता है। सीधा सा अर्थ है कि वह हार कर भी हारता है, और जीत कर भी हार जाता है। बेहतरी से अचानक का हमला झेलने में वही सक्षम हो सकता है, जो अपने मन में हर घड़ी, हर पल अद्वैतभाव बना कर रखता है। अर्थात जो मन से साधु-संन्यासी की तरह की अनासक्ति से भरा हुआ जीवन जीता है, समर्थ होते हुए भी हमले की शुरुआत नहीं करता, और अचानक हुए हमले का सर्वोत्तम जवाब भी देता है। वैसा आदमी तो भगवान को सर्वप्रिय होता है। तभी तो भारत ने हजारों सालों तक ऐसे हमले झेले, और हमलावरों को नाकों चने भी चबाए। तभी भारत में शुरू से ही धर्म का, विशेषतः अद्वैत-धर्म का बोलबाला रहा है। इसी धर्म-शक्ति

के कारण ही भारत को कभी भी किसी के ऊपर हमला करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। अपने धर्म को मजबूत करने के लिए हमला करने की आवश्यकता उन्हें पड़ती है, जो अपने दैनिक जीवन में शांतिपूर्वक ढंग से धर्म को धारण नहीं कर पाते। यह केवलमात्र सिद्धांत ही नहीं है, बल्कि तांत्रिक प्रेमयोगी वज्र का अपना स्वयं का अनुभव भी है। जीवन के हरेक पल को अद्वैत से भरी हुई, भगवान की पूजा बनाने के लिए ही उसने इस वेबसाईट को बनाया है।

अब एक सर्वोत्तम तरीका बताते हैं। यदि अद्वैत-धर्म का निरंतर पालन करने वाले लोग दुष्टों पर हमला करके भी अद्वैत-धर्म की शक्ति प्राप्त करने लग जाए, तब तो सोने पर सुहागे वाली बात हो जाएगी। विशेषकर उन पर तो हमला किया ही जा सकता है, जिनसे अपने को खतरा हो, और जो अपने ऊपर हमला कर सकते हों। हमारा देश आज ऐसे ही मोड़ पर है। यहाँ यह तरीका सबसे सफल सिद्ध हो सकता है। भारत के सभी लोगों को ऋषियों की तरह जीवन बिताना चाहिए। भारत के सैनिकों को भी ऋषि बन जाना चाहिए, और हर-हर महादेव के साथ उन आततायियों पर हमले करने चाहिए, जो धोखे से हमला करके देश को नुक्सान पहुंचाते रहते हैं। एक बार परख लिया, दो बार परख लिया, चार बार परख लिया। देश कब तक ऐसे उग्रपंथियों को परखता रहेगा?

आतंकवादियों के आश्रयस्थान के ऊपर जितने अधिक प्रतिबन्ध संभव हो, उतने लगा देने चाहिए, अतिशीघ्रतापूर्वक। उन प्रतिबंधों में शामिल हैं, नदी-जल को रोकना, व्यापार को रोकना, संयुक्त राष्ट्र संघ में आतंकवादी देश घोषित करवाना आदि-2।

एक सैद्धांतिक व प्रेमयोगी वज्र के द्वारा अनुभूत सत्य यह भी है कि जब मन में समस्या (कुण्डलिनी चक्र अवरुद्ध) हो, तभी संसार में भी दिखती है। यही बात यदि उग्रपंथी समझें, तो वे दुनिया को सुधारने की अंधी दौड़ को छोड़ दें।

भगवान करे, उन वीरगति-प्राप्त सैनिकों की आत्मा को शांति मिले।

इस पोस्ट से सम्बंधित अन्य पोस्टों को आप निम्नलिखित लिंक पर जाकर पढ़ सकते हैं-

http://demystifyingkundalini.com/2018/12/23/योग-व-तंत्र-एक-तुलनात्मक-अ

http://demystifyingkundalini.com/2018/07/18/religious-extremism

वैबपोस्ट-4(webpost-4)- योग से शारीरिक वजन को कैसे नियंत्रण में रखें

योग के साथ शारीरिक वजन घटता है। यहां तक कि मैंने देखा है कि एक दिन के भारी काम के साथ भी मुझे अपनी पेंट के साथ बेल्ट लगाने की जरूरत महसूस होने लगती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मैं दैनिक योग अभ्यास की आदत रखता हूं। जब मैंने कड़ी मेहनत की, तब उसके साथ किए गए नियमित योग-अभ्यास से मेरी भड़की हुई भूख बहुत कम हो गई। इसलिए उस कड़ी मेहनत के साथ हुई वसा-हानि / fat loss को पुनर्निर्मित / recover नहीं किया गया, जिसके परिणामस्वरूप मेरा वजन घट गया। नियमित योग-अभ्यास के बिना सामान्य लोग भारी काम के बाद बहुत अधिक खाते हैं, इस प्रकार वे अपनी खोई हुई वसा का तुरंत पुनर्निर्माण कर लेते हैं। योग-अभ्यास दैनिक और हमेशा के लिए जारी रखा जाना चाहिए। यदि कोई अपना अभ्यास थोड़े समय के लिए जारी रखता है, जैसे कि यदि 2 महीने के लिए कहें, तो उसे अपने शरीर के वजन में कमी का अनुभव होगा। लेकिन अगर वह उसके बाद व्यायाम करना बंद कर देता है, तो उसकी योग से निर्मित शारीरिक व मानसिक शक्ति के पास भूख को उत्तेजित करने के अलावा अन्य कोई काम नहीं रहता है। इसके कारण उसे बहुत भूख लगती है, और वह बहुत भोजन, खासतौर से उच्च ऊर्जा वाले खाद्य पदार्थों को खाता है। इसके परिणामस्वरूप उसके शरीर की वसा का पर्याप्त निर्माण हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उसके शरीर के वजन में एकाएक वृद्धि होती है, जो उसके पहले के मूल वजन को भी पार कर सकती है। तो निरंतर अभ्यास हमेशा जारी रखा जाना चाहिए। यह एक वैज्ञानिक और अनुभव से साबित तथ्य है कि खिंचाव वाली कसरतों / stretching exercises के अभ्यास से थोड़ी-बहुत कैलोरी जल जाती है। यद्यपि योग के अभ्यास से बड़ी मात्रा में कैलोरी जलाई नहीं जाती है, फिर भी ये अभ्यास शरीर को फिट, स्वस्थ और लचीला रखते हैं। यह किसी भी समय किसी भी प्रकार के साधारण या कठिन शारीरिक कार्य को कामयाबी व आसानी के साथ शुरू करने में मदद करता है, और व्यायामशाला के अभ्यास को भी अधिक कारगर बनाता है। इसके अलावा, यह पूरे शरीर में उचित अनुपात में रक्त के समान परिसंचरण में भी मदद करता है। इससे यह शरीर के रिमोट भंडारगृहों में जमा वसा की आसान निकासी में मदद करता है। उससे सभी कोशिकाओं को ऊर्जा के मुख्य स्रोत के रूप में वसा उपलब्ध हो जाती है। इसलिए शरीर भूख की कमी के लिए ऊर्जा की कमी का संदेश नहीं भेजता है, जिसके परिणामस्वरूप भारी भूख

के बावजूद भारी भूख की रोकथाम होती है। परंतु आम लोगों में भारी काम के एकदम बाद भारी भूख भड़क जाती है, जिससे वे अपने खोए हुए वजन की भरपाई एकदम से कर लेते हैं। योग कुछ खास नहीं है, बल्कि भौतिक व्यायाम, सांस लेने और केंद्रित एकाग्रता को बढ़ाने का एक सहक्रियात्मक संयोजन है। फोकसड एकाग्रता / focused concentration इसके लिए विचारों के लिए नियंत्रक वाल्व / controlling valve के रूप में काम करती है, अराजक विचारों की अचानक भीड़ को रोकती है, जिससे इस प्रकार पेरानोइया/ paranoia और दिमाग को झूलने / mind swinging से रोकती है। जब अवचेतन मन में संचित विचार बहुत उत्तेजित हो जाते हैं, तो उन्हें दिमाग के अंदर ध्यान की केंद्रित छवि द्वारा धीरे-धीरे और सुरक्षित रूप से मुक्त करके छोड़ा जाता रहता है। साथ में, उन विचारों को बाँझ और गैर-हानिकारक बना दिया जाता है, या दूसरे शब्दों में कहें तो दृढ़ता से उत्तेजित विचार ध्यान की कुण्डलिनी छवि की कंपनी के कारण स्वयं ही शुद्ध हो जाते हैं। यह छवि दिन-प्रतिदिन की सांसारिक गतिविधियों से उत्पन्न होने वाली अराजक मानसिक गतिविधियों पर भी जांच रखती है। इसके कारण योग-अभ्यास के लिए एक जुनूनी शौक सा उत्पन्न हो जाता है, और इसे दैनिक कार्यक्रम से कभी भी गायब नहीं होने देता है। कुंडलिनी छवि पर केन्द्रित एकाग्रता के बिना योग-अभ्यास के साथ, योग अभ्यास के लिए शौक जल्द ही खो जाता है, और विभिन्न छिपे हुए विचारों की अराजकता की वजह से दैनिक क्रियाकलाप भी गंभीर रूप से पीड़ित हो जाते हैं।

तांत्रिक तकनीक मानसिक कुंडलिनी छवि को मजबूत करने और इस तरह से योग के प्रति लगन को बढ़ाने के लिए एक और गूढ़ चाल है। इसके परिणामस्वरूप पूरे श्वास में वृद्धि होती है, जिससे पूरे शरीर में पोषक तत्वों से समृद्ध और अच्छी तरह से ऑक्सीजनयुक्त रक्त की आपूर्ति में वृद्धि हो जाती है। इससे यह शरीर के वजन पर भी जांच रखता है। दरअसल तंत्र प्राचीन भारतीय आध्यात्मिकता से अलग कोई स्वतंत्र रूप का अनुशासन नहीं है। तभी तो वेद-शास्त्रों में इसका कम ही वर्णन आता है, जिससे इस रहस्य से अनभिज्ञ लोग महान तंत्र की सत्ता को ही नकारने लगते हैं। यह आत्मजागृति की ओर एक प्राकृतिक और सहज दौड़ / प्रक्रिया ही है। यह तो केवल विभिन्न आध्यात्मिक प्रयासों से पुष्ट की गई कुण्डलिनी को जागरण के लिए अंतिम छलांग / escape velocity ही देता है। यदि किसी की बुद्धि के भीतर कोई आध्यात्मिक उद्देश्य और आध्यात्मिक उपलब्धि नहीं है, तो अराजक बाहरी दुनिया

के अंदर उपयोग में आ जाने के अलावा तांत्रिक शक्ति के लिए अन्य कोई रास्ता नहीं है। इसका मतलब है कि तांत्रिक तकनीक के लिए आवेदन से पहले कुंडलिनी छवि किसी के दिमाग में पर्याप्त रूप से मजबूत होनी चाहिए। तंत्र तो जागने के लिए कुंडलिनी को आवश्यक और अंतिम भागने की गति ही प्रदान करता है। यह आम बात भी सच है कि गुरु तांत्रिक साधना के साथ अवश्य होना चाहिए। वह गुरु दृढ़ता से चिपकने वाली मानसिक कुंडलिनी छवि के अलावा कुछ विशेष नहीं है। यही कारण है कि बौद्ध-ध्यान में, कई वर्षों के सरल सांद्रता-ध्यान के बाद ही एक योगी को तांत्रिक साधना लेने की अनुमति दी जाती है। लेकिन आज बौद्ध लोग, विषेशतः तिब्बती बुद्ध तंत्र सहित सभी रहस्यों को प्रकट करने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि अब वे लंबे समय से चल रहे बाहरी आक्रमण के कारण अपनी समृद्ध आध्यात्मिक विरासत को खोने से डर रहे हैं।

तंत्र के बारे में विस्तृत जानकारी इस वेबपोस्ट की स्रोत वेबसाईट / source website पर पढ़ी जा सकती है, व पूर्ण जानकारी के लिए निम्नांकित पुस्तक का समर्थन किया जाता है-

शरीरविज्ञान दर्शन- एक आधुनिक कुण्डलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा), एक अनुपम ई-पुस्तक (हिंदी भाषा में, 5 स्टार प्राप्त, सर्वश्रेष्ठ व सर्वपठनीय उत्कृष्ट / अत्युत्तम / अनौखीरूप में समीक्षित / रिव्यूड) को यहाँ क्लिक करके डाऊनलोड करें। यदि मुद्रित पुस्तक ही आपके अनुकूल है, तो भी, क्योंकि इलेक्ट्रोनिक डीवाईसिस / फोन आदि पर पुस्तक का निरीक्षण करने के उपरांत ही उसका मुद्रित-रूप / print version मंगवाना चाहिए, जो इस पुस्तक के लिए इस लिंक पर उपलब्ध है। धन्यवाद।

ई-रीडर व ई-बुक्स के बारे में विस्तार से जानने के लिए यहां क्लिक करें।

वैबपोस्ट-5(webpost-5)- गांधी जयंती के पावन अवसर पर

श्री मोहनदास कर्मचंद गांधी, एक शांतिपूर्ण भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और व्यावहारिकता से भरे हुए आदमी थे, न कि केवल एक सिद्धांतवादी। जो कुछ भी उन्होंने अपने जीवन में कहा, उसे व्यावहारिक रूप से साबित करके भी दिखाया। उन्होंने गीता का सरलीकृत अनुवाद तब किया, जब वे जेल में थे। वह संकलन हिंदी में “अनासक्ति योग” नामक पुस्तक के रूप में उभरा। उन्होंने गीता की शिक्षाओं को वैज्ञानिक और व्यावहारिक अर्थ में वर्णित किया है। उन्होंने इसमें पूरी तरह कार्यात्मक व व्यावहारिक मानव जीवन जीने के साथ अनासक्तिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने पर पूरा जोर दिया है। उन्होंने गीता के अंदर बसने वाले इस गहरे रहस्य को उजागर किया है। यद्यपि मैंने इसे स्वयं विस्तार से नहीं पढ़ा है, केवल इसकी प्रस्तावना ही पढ़ी है, लेकिन मैंने प्रेमयोगी वज्र द्वारा “शरीरविज्ञान दर्शन-एक आधुनिक कुंडलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा)” नामक किताब को अच्छी तरह से पढ़ा है, जो उपरोक्त पुस्तक का आधुनिक व तांत्रिक रूपान्तर ही प्रतीत होती है। प्रेमयोगी वज्र ने वैज्ञानिक रूप से साबित कर दिया है कि हर धर्म और दर्शन सहित सब कुछ हमारे अपने मानव शरीर के अंदर बसा हुआ है। यद्यपि इस सूक्ष्म शरीर-समाज के भीतर हमारी रोजमर्रा की मैक्रो सोसाइटी/स्थूल समाज के विपरीत पूर्ण अनासक्ति व अद्वैत का वातावरण विद्यमान है। इस रहस्य का अनावरण करने के लिए उन्होंने स्वास्थ्य विज्ञान से संबंधित ज्ञान का भी पूरी तरह से उपयोग किया है। नतीजतन, पुस्तक एक हिंदु-पुराण जैसी दिखती है, हालांकि तुलनात्मक रूप से एक अधिक समझपूर्ण, वैज्ञानिक, व्यापक व सर्वस्वीकार्य तरीके से। इस पुस्तक की सम्पूर्ण जानकारी यहां निम्नोक्त वेबपृष्ठ पर उपलब्ध है-

https://demystifyingkundalini.com/home-3/

आज स्वतंत्र भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्मदिवस भी है, इसलिए इन दोनों महापुरुषों को कोटि-2 नमन।

वैबपोस्ट-6(webpost-6)- शविद और ताओवाद

शविद (शरीरविज्ञान दर्शन) को ईश्वरवादी ताओवाद भी कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें भगवान को भी शामिल किया जाता है, हालांकि धार्मिक तरीके से नहीं। यह त्वरित आध्यात्मिक विकास में सहायता करता है, जैसे कि पतंजलि ने भी बताया है कि भगवान में उचित विश्वास योगाभ्यास-क्रियाओं को मजबूत करता है।

वैबपोस्ट-7(webpost-7)- क्या आत्मजागरण के लिए शाकाहारी होना जरूरी है

बहुत से लोग मुझसे ऐसे प्रश्न पूछते हैं कि क्या उन्हें जागृत होने के लिए नॉनवेज / मांसाहार को जारी रखना चाहिए या छोड़ देना चाहिए। दरअसल यह मांसाहार नहीं है, जो अधिक हानिकारक है, अपितु यह मानसिक द्वैत-दृष्टिकोण है, जो खराब है। यदि इसके साथ रवैया अद्वैतात्मक है, तब यह तंत्र है। आप अद्वैत को समझना चाहते हैं, तो इस पूर्वोक्त लिंक पर पढ़ सकते हैं। पंचमाकर यानी मांसाहार समेत तंत्र के पांच एम मानसिक ऊर्जा के सबसे शक्तिशाली स्रोत हैं। उनसे उद्भूत वह प्रचंड मानसिक ऊर्जा अगर अद्वैतपूर्ण दृष्टिकोण के साथ कुंडलिनी के ऊपर निर्देशित होती है, तो उसे जागृत कर देती है, अन्यथा उसे और अधिक गहराई में दफन कर देती है। अद्वैतपूर्ण रवैया जीवन में संतुलन की मांग करता है, और इसी तरह वह जीवन को भी संतुलित बना देता है, यदि उसे अपनाया जाए। इसलिए उस अद्वैतपूर्ण-दृष्टिकोण के साथ एक आदमी अपने शरीर की न्यूनतम जरूरतों के अनुसार ही आमिषाहार का उपयोग करता है, न कि केवल दो इंच की लंबी अपनी जीभ के अनुसार।

वैबपोस्ट-8(webpost-8)- महिलाओं को तन्त्र में पूजित किया जाता है

एक मिथ्या विश्वास है कि तंत्र में महिला का शोषण किया जाता है, और एक पुरुष के आध्यात्मिक उत्थान (तंत्र में महिला) के लिए उसका एक खिलौने के रूप में उपयोग किया जाता है। असल में तंत्र में एक आदमी पूरी तरह से ऋषि के समान बन जाता है। क्या ऋषि किसी का भी शोषण करने के बारे में कभी सोच भी सकता है? ताओवाद भी ऋषि के लिए एक यौन-क्रियाशील ऋषि बनने की सिफारिश करता है, एक साधारण ऋषि बनने की नहीं। असल में, धार्मिक रूप से चरमपंथी लोग, जिन्होंने अमानवीय प्रथाओं के लिए तांत्रिक शक्तियों का दुरुपयोग किया, उन्होंने ही महिला का हिंसक तरीके से शोषण किया, लेकिन दोष वास्तविक तंत्र के ऊपर आ गया।

एक साधारण वैबपेज(webpage)- शरीरविज्ञान दर्शन- एक आधुनिक कुण्डलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा)

विश्व योग दिवस 2019 के लिए शुभकामनाएँ

कुण्डलिनी demystified / रहस्योद्घाटित आतंरिक वैबपृष्ठ

सच्चे ज्ञानपिपासु को भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि उजागर हो गए हैं उस प्रेमयोगी वज्र के शब्द, जो एक रहस्यमय व्यक्ति होने के साथ आत्मज्ञानी है, और जिसने अपनी कुंडलिनी को भी जागृत किया हुआ है

यह वेबसाइट / ब्लॉग ई-बुक के लिए लैंडिंग पेज के रूप में शुरू हुआ। फिर इसमें एक अद्भुत सार रूप में पुस्तक की विस्तृत जानकारी शामिल की गई। तदनंतर इसमें योग के छिपे रहस्य और बाद में एक योगी की सच्ची प्रेम कहानी को भी शामिल किया गया। आशा है कि भविष्य में इसमें लेखक के दिव्य, प्राणप्रिय व आत्मीय मित्र प्रेमयोगी वज्र के सभी रहस्यात्मक अनुभव शामिल कर दिए जाएंगे। पुस्तक प्रेमी इस लिंक पर क्लिक करके पुस्तक के बारे में अच्छी तरह से जान सकते हैं (आंतरिक वेबपेज), तथा साथ में इस पुस्तक के निःशुल्क संस्कृत-संस्करण को भी डाऊनलोड कर सकते हैं।

*यदि आप अपने त्वरित आध्यात्मिक विकास और साथ में भौतिक विकास के बारे में वास्तव में गंभीर हैं, तो यह ई-पुस्तक (हिंदी, ऐमजॉन डॉट इन पर*****पांच सितारा प्राप्त; सर्वश्रेष्ठ, सर्वपठनीय व उत्कृष्ट / अत्युतम / अनौखी पुस्तक के रूप में निष्पक्षतापूर्वक समीक्षित / रिव्यूड) सिर्फ आपके लिए है। एक अनौपचारिक समीक्षक के द्वारा इसे पुरानी शैली के रुझान वाली कहा गया। परन्तु यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि "कुण्डलिनी" शब्द ही पुराना व संस्कृत का है, इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं। इसके अतिरिक्त, गूगल प्ले (Google Play) पर इस पुस्तक को चार समीक्षाएँ मिलीं, प्रत्येक में पांच सितारा ग्रेडिंग के साथ।*

यह कागज़-मुद्रित रूप में (पोथी.कॉम) भी उपलब्ध है। प्रेमयोगी वज्र ने इस पुस्तक को किसी दैवीय प्रेरणा से अपने कुंडलिनीजागरण के एकदम बाद लिखा, जिस समय वह उसके पूर्ण सकारात्मक व आनंदमयी प्रभाव के अंदर गोते लगा रहा था। इसीलिए वह प्रभाव इस पुस्तक में भी परिलक्षित होता

है। इस पुस्तक का सम्पूर्ण सार इसी वेबसाईट पर उपलब्ध है।परन्तु अधिक विस्तार, सजावट, क्रमबद्धता, सौन्दर्य, मनोरमता व प्रेरणा की प्राप्ति के लिए तो मूल पुस्तक की ही संस्तुति की जाती है।

ई-व्यावसायिक स्थलों पर इस पुस्तक की खरीद के लिंक के लिए, कृपया वेबपेज "शॉप / SHOP" देखें, ***तथा साथ में इस पुस्तक के निःशुल्क संस्कृत-संस्करण को भी डाऊनलोड करें, ताकि आप पुराण-शैली में रचित इस पुस्तक से संस्कृत सीखकर कालातीत संस्कृत-साहित्य (विशेषकर संस्कृत पुराणों) का आनंद उठा सकें।***

यदि आप एक आत्मप्रबुद्ध व्यक्ति की असली कहानी (आतंरिक लिंक- तांत्रिक वेबपृष्ठ) पढ़ना चाहते हैं, जिसकी कुंडलिनी भी जागृत हो गई है, वह कैसे आत्मप्रबुद्ध हुआ, और कैसे उसकी कुंडलिनी जागृत हुई (आतंरिक लिंक); एक हिंदी / उपन्यास (काल्पनिक, वैज्ञानिक और रोमांचक रूप वाला) के रूप में आसान हिंदी के साथ / व्यावहारिक तरीके से, तो यह ई-बुक सिर्फ आपके लिए है।

पुस्तक क्यों जरूरी है?

यदि आप कुंडलिनी की प्रकृति के बारे में संदिग्ध हैं, और वास्तव में सबसे व्यावहारिक और अनुभवी तरीके से इसके रहस्य को समझना चाहते हैं, तो यह ई-पुस्तक सिर्फ आपके लिए है।

यदि आप देशभक्ति और राष्ट्रवाद के मीठे अमृत में गहरे डूब जाना चाहते हैं, तो ई-बुक सिर्फ आपके लिए है।

अगर आप समझना चाहते हैं कि महर्षि पतंजलिकृत अष्टांग योग (8 अंग-योग, बाह्य वेबसाईट- ज्ञानविज्ञानवाटिका) को पूरी तरह से एक बच्चे के खेल के साथ-साथ पूरी गहराई के साथ, दोनों विपरीत दिखने वाले तरीकों से एकसाथ समझना चाहते हैं, तो यह ई-किताब सिर्फ तुम्हारे लिए है।

यदि आप ज्ञानप्राप्ति के लिए दुनिया को त्यागना नहीं चाहते हैं, तो ई-बुक सिर्फ आपके लिए है।

यदि आप अपनी सांसारिक गतिविधियों को वापिस आकर्षित नहीं करना चाहते हैं, बल्कि इसके बजाय उनको तेज़ करना चाहते हैं, तो वही ई-बुक सिर्फ आपके लिए है।

यदि आप सांसारिक और आध्यात्मिक, दोनों क्षेत्रों का एकसाथ आनंद लेना चाहते हैं, तो ई-पुस्तक सिर्फ आपके लिए तैयार की गई है।

यदि आप अपने सांसारिक कार्यों में बहुत व्यस्त हैं, जिससे अपने आध्यात्मिक विकास के लिए आपके पास समय नहीं है, तो ई-बुक सिर्फ आपको चाहिए।

यदि आप अपनी सांसारिक गतिविधियों के दौरान अपने मानसिक दोलन व तनाव से अधिक परेशान हो जाते हैं, तो यह ई-बुक सिर्फ आपके लिए है।

यदि आप अक्सर मानवता और धर्मों के बारे में उलझन में हैं, तो आपको बस याहन पर अपने प्रवास का आनंद लेना चाहिए।

यदि आपने किसी चीज़ के बारे में संदेह के पहाड़ को इकट्ठा किया है, तो ई-बुक उसको पार करने के लिए आपके विमान की तरह है।

यदि आपको अपनी साधना करने पर उपयोगी परिणाम नहीं मिल रहे हैं, तो ई-बुक आपके लिए एक सही मार्गदर्शिका है।

यदि आप एक ही समय में सभी धर्मों और आध्यात्मिकता की मूल बातें पढ़ना चाहते हैं; सिर्फ एक उपन्यास की तरह की, कथा जैसी, विज्ञान की तरह की, भौतिकवाद की तरह की, कहानी जैसी, जीवनी जैसी, स्वास्थ्य जैसी, योग जैसी, ध्यान जैसी, रोमांस जैसी और कई और प्रकार की शैलियों की तरह, सभी एक साथ; तो ई-बुक सिर्फ आपके लिए है।

यदि आप मानव जीवन के रहस्य और संभवतः अन्य जो कुछ भी संभव हो, उसे एक ही ई-पुस्तक में जानना चाहते हैं, तो आप इस ई-बुक, शरीरविज्ञान दर्शन-एक आधुनिक कुंडलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा) के लिए सही गंतव्य हैं।

यदि आप मुक्ति के मार्ग को बहुत तेज़ी से पार करना चाहते हैं, तो ई-बुक केवल आपके लिए डिज़ाइन किया गया है।

यदि आप खुद को एक पल में सकारात्मक रूप से परिवर्तित करना चाहते हैं, तो ई-बुक सिर्फ आपके लिए बुला रही है।

यदि आप आध्यात्मिक और धार्मिक औपचारिकताओं / अनुष्ठानों के अनावश्यक बोझ से दूर रहना चाहते हैं, और बस व्यावहारिक होना चाहते हैं, तो ई-पुस्तक सिर्फ आपके लिए खोज कर रही है।

यदि आप एक पल में एक धार्मिक सहिष्णु और एक परिपूर्ण इंसान बनना चाहते हैं, तो ई-बुक सिर्फ आपके लिए उम्मीद कर रही है।

यदि आप आध्यात्मिकता के पीछे छिपे वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को जानना चाहते हैं, तो यह ई-बुक सिर्फ आपकी त्वरित स्वीकृति की उम्मीद कर रही है।

यदि आप अपने नीरस जीवन में कुछ ऊब जैसे गए हैं, और आमतौर पर कम या अधिक रूप से उदास या अवसादग्रस्त हो जाते हैं, तो ई-बुक आपके जीवन में आवश्यक उड़ान-पंख संलग्न करने के लिए तैयार है।

यदि आप प्यार, रोमांटिक रिश्तों और लिंग के पीछे रहस्यों का खुलासा करना चाहते हैं, तो ई-बुक सिर्फ आपके लिए उत्सुक है।

यदि आप एक ही पुस्तक के भीतर सभी प्रकार की मानवीय भावनाओं और शैलियों की तलाश करने की आदत रखते हैं, तो यह वही पुस्तक आपके उद्देश्य को हल करने के लिए यहां है।

यदि आप अपना खुद का शिक्षक बनना चाहते हैं, तो ई-बुक यहां आपको मार्गदर्शन करने के लिए है।

यदि आप अपने लिए कोई आध्यात्मिक गुरु या मास्टर या गाइड नहीं ढूंढ पा रहे हैं, तो ई-बुक इसके लिए आपकी मदद करने के लिए है।

यदि आपके पास मूल भाषा में व विस्तार से महान वेदों-पुराणों (बाह्य वेबसाईट- भारतकोष) को पढ़ने के लिए समय की कमी या विश्वास की कमी है, हालांकि आप उनसे अपने लिए पूर्ण लाभ प्राप्त करना चाहते हैं, तो पुस्तक की पुरजोर संस्तुति की जाती है।

यदि आप चरमपंथी धर्मों के पीछे छिपे शक्ति के संभावित स्रोत को जानना चाहते हैं, तो यह ई-पुस्तक सिर्फ आपके लिए है।

यदि आप हिंदू धर्म या सनातनवाद (बाह्य वेबसाईट- webduniya.com) के पीछे छिपे रहस्य और महानता को उजागर करना चाहते हैं, तो ई-बुक सिर्फ आपके लिए है।

यदि आप अपने शरीर को एक पवित्र मंदिर या यंत्र-मंडल की तरह का बनाना चाहते हैं, तो यह ई-बुक सिर्फ आपके लिए है।

यदि आप अपने खुद के भौतिक शरीर को इस तरह का बनाना चाहते हैं, जैसे कि वह आपका खुद का गुरु या मास्टर हो, तो यह ई-बुक सिर्फ आपके लिए है।

यदि आप सेक्स का एक परिपूर्ण और आनंददायक तरीके से आनंद लेना चाहते हैं, तो यह पुस्तक सिर्फ आपके लिए है।

यदि आप एक सक्षम नेता या व्यवस्थापक बनना चाहते हैं, तो यह पुस्तक आपके लिए है।

पुस्तक परिचय

यह ई-पुस्तक एक प्रकार की आध्यात्मिक-भौतिक प्रकार की मिश्रित कल्पना पर आधारित है। यह हमारे शरीर में प्रतिक्षण हो रहे भौतिक व आध्यात्मिक चमत्कारों पर आधारित है। यह दर्शन हमारे शरीर का वर्णन आध्यात्मिकता का पुट देते हुए, पूरी तरह से शरीरविज्ञान व विज्ञान के अनुसार करता है। इसी से यह आम जनधारणा के अनुसार नीरस चिकित्सा विज्ञान को भी बाल-सुलभ सरल व रुचिकर बना देता है। यह पाठकों की हर प्रकार की आध्यात्मिक व भौतिक जिज्ञासाओं को शांत करने में सक्षम है। यह सृष्टि में विद्यमान प्रत्येक स्तर की स्थूलता व सूक्ष्मता को एक करके दिखाता है, अर्थात यह द्वैताद्वैत/विशिष्टाद्वैत की ओर ले जाता है। यह दर्शन एक उपन्यास की तरह ही है, जिसमें भिन्न-२ अध्याय नहीं हैं। प्रेमयोगी वज्र ने इसे किसी पर आधारित करके नहीं, अपितु अपने ज्ञान, अनुभव व अपनी अंतरात्मा की प्रेरणा से रचा है; यद्यपि बाद में यह स्वयं ही उन मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित प्रतीत हुआ, जिन पर पहले की बनी हुई बहुत सी रचनाएं विद्यमान हैं। यह दर्शन कर्मयोग, तंत्र, अद्वैत, द्वैताद्वैत, ताओवाद(taoism) व अनासक्ति के आध्यात्मिक सिद्धांतों पर आधारित है। इस दर्शन में कनफ्यूसियस के मानवतावादी प्रशासन का समावेश भी है। इस दर्शन में मानवतावादी राष्ट्रीयता भी कूट-कूट कर भरी हुई है। यह दर्शन वास्तव में लगभग २० वर्षों के दौरान, एक-२ विचार व तर्क को इकट्ठा करके तैयार हुआ, जिनके साथ प्रेमयोगी वज्र का लंबा व व्यस्त जीवन-अनुभव भी जुड़ता गया। इसीसे यह दर्शन जीवंत व प्रेरणादायक प्रतीत होता है। प्रेमयोगी वज्र ने वैसे तो इसे अपने लाभ के लिए, अपने निजी दर्शन के रूप में निर्मित किया था, यद्यपि इसके अभूतपूर्व प्रभाव को देखते हुए, इसे सार्वजनिक करने का निर्णय बाद में लिया गया। प्रेमयोगी वज्र को इस दर्शन से सम्बंधित वस्तुओं को अपने यात्रा-थैले(COMMUTE BAG) में डालने की आदत पड़ गई थी, क्योंकि उससे उसे एक दिव्य,

प्रगतिकारक व सुरक्षक शक्ति अपने चारों ओर अनुभव होती थी। इसका अर्थ है कि शविद(शरीर-विज्ञान-दर्शन) को ई-रीडिंग डीवाईसीस पर डाउनलोडिड-रूप(DOWNLOADED FORM) में सदैव साथ रखने से तांत्रिक लाभ की संभावना है। इस दर्शन से प्रेमयोगी वज्र का अध्यात्म व भौतिकता को आपस में जोड़ने का लम्बा स्वपन पूरा होता है। प्रेमयोगी वज्र को पूर्ण विश्वास है कि इस दर्शन की धारणा से मुक्ति प्रत्येक मानवीय स्थिति में पूर्णतया संभव है। ऐसा ही अनुभव प्रेमयोगी वज्र को भी तब हुआ था, जब शविद के पूरा हो जाने पर वह खुद ही कुण्डलिनीयोग के उच्च स्तर पर प्रतिष्ठित हो गया और कुछ अभ्यास के उपरान्त उसकी कुण्डलिनी उसके मस्तिष्क में अचानक से प्रविष्ट हो गई, जिससे उसे क्षणिक समाधि का अनुभव हुआ। अपने क्षणिकात्मज्ञान के बाद जब प्रेमयोगी वज्र की कुण्डलिनी इड़ा(भावनात्मक)नाड़ी में सत्तासीन हो गई थी, तब इसी दर्शन की सहायता से प्रेमयोगी ने उसका प्रवेश पिंगला नाड़ी(कर्मात्मक)में करवा कर उसे संतुलित किया। यह दर्शन सभी के लिए लाभदायक है; यद्यपि स्वास्थ्य व शरीर से सम्बंधित, सुरक्षा से सम्बंधित, कठिन परिश्रमी, उद्योगी, मायामोह में डूबे हुए, अनुशासनप्रिय, भौतिकवादी, वैज्ञानिक, समस्याओं से घिरे हुए लोगों के लिए तथा धर्म, मुक्ति, मानवता, विज्ञान व कैरियर के बारे में भ्रमित लोगों के लिए यह अत्यंत ही लाभदायक है। प्रेमयोगी वज्र को कुण्डलिनी के बारे में हर जगह भ्रम की सी स्थिति दिखी। यहाँ तक कि प्रेमयोगी वज्र स्वयं भी तब तक भ्रम की स्थिति में रहा, जब तक उसने कुण्डलिनी को साक्षात व स्पष्ट रूप में अनुभव नहीं कर लिया। अतःकुण्डलिनीजिज्ञासुओं के लिए तो यह पुस्तक किसी वरदान से कम नहीं है। मूलरूप में शविद संस्कृत भाषा में लिखा गया था, परन्तु आम पाठकों के द्वारा समझने में आ रही परेशानियों व ई-छपाई कंपनियों द्वारा वर्तमान में संस्कृत भाषा को सपोर्ट न किये जाने के कारण इसका हिंदी में अनुवाद करना पड़ा। यह अन्य मिथक साहित्यों से इसलिए भी भिन्न है, क्योंकि यह मिथक होने के साथ-२ सत्यता से भी भरा हुआ है, अर्थात एक साथ दो भावों से युक्त है, बहुत कुछ पौराणिक साहित्य से मिलता-जुलता। इसे पढ़कर पाठक शरीर-विज्ञान के अनुसार शरीर की अधिकाँश जानकारी प्राप्त कर लेता है; वह भी रुचिकर, प्रगतिशील व आध्यात्मिक ढंग से। इस पुस्तक में प्रेमयोगी वज्र ने अपने अद्वितीय आध्यात्मिक व तांत्रिक अनुभवों के साथ अपनी सम्बन्धित जीवनी पर भी थोड़ा प्रकाश डाला है। इसमें जिज्ञासु व प्रारम्भिक साधकों के लिए भी आधारभूत व साधारण कुण्डलिनीयोग-

तकनीक का वर्णन किया गया है। आधारभूत यौनयोग पर भी सामाजिकता के साथ सूक्ष्म प्रकाश डाला गया है। प्रेमयोगी ने इसमें अपने क्षणिकात्मज्ञान(GLIMPSE ENLIGHTENMENT) व सम्बंधित परिस्थितियों का भी बखूबी वर्णन किया है। प्रेमयोगी ने विभिन्न धर्मों, वेदों, पुराणों, उपनिषदों, दर्शनों व अन्य धर्मशास्त्रों का भी अध्ययन किया है, मूल भाषा में; अतः अत्यावश्यकतानुसार ही शविद(शरीरविज्ञान दर्शन)से जुड़े हुए उनके कुछेक विचार-बिंदु भी इस पुस्तक में सम्मिलित किए गए हैं। पुस्तक के प्रारम्भ के आधे भाग में, शरीर में हो रही घटनाओं का सरल व दार्शनिक विधि से वर्णन किया गया है। प्रेमयोगी वज्र एक आध्यात्मिक रहस्यों से भरा हुआ व्यक्ति है। वह आत्मज्ञानी(ENLIGHTENED) है व उसकी कुण्डलिनी भी जागृत हो चुकी है। उसने प्राकृतिक रूप से भी योगसिद्धि प्राप्त की है व कृत्रिमविधि अर्थात कुण्डलिनीयोग के अभ्यास से भी। उसके आध्यात्मिक अनुभवों को उपलेखक ने पुस्तक में, उत्तम प्रकार से कलमबद्ध किया है। जो लोग योग के पीछे छुपे हुए मनोविज्ञान को समझना चाहते हैं, उनके लिए यह पुस्तक किसी वरदान से कम नहीं है। इस पुस्तक में स्त्री-पुरुष संबंधों का आधारभूत सैद्धांतिक रहस्य भी छुपा हुआ है। यदि कोई प्रेमामृत का पान करना चाहता है, तो इस पुस्तक से बढ़िया कोई भी उपाय प्रतीत नहीं होता। इस पुस्तक में सामाजिकता व अद्वैतवाद के पीछे छुपे हुए रहस्यों को भी उजागर किया गया है। वास्तव में यह पुस्तक सभी क्षेत्रों का स्पर्ष करती है। अगर कोई हिन्दुवाद को गहराई से समझना चाहे, तो इस ई-पुस्तक के समान कोई दूसरी पुस्तक प्रतीत नहीं होती। यदि दुर्भाग्यवश किसी का पारिवारिक या सामाजिक जीवन समस्याग्रस्त है, तो भी मार्गदर्शन हेतु इस पुस्तक का कोई मुकाबला नजर नहीं आता। यह पुस्तक साधारण लोगों(यहाँ तक कि तथाकथित उत्पथगामी व साधनाहीन भी)से लेकर उच्च कोटि के साधकों तक, सभी श्रेणी के लोगों के लिए उपयुक्त व लाभदायक है। उपन्यास के शौकीनों को भी यह ई-पुस्तक रोमांचित कर देती है। इस पुस्तक को बने बनाए क्रम में ही सम्पूर्ण रूप से पढ़ना चाहिए और बीच में कुछ भी छोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि इसे उचित क्रम में ही श्रृंखलाबद्ध किया गया है। एक बार पढ़ना शुरू करने के बाद पाठकगण तब तक पीछे मुड़कर नहीं देखते, जब तक कि इस पुस्तक को पूरा नहीं पढ़ लेते। इसको पढ़कर पाठक गण अवश्य ही अपने अन्दर एक सकारात्मक परिवर्तन महसूस करेंगे। ऐसा प्रतीत होता

है कि इस ई-पुस्तक में मानव जीवन का सार व रहस्य छुपा हुआ है। आशा है कि प्रस्तुत ई-पुस्तक पाठकों की अपेक्षाओं पर बहुत खरा उतरेगी।

एक पुस्तक-पाठक की कलम से

भाइयो, बहुत से लोग अपने अहंकारपूर्ण जीवन में व्यस्त हैं, जो नरक के लिए एक साक्षात द्वार है। इसी तरह, कुछ लोग त्याग-भावना के बहकावे में आ जाते हैं। उपरोक्त दोनों ही प्रकार के लोग आंशिक सत्य पर चलने वाले प्रतीत होते हैं—

एक पुस्तक-पाठक की कलम से

प्रेमयोगी वज्र के द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें

1) Love story of a Yogi- what Patanjali says
2) Kundalini demystified- what Premyogi vajra says
3) कुण्डलिनी विज्ञान- एक आध्यात्मिक मनोविज्ञान
4) Kundalini science- a spiritual psychology
5) The art of self publishing and website creation
6) स्वयंप्रकाशन व वैबसाईट निर्माण की कला
7) कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है
8) बहुतकनीकी जैविक खेती एवं वर्षाजल संग्रहण के मूलभूत आधारस्तम्भ- एक खुशहाल एवं विकासशील गाँव की कहानी, एक पर्यावरणप्रेमी योगी की जुबानी
9) My kundalini website on e-reader

इन उपरोक्त पुस्तकों का वर्णन एमाजोन, ऑथर सेन्ट्रल, ऑथर पेज, प्रेमयोगी वज्र पर उपलब्ध है। इन पुस्तकों का वर्णन उनकी निजी वैबसाईट https://demystifyingkundalini.com/shop/ के वैबपेज "शॉप (लाईब्रेरी)" पर भी उपलब्ध है। साप्ताहिक रूप से नई पोस्ट (विशेषतः कुण्डलिनी से सम्बंधित) प्राप्त करने और नियमित संपर्क में बने रहने के लिए कृपया इस वैबसाईट, "https://demystifyingkundalini.com/" को निःशुल्क रूप में फोलो करें/इसकी सदस्यता लें।

सर्वत्रं शुभमस्तु।